प्रयागराज, रविवार 06 सितम्बर 2026 से 12 सितम्बर 2026 तक
वर्ष-14, अंक-36
पृष्ठ- 8 मूल्य: 3 रूपये

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार
हिन्दी साप्ताहिक

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com
website:www.adhuniksamachar.com

बेल्जियम पीएम बोले- 'मोदी ने चेताया था हमने नहीं सुनी,चीन-अमेरिका पर निर्भरता भारी पड़ रही', यूरोप खुद की हिफाजत भी नहीं कर सकता

नई दिल्ली। बेल्जियम के प्रधानमंत्री बार्ट डी वेवर ने गुरुवार को कहा कि यूरोप को अब आर्थिक निर्भरता का खतरा समझ आ रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यूरोप को इस बारे में काफी पहले चेताया था। दिल्ली में सी2 के कार्यक्रम में उन्होंने कहा- दुनिया तेजी से बदल रही है, लेकिन यूरोप इस बदलाव के साथ कदम नहीं मिला पा रहा। वह बूढ़ा हो चुका है। वेवर के मुताबिक चीन और अमेरिका, यूरोप से बहुत आगे निकल चुके हैं। इनोवेशन और प्रोडक्टिविटी में यूरोप बहुत पीछे चला गया है, इसलिए उसे हर तरफ से झटके लग रहे हैं। वह खुद की भी हिफाजत नहीं कर सकता। डी वेवर बेल्जियम के प्रधानमंत्रीः- 'यूरोप लंबे समय तक दूसरे देशों पर जरूरत से ज्यादा निर्भर रहा। अब उसे समझ आ रहा है कि यह बाद में दबाव बनाने का हथियार बन सकती है। भारत ने यूरोप को इस खतरे के बारे में काफी पहले ही चेताया था, तब उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया गया।' 'यूरोप को हर समय अपमानित होना पड़ता है' डी वेवर ने कहा कि यूरोप की कमजोरी सिर्फ अर्थव्यवस्था तक सीमित नहीं है। यूरोपीय देश अपनी सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी खुद उठाने की स्थिति में भी नहीं हैं। यूरोप को हर समय अपमानित होना पड़ता है।

वेवर का यह बयान ऐसे समय आया है, जब यूरोपीय देशों पर अपनी सुरक्षा का ज्यादा जिम्मा खुद उठाने का दबाव बढ़ रहा है। ट्रम्प लंबे समय से नाटो के यूरोपीय देशों से रक्षा पर ज्यादा पैसा खर्च करने को कहते रहे हैं। 2017 से उन्होंने नाटो देशों को अपनी जीडीपी का कम से कम 2फीसदी रक्षा पर खर्च करने पर जोर दिया। 2018 में उन्होंने इसे बढ़ाकर 4फीसदी करने की बात कही। इसके बाद 2025 में नाटो देशों ने 2035 तक रक्षा और सुरक्षा पर जीडीपी का 5फीसदी खर्च करने का लक्ष्य तय किया। वेवर ने कहा- 'अब हम सुन रहे हैं। यूरोप को यह समझ थोड़ी देर से आई है, लेकिन अब यह बदलाव हो रहा है।' उन्होंने यूरोप की इस स्थिति को 'रूड अवेकनिंग' यानी कड़वी हकीकत से जागना बताया। सस्ते आयात से कमजोर हुई यूरोप की इंडस्ट्रीः-वेवर ने कहा कि यूरोप ने लंबे समय तक विदेशी कंपनियों को बड़े पैमाने पर अपने बाजार में जगह दी। कम कीमत पर आने वाले सामान ने यूरोप की स्थानीय कंपनियों के लिए मुश्किलें बढ़ाईं और धीरे-धीरे वहां की इंडस्ट्री कमजोर होती गई। उन्होंने कहा कि इस व्यवस्था का सबसे ज्यादा फायदा जिस देश को हुआ, वह यूरोप का करीबी पड़ोसी है और उसे सभी जानते हैं। डी वेवर ने देश का नाम नहीं लिया, लेकिन उनके इस बयान को चीन की ओर इशारा माना जा रहा है। भारत को बताया 'नंबर-1' रणनीतिक पार्टनर-डी वेवर ने भारत को यूरोप का सबसे अहम रणनीतिक साझेदार बताया। उन्होंने कहा कि यूरोप को ऐसे देशों के साथ रिश्ते मजबूत करने चाहिए, जो सहयोग और आपसी सम्मान में भरोसा रखते हों। उन्होंने कहा-'अगर भारत इस लिस्ट में नहीं है, तो आपसे एक बहुत बड़ी बात छूट गई है। भारत इस लिस्ट में है और नंबर-1 पर है।' डी वेवर ने कहा कि भारत की तेज आर्थिक तरक्की, बड़ी और कुशल आबादी और मजबूत टेक्नोलॉजी क्षमता यूरोप के लिए भी फायदेमंद है। उन्होंने कहा कि दोनों के बीच व्यापार, निवेश, टेक्नोलॉजी और सप्लाई चेन के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाया जा सकता है। पीएम बोले- अमीरों पर टैक्स बढ़ाने से काम नहीं चलेगा-डी वेवर की ये चिंताएं ऐसे समय सामने आई हैं, जब बेल्जियम सरकार खुद बड़े बजट कटौती के फैसलों की तैयारी कर रही है। सरकार का लक्ष्य 2029 तक करीब 10 अरब यूरो यानी 11.7 अरब डॉलर की बचत करना है। प्रधानमंत्री ने माना कि इन फैसलों का असर देश के लगभग हर वर्ग पर पड़ेगा। उन्होंने कहा, 'मैं अच्छी नींद नहीं ले पा रहा हूं और इस बारे में बहुत सोचता हूं।' डी वेवर ने कहा कि बजट का घाटा सिर्फ अमीरों पर ज्यादा टैक्स लगाकर पूरा नहीं किया जा सकता। वहीं, खर्च में कटौती को लेकर उन्होंने व्यंग्य करते हुए कहा, 'हर कोई सोचता है कि अगर बचत करनी है तो उसका खर्च मेरे पड़ोसी पर पड़े, मुझ पर नहीं।'

अमेरिकी राजदूत बोले- भारत और अमेरिका के रिश्तों से दूसरे देश जलते हैं, पीएम मोदी उन नेताओं में सबसे ऊपर, जिनसे ट्रम्प मिलना चाहते हैं

नई दिल्ली। भारत में अमेरिका के राजदूत सर्जियो गोर ने भारत-अमेरिका संबंधों को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच मजबूत होते रिश्तों से कई दूसरे देश 'जलते' हैं। गोर ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प प्रधानमंत्री मोदी को अपना दोस्त मानते हैं और दिसंबर में होने वाले जी20 समिट के दौरान जिन नेताओं से वह मिलना चाहते हैं, उनमें मोदी का नाम सबसे ऊपर होगा। जी20 में मोदी-ट्रम्प की अलग मुलाकात संभव- सर्जियो गोर ने इंडिया टुडे को दिए इंटरव्यू में कहा कि ट्रम्प और मोदी के बीच अच्छे व्यक्तिगत रिश्ते हैं। ऐसे में दिसंबर में जी20 समिट के लिए मोदी के फ्लोरिडा पहुंचने पर दोनों नेताओं की अलग से मुलाकात भी हो सकती है। हालांकि, मोदी और ट्रम्प के बीच अलग से द्विपक्षीय बैठक की अभी आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है। गोर ने ट्रम्प के 2027 में भारत दौरे की संभावना के भी संकेत दिए। उन्होंने कहा कि ट्रम्प 2020 में अपनी भारत यात्रा को अब भी याद करते हैं। अमेरिकी राजदूत के मुताबिक, जब भी ट्रम्प भारत की बात करते हैं तो वह यहां के लोगों से मुलाकात और प्रधानमंत्री मोदी के साथ अपने रिश्तों को याद करते हैं।गोर ने कहा कि अगला साल आने में ज्यादा समय नहीं है। हालांकि, उन्होंने ट्रम्प के भारत दौरे की कोई तारीख या आधिकारिक कार्यक्रम नहीं बताया।ट्रेड डील पर बोले- समझौते के काफी करीबः-भारत और अमेरिका के बीच प्रस्तावित ट्रेड डील को लेकर गोर ने कहा कि दोनों देश समझौते के काफी करीब हैं। अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले के बाद डील से जुड़े मुद्दों पर दोबारा काम किया जा रहा है। उन्हें उम्मीद है कि अगले कुछ महीनों में दोनों देश समझौते को अंतिम रूप दे सकते हैं। गोर ने कहा कि इतने बड़े व्यापार समझौते में समय लगना सामान्य है। उन्होंने अमेरिका और यूरोपीय संघ के बीच लंबे समय से चल रही व्यापार वार्ता का उदाहरण देते हुए कहा कि बड़े व्यापारिक समझौतों में कई साल लग सकते हैं।

240 अरब डॉलर का व्यापार, 500 अरब डॉलर का लक्ष्यः-गोर के मुताबिक, भारत और अमेरिका के बीच अभी करीब 240 अरब डॉलर का व्यापार है।दोनों देशों का लक्ष्य आने वाले वर्षों में इसे बढ़ाकर 500 अरब डॉलर करना है। उन्होंने कहा कि ट्रेड डील से दोनों देशों को आर्थिक फायदा हो सकता है। अमेरिका एक मजबूत और स्थिर भारत के साथ मिलकर काम करना चाहता है। गोर के बयान से साफ है कि भारत-अमेरिका के रिश्तों में व्यापार के साथ दोस्ती और रणनीतिक साझेदारी भी अहम है।

कुवैत में तमिलनाडु की महिला ने प्रताड़ना का आरोप लगाया,बोला- 50 दिन से ठीक से खाना नहीं खाया, 2 महीने की सैलरी भी नहीं मिली

कुवैत। कुवैत में घरेलू काम करने गई तमिलनाडु की एक महिला ने वीडियो जारी कर खुद के साथ प्रताड़ना किए जाने की शिकायत की है। महिला का कहना है कि उसे करीब 50 दिन से ठीक से खाना नहीं मिला और दो महीने की सैलरी भी नहीं दी गई। उसने भारत सरकार और प्रशासन से उसे सुरक्षित वापस लाने की गुहार लगाई है। सोशल मीडिया पर सामने आए वीडियो में महिला एक कमरे से हाथ जोड़कर मदद मांगती नजर आ रही है। वह तमिल भाषा में भारत वापस लाए जाने की अपील कर रही है। महिला ने कहा कि वह अब ऐसी स्थिति को और बर्दाश्त नहीं कर सकती। महिला की पहचान वनिता के रूप में हुई है। वह तमिलनाडु के कल्लाकुरिची जिले की रहने वाली है। परिवार के मुताबिक, वनिता करीब तीन महीने पहले घरेलू काम के लिए कुवैत गई थी। मां का आरोप- एजेंट ने परिवार को गुमराह किया-वीडियो सामने आने के बाद तमिलनाडु प्रशासन ने वनिता के परिवार से संपर्क किया। वनिता की मां वेन्निला और परिवार के अन्य सदस्यों ने उसकी सुरक्षित वापसी के लिए शिकायत दर्ज कराई है। वेन्निला का आरोप है कि वनिता को कुवैत भेजने वाले एजेंट ने परिवार को गुमराह किया।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

दक्षिण अमेरिकी देश बोलीविया के सैन्य अड्डे में जोरदार धमाके से 10 से ज्यादा लोगों की मौत, 58 घायल, पटाखे रखने वाली जगह में हुआ विस्फोट

सुक्रे। दक्षिण अमेरिकी देश बोलीविया के पश्चिमी शहर वियाचा में शुक्रवार को एक सैन्य

अड्डे पर जोरदार विस्फोट हुआ। हादसे में 10 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई, जबकि कम से कम 58 लोग घायल हुए हैं। अधिकारियों के मुताबिक, मरने वालों की संख्या 10 से 15 के बीच हो सकती है। बोलीविया के रक्षा मंत्री अर्नेस्टो जस्टिनियानो ने बताया कि घायलों में ज्यादातर 52 आम नागरिक हैं, जबकि बाकी सैन्यकर्मी हैं। रक्षा मंत्री के मुताबिक, विस्फोट स्थानीय समय के अनुसार दोपहर करीब 2:30 बजे उस जगह हुआ, जहां रक्षा मंत्रालय का पटाखों का स्टॉक रखा था। मौके पर एंबुलेंस, मेडिकल टीम और पुलिस को तैनात किया गया है। अधिकारियों ने विस्फोट की वजह पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी है। दोबारा धमाके का खतरा बना हुआ है-हादसे के बाद बचाव दल घायलों का इलाज करने के साथ उनके परिवारों की मदद में जुट गए। घायलों में से 14 को इलाज के लिए ला पाज के अस्पतालों में भेजा गया है। इनमें एक बच्ची भी शामिल है, जो करीब 90फीसदी जल गई है। धमाके से आसपास के कई घरों को भी नुकसान पहुंचा और खिड़कियां टूट गईं।

फायर ब्रिगेड ने बताया कि घटनास्थल पर अभी भी गर्मी का स्रोत मौजूद है, जिससे दोबारा धमाका होने का खतरा है। लोगों को घटनास्थल से कम से कम 150 मीटर दूर रहने को कहा गया है।

पाक का 100 साल पुराना हिंदू मंदिर गिराने से इनकार, बोला- बारिश की वजह से जर्जर हुआ,मदरसा बनाने के लिए मंदिर तोड़ने का था आरोप

इस्लामाबाद। पाकिस्तान ने पंजाब प्रांत में करीब 100 साल पुराने हिंदू मंदिर गिराए जाने की खबरों

को गलत बताया है। उसका कहना है कि 21 जुलाई को भारी बारिश के कारण मंदिर क्षतिग्रस्त होकर गिर गया था। वहीं, स्थानीय लोगों और हिंदू समुदाय के प्रतिनिधियों का आरोप है कि मंदिर को जानबूझकर गिराया गया और उसकी जमीन पास के मदरसे के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश की गई। दूसरी ओर, रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि मंदिर की इमारत को 21 अगस्त को गिराया गया। दोनों तारीखों के बीच करीब एक महीने का अंतर है। इसी वजह से मंदिर गिराए जाने की घटना को लेकर सवाल उठ रहे हैं। पाकिस्तान मसिहा मिल्लत पार्टी, स्थानीय लोगों और हिंदू समुदाय ने आरोप लगाया था कि मंदिर को स्थानीय मुस्लिम समुदाय के कुछ लोगों ने गिराया। इन लोगों ने इस मामले में तहरीक-ए-लब्बैक पाकिस्तान से जुड़े लोगों की भूमिका होने का भी आरोप लगाया है। टीएलपी पाकिस्तान का एक कट्टरपंथी इस्लामी संगठन है, जिस पर वहां प्रतिबंध लगा हुआ है। भारत ने मंदिर गिराए जाने की निंदा की-मामला सामने आने के बाद भारत के विदेश मंत्रालय ने 2 सितंबर को इसकी निंदा की थी। भारत ने कहा था कि मंदिर की सुरक्षा के लिए स्थानीय अधिकारियों ने समय पर कार्रवाई नहीं की, जो चिंता की बात है। विदेश मंत्रालय ने कहा था कि यह घटना पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की स्थिति पर सवाल खड़े करती है। रणधीर जायसवाल प्रवक्ता, विदेश मंत्रालयः- '100 साल पुराने अल्पसंख्यक समुदाय के पूजा स्थल के साथ तोड़फोड़ की यह घटना बेहद निंदनीय है। मंदिर की सुरक्षा करने में अधिकारियों की लापरवाही और नाकामी चिंताजनक है।' भारत ने पाकिस्तान से मंदिर गिराने के लिए जिम्मेदार लोगों पर कार्रवाई करने और मंदिर को फिर से ठीक कराने की मांग की थी। पाकिस्तान बोला- तथ्यों को तोड़-मरोड़कर पेश किया- भारत के बयान के बाद पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने प्रतिक्रिया दी। पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता सज्जाद हैदर खान ने भारत के आरोपों को झूठा और राजनीतिक मकसद से लगाया गया बताया। उन्होंने कहा कि भारत इस मामले में तथ्यों को तोड़-मरोड़कर पेश कर रहा है। खान ने पाकिस्तान के स्थानीय एवैक्यूई ट्रस्ट प्रॉपर्टी बोर्ड के अधिकारियों के हवाले से कहा कि मंदिर की इमारत भारी बारिश के कारण क्षतिग्रस्त हुई थी।

मंदिर की मरम्मत करवाएगा पाकिस्तान-पाकिस्तान का यह भी दावा है कि स्थानीय अधिकारियों ने मंदिर को हुए नुकसान का सर्वे किया है और मंदिर को दोबारा ठीक करने के लिए कदम शुरू कर दिए गए हैं।

यमन में हूती विद्रोहियों के हमले में 129 की मौत, बाब अल-मंदेब पर कब्जे की कोशिश पर निपटने को सरकार ने फोर्स भेजी

सना। यमन में हूती विद्रोहियों और सरकारी फोर्स के बीच भीषण लड़ाई में 129 लोगों की मौत हुई है। यह हाल के वर्षों में यमन में हुई सबसे घातक झड़पों में से एक है। हूती विद्रोही लाल सागर के प्रवेश द्वार माने जाने वाले बाब अल-मंदेब स्ट्रेट के करीब अपनी स्थिति मजबूत करने की कोशिश कर रहे हैं। लड़ाई गुरुवार को शुरू हुई। हूतियों ने तटीय इलाकों के पास जमीनी हमला करने के साथ रॉकेट और ड्रोन का भी इस्तेमाल किया। इस दौरान उन्होंने लाल सागर के किनारे कई रणनीतिक ऊंचाइयों पर कब्जा कर लिया। इन इलाकों से मोखा बंदरगाह और समुद्री रास्ते पर नजर रखना आसान है। एएफपी के मुताबिक यमनी सेना के एक अधिकारी ने बताया कि उसके 66 जवान मारे गए हैं। वहीं हूती विद्रोहियों से जुड़े सूत्रों ने कम से कम 62 विद्रोहियों के मारे जाने का दावा किया है। एक नागरिक की भी मौत हुई है। इस तरह अलग-अलग पक्षों से सामने आए आंकड़ों के मुताबिक, लड़ाई में मरने वालों की संख्या 120 से ज्यादा हो गई है। हालांकि, इन आंकड़ों की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हुई है। बाब अल-मंदेब इतना अहम क्यों? बाब अल-मंदेब लाल सागर को अदन की खाड़ी और आगे हिंद महासागर से जोड़ने वाला बेहद अहम समुद्री रास्ता है। इसके उत्तर में लाल सागर स्वेज नहर के जरिए भूमध्य सागर से जुड़ता है। इस रास्ते से बड़ी मात्रा में अंतरराष्ट्रीय व्यापार और ऊर्जा की आवाजाही होती है। इसलिए यहां लंबे समय तक संघर्ष या समुद्री रास्ते में किसी तरह की रुकावट का असर सिर्फ यमन तक सीमित नहीं रहेगा,

बल्कि दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी पड़ सकता है। मौजूदा हमले में हूतियों का फोकस मोखा बंदरगाह और उसके आसपास के इलाकों पर भी है। रणनीतिक ऊंचाइयों पर कब्जे से उन्हें तटीय इलाके में सरकारी बलों पर दबाव बनाने और मोखा तथा बाब अल-मंदेब की तरफ जाने वाले रास्तों पर नजर रखने में मदद मिल सकती है। सैन्य सूत्रों के मुताबिक, हूतियों ने लाल सागर के पास और ताइज शहर के आसपास कई ऊंचाई वाले ठिकानों पर कब्जा किया है। सरकार ने हूती विद्रोहियों से लड़ने सेना भेजी- हूती विद्रोहियों की बढ़त को देखते हुए यमनी सरकार ने भी ताइज में अतिरिक्त सैनिक भेजे हैं। एक यमनी अधिकारी के मुताबिक, सरकार ने सऊदी अरब के कहने पर अदन से ताइज के लिए सैनिक भेजे हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक, अगर हूती मोखा बंदरगाह या बाब अल-मंदेब के आसपास के रणनीतिक इलाकों पर अपनी पकड़ मजबूत कर लेते हैं, तो इससे यमनी सरकार और सऊदी अरब के साथ किसी भी बातचीत में उनकी स्थिति मजबूत हो सकती है। हूती विद्रोही कौन हैं? हूती विद्रोही यमन के उत्तरी हिस्से में रहने वाले जायदी शिया समुदाय का एक सशस्त्र संगठन है। इसकी शुरुआत 1990 के दशक में एक धार्मिक-सामाजिक आंदोलन के रूप में हुई थी। हूती सरकार पर भेदभाव करने का आरोप लगाते थे।2011 में ट्यूनीशिया से शुरू हुई अरब क्रांति की लहर यमन भी पहुंची। उस समय राष्ट्रपति अली अब्दुल्ला सालेह करीब 33 साल से सत्ता में थे। युवाओं के प्रदर्शन की वजह से उनकी गद्दी छीन गई। फरवरी 2012 में अब्दरब्बू मंसूर हादी राष्ट्रपति बने। लेकिन उनकी सरकार कमजोर थी। हूती विद्रोहियों ने इसका फायदा उठाया और सितंबर 2014 में राजधानी सना पर कब्जा कर लिया। हालात इतने बिगड़ गए कि 2015 में राष्ट्रपति हादी को देश छोड़कर सऊदी अरब में शरण लेनी पड़ी। हादी के पद छोड़ने के बाद से यमन पर किसी एक सरकार का कंट्रोल नहीं है। अभी यमन कई हिस्सों में बंटा हुआ है। हूती विद्रोहियों को ईरान का समर्थन मिलता है। वहीं अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त सरकार को सऊदी अरब और उसके सहयोगी देशों का समर्थन मिलता है।

ट्रम्प ने ईरान के परमाणु-ठिकाने पर हमले की दी धमकी, कहा- हमारी खुफिया एजेंसियां नजर रख रही, कोई भी गतिविधि हुई तो उड़ा देंगे

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने ईरान के बेहद सुरक्षित भूमिगत परमाणु ठिकाने पिकैक्स माउंटेन पर जल्द जोरदार हमला करने की चेतावनी दी है। ट्रम्प ने शुक्रवार को ओवल ऑफिस में पत्रकारों से कहा कि अगर इस जगह पर किसी तरह की गतिविधि दिखाई दी तो अमेरिका इसे निशाना बना सकता है। उन्होंने कहा कि अमेरिकी खुफिया एजेंसियां इस ठिकाने पर होने वाली गतिविधियों पर नजर रख रही हैं। ट्रम्प ने ईरान के खिलाफ पिछले पांच महीने से चल रहे अमेरिकी सैन्य अभियान का बचाव किया। उन्होंने कहा कि अभियान का सबसे बड़ा मकसद ईरान को परमाणु हथियार बनाने से रोकना है। डोनाल्ड ट्रम्प राष्ट्रपति, अमेरिकाः- 'अब पांच महीने हो गए हैं. और आप जानते हैं हमने पांच महीने में क्या किया. उनके पास न्यूक्लियर वेपन नहीं होगा. क्योंकि अगर ऐसा हुआ तो शायद वहां मौजूद लोगों का बचना मुश्किल हो जाएगा।' जमीन के अंदर है पिकैक्स माउंटेन- पिकैक्स माउंटेन ईरान के नतांज यूरेनियम संवर्धन केंद्र के पास है। नतांज पर पहले ही भारी नुकसान हो चुका है। पिकैक्स जमीन के अंदर बना बेहद मजबूत और सुरक्षित परिसर है। इसमें जमीन के काफी नीचे दो बड़े सुरंग सिस्टम बताए जाते हैं। द वॉल स्ट्रीट जर्नल की एक रिपोर्ट

के मुताबिक, इजराइली खुफिया अधिकारियों का मानना है कि ईरान ने हजारों सेंट्रीफ्यूज इस गहरे भूमिगत ठिकाने पर पहुंचा दिए हैं। सेंट्रीफ्यूज का इस्तेमाल यूरेनियम को संवर्धित करने के लिए किया जाता है।पिकैक्स माउंटेन जमीन के काफी नीचे होने की वजह से सामान्य हवाई हमलों से इसे नुकसान पहुंचाना मुश्किल है। ऐसे में अगर अमेरिका इस ठिकाने पर हमला करता है तो यह ईरान के परमाणु ठिकानों के खिलाफ चल रहे अभियान को और बड़ा रूप दे सकता है। ट्रम्प बोले- अमेरिका ने बड़ा क्षेत्रीय युद्ध रोका-ट्रम्प ने यह भी दावा किया कि अमेरिकी सैन्य कार्रवाई की वजह से पश्चिम एशिया में बड़ा युद्ध होने से बचा है। उन्होंने कहा कि अगर अमेरिका ने कार्रवाई नहीं की होती तो इजराइल और पूरे पश्चिम एशिया को ज्यादा गंभीर खतरे का सामना करना पड़ता। ट्रम्प ने कहाः- 'अगर हम वहां नहीं जाते तो आज इजराइल नहीं होता, मध्य पूर्व नहीं होता और वे शायद इसके बाद यूरोप और हमारे शहरों को निशाना बनाते। लेकिन हमने उन्हें पांच महीने में परमाणु हथियार बनाने से रोक दिया।' ट्रम्प का दावा- ईरान के रडार दो बार तबाह किए- ट्रम्प ने ईरान के रडार सिस्टम पर किए गए हालिया अमेरिकी हमलों के बारे में भी बात की। उन्होंने दावा किया कि अमेरिकी सेना ने ईरान के बेहद आधुनिक रडार सिस्टम को दो बार नष्ट किया है। ट्रम्प ने कहा कि हालिया हमले से पहले कई दिनों तक कोई गोलीबारी नहीं हुई थी। लेकिन ईरान ने पहले रडार लगाए थे, जिन्हें अमेरिका ने नष्ट कर दिया था। इसके बाद ईरान ने फिर नए रडार लगाए और अमेरिका ने उन्हें भी नष्ट कर दिया। उन्होंने कहा कि लगातार हमलों के बाद ईरान शायद अब नए रडार लगाने से बच रहा है। अमेरिका ने ईरान के सैन्य ठिकानों पर हमलेः- ट्रम्प का यह बयान अमेरिकी सेंट्रल कमांड (सेंटकॉम) के उस बयान के कुछ दिन बाद आया है, जिसमें अमेरिकी सेना ने ईरान के सैन्य ठिकानों पर नए हमले करने की जानकारी दी थी। सेंटकॉम के मुताबिक, पिछले हफ्ते किए गए हमलों में ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) से जुड़े ठिकानों को निशाना बनाया गया। इनमें एयर डिफेंस सिस्टम, रडार सिस्टम, समुद्री सैन्य उपकरण, समुद्र में बारूदी सुरंगें बिछाने की क्षमता और संचार से जुड़े ठिकाने शामिल थे। अमेरिकी सेना का कहना है कि उसने नागरिकों को निशाना नहीं बनाया। हालांकि, ईरान के मुताबिक अमेरिका ने मंगलवार रात सिरिक में एक शादी समारोह पर मिसाइल हमला किया, जिससे 5 लोग मारे गए। मृतकों में 4 साल का एक बच्चा भी शामिल है। ईरान ने अमेरिकी हमलों की निंदा कीः- ईरान ने अमेरिका के हालिया हमलों की कड़ी निंदा की है। ईरान ने अमेरिका पर उसकी संप्रभुता का उल्लंघन करने और कई प्रांतों में गैर-सैन्य बुनियादी ढांचे और नागरिक ठिकानों को निशाना बनाने का आरोप लगाया है। ईरान के विदेश मंत्रालय ने कहा कि उसकी सेना ने अमेरिका के खिलाफ जोरदार रक्षात्मक हमले किए हैं। ईरान के मुताबिक, पश्चिम एशिया में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकाने ही वे जगहें हैं, जहां से अमेरिकी हमलों की शुरुआत, मदद और तैयारी की जा रही थी। इन्हीं ठिकानों को उसके जवाबी हमलों में निशाना बनाया गया।

यूएन ने दुनिया का नक्शा बदला, अमेरिका ने विरोध किया, नए मैप में अफ्रीका बड़ा, यूरोप-यूएस छोटे,भारत पर इसका क्या असर?

न्यूयॉर्क। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने शुक्रवार को दुनिया के नक्शे को लेकर ऐतिहासिक प्रस्ताव पास किया। इसमें पुराने मर्केटर वर्ल्ड मैप की जगह ऐसे नक्शे के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया गया है, जिसमें देशों और महाद्वीपों का आकार उनके असली क्षेत्रफल के ज्यादा करीब दिखाई देता है। नए नक्शे में अफ्रीका पहले से काफी बड़ा, जबकि यूरोप और उत्तरी अमेरिका छोटे नजर आएंगे। एशिया के कुछ हिस्सों का आकार भी तुलनात्मक रूप से छोटा दिखेगा। यह प्रस्ताव टोगो ने पेश किया था और इसे अफ्रीकी संघ का समर्थन मिला। संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रस्ताव के पक्ष में 164 देशों ने वोट दिया, जबकि 6 देश वोटिंग से दूर रहे। अमेरिका अकेला देश था जिसने प्रस्ताव के खिलाफ वोट किया। भारतः क्षेत्रफल वही, आकार बड़ा दिख सकता है- भारत की वास्तविक जमीन, अंतरराष्ट्रीय सीमाओं या क्षेत्रफल में कोई बदलाव नहीं होगा। यह बदलाव देशों की सीमाएं बदलने वाला नहीं, बल्कि नक्शे पर पृथ्वी को दिखाने का तरीका बदलने वाला है।भारत का नक्शा देखने में भी थोड़ा अलग दिख सकता है, लेकिन भारत के मामले में बदलाव बहुत बड़ा नहीं होगा। नया नक्शा क्षेत्रफल सही अनुपात में दिखाता है। पुराने नक्शे में भूमध्य रेखा के आसपास के इलाके अपने आकार से छोटे और ध्रुवों के पास के इलाके बड़े दिखते हैं। भारत भूमध्य रेखा से बहुत दूर नहीं है, इसलिए पुराने नक्शे में भी उसका आकार कुछ हद तक छोटा दिखता है। भारत पर इसका मतलबः- क्षेत्रफलः- बिल्कुल वही रहेगा। सीमाएंः- नहीं बदलेंगी। भारत की आकृतिः- थोड़ी बदली हुई/कम खिंची हुई दिखाई दे सकती है। दूसरे देशों की तुलना में आकारः भारत कुछ बड़ा दिखाई दे सकता है, खासकर जब उसकी तुलना यूरोप, रूस, कनाडा जैसे ज्यादा उत्तरी देशों से की जाए। अफ्रीका पर असरः सबसे ज्यादा नजर आएगा, क्योंकि उसका वास्तविक आकार पुराने मर्केटर नक्शे की तुलना में बहुत बड़ा दिखाई देगा। अमेरिका ने प्रस्ताव का विरोध क्यों किया? अमेरिका ने इस पहल की कड़ी आलोचना की।**आगे की खबर पेज संख्या 05 पर..**

कार्यकर्ताओं की ताकत से ही 2027 का रण हम जीतेंगेः सुरेश मौर्या, तीसरी बार अखिलेश की साईकिल होगी पंचरःसैफुल अब्बास

भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेश मौर्य का कार्यकर्ताओं ने किया स्वागत,भाजपा काशी क्षेत्र अल्पसंख्यक मोर्चा के द्वारा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) वाराणसी। तुलसियानी स्क्वायर

कालोनी सिविल लाइन में भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेश मौर्य का स्वागत अभिनंदन का कार्यक्रम आयोजित किया गया इस अवसर पर भाजपा काशी क्षेत्र के मंत्री सैफुल अब्बास ने भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेश मौर्य को भगवान श्री राम का स्मृति चिन्ह एवं पुष्प गुच्छ भेंटकर एवं अंगवस्त्राम पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेश मौर्य ने कार्यकर्ताओं से कहा कि 2014 लोकसभा और 2017 विधान सभा चुनाव में लगातार भारतीय जनता पार्टी अपने कार्यकर्ताओं के बल पर कमल खिला रही है और इस बार भी उत्तर प्रदेश की 2027 की विधान सभा का चुनावी रण हम कार्यकर्ता के बल पर जीतेंगे। और आगे कहा कि सभी कार्यकर्ता चुनाव के लिए तैयार रहें और अपना बूथ मजबूत करें क्योंकि बूथ जीता तो चुनाव जीता और कहा कि देश और प्रदेश के नौजवान राहुल गांधी और अखिलेश यादव की मंशा को जानते है। उनका सिर्फ एक ही मकसद है परिवार वाद, जातिवाद और आतंकवादियो और गुंडों को संरक्षण प्रदान करना है जिसे नौजवानों कत्तई नहीं स्वीकार करता है। उन्होंने कहा कि 2047 तक राहुल गांधी और अखिलेश यादव सरकार बनाने का सपना छोड दें। उनके सपने मुगेंरी लाल के हसीन सपने की तरह रह जाएंगे। और आगे कहा कि कार्यकर्ता आम जनता, छात्रों और नौजवानों के बीच जाए और केंद्र एवं प्रदेश सरकार की उपलब्धियों की चर्चा करें।

इस अवसर पर भाजपा काशी क्षेत्र अल्पसंख्यक मोर्चा के मंत्री सैफुल अब्बास ने कहा कि 2027 का रण हम जीतेंगे और अखिलेश यादव की सायकिल को तीसरी बार फिर पंचर करेंगे।

इस अवसर राजेश केसरवानी, सुशील कुमार जैन, अंबिका जैन,मनराम मौर्य,अजय अग्रहरि,शत्रुघ्न जायसवाल,हसमत उल्ला खान,किशन चंद्र जायसवाल नीरज केसरवानी आदि भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

मास संदेश के सम्पादक ए के नंद को भेंट किया गया बुद्ध चरित मानस प्रबंध काव्य

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) गौरीगंज, अमेठी। मास संदेश

मासिक पत्रिका के संपादक ए के नंद (गोंडा निवासी) को कवि के पी सविता बौद्ध गौरीगंज अमेठी निवासी ने स्वरचित बुद्ध चरित मानस (प्रबंध काव्य) को उमराव बुद्ध विहार हरीनगर बालागंज लखनऊ में भेंट किया। ज्ञातव्य है कि यह प्रबंध काव्य भगवान बुद्ध के जीवन चरित पर आधारित दोहा चौपाई शैली में रचित है। इसमें बुद्ध के सिद्धार्थ के रूप में जन्म लेने से लेकर बुद्ध के महापरिनिर्वाण तक की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख किया गया है। बुद्ध के साथ ही उनके प्रमुख शिष्यों के संबंध में भी यत्र-तत्र वर्णन किया गया है। बासठ सर्गों में रचित इस पुस्तक (ग्रंथ) में चार सौ से कुछ ज्यादा पेज हैं। चार कलर्ड चित्रों सहित ए फोर साइज कागज में यह प्रबंध काव्य छापा गया है।इसमें चौपाई की 14120 लाइनें, 681 दोहा, 44 सोरठा, 19 सवैया, 8 कुंडलियां, 8 वीर छंद, 3 हरिगीतिका, 3 इन्द्रवज्जा, 3 रोला, 3 शशिवदना, 2 गीतिका, 1 आभीर छंद और एक कवित्त छंदों का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त 88 लाइनें तुकांत आधुनिक गेय पद्य भी यत्र-तत्र मिलते हैं। यह ग्रंथ कवि द्वारा अपने बौद्ध धर्म गुरु भंते दीपांकर जी महास्थविर बुद्ध विहार साधना केंद्र जूही बबुरहिया कानपुर के मुख्य ट्रस्टी और विहाराध्यक्ष को समर्पित किया गया है। जो अखिल भारतीय भिक्खु संघ शाखा उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष भी हैं।

आलू किसानों को आलू भण्डारण प्रभार पर मिलेगा अनुदान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। गुरूवार को जिला उद्यान अधिकारी जय राम वर्मा ने बताया है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आलू उत्पादक किसानों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने तथा बाजार में आलू के दामों में होने वाली गिरावट से बचाने के लिए भामाशाह भाव स्थिरता कोष की स्थापना एवं भण्डारण प्रभार पर

अनुदान की योजना की शुरुआत की गई है। उन्होंने बताया कि भामाशाह भाव स्थिरता कोष की स्थापना की योजना- यदि बाजार में आलू की कीमतें अत्यधिक गिरती हैं, तो आलू उत्पादक कृषकों को अनुदान के तहत निर्धारित आलू के न्यूनतम उत्पादन लागत का 25 प्रतिशत अथवा न्यूनतम उत्पादन लागत एवं बिक्रीत दर के अन्तर की धनराशि जो कम हो, देय होगा। प्रति कृषक अधिकतम 02 हेक्टेयर आलू रोपित क्षेत्रफल, प्रति हेक्टेयर अधिकतम 240 कुन्तल की दर से अनुमन्य अनुदान देय होगा। आलू रोपित क्षेत्रफल का निर्धारण अद्यतन निर्गत खसरा खतौनी के आधार पर निर्धारित होगा एवं कृषक आईडी धारक एवं एग्रीरटेक पोर्टल पर पंजीकृत आलू उत्पादक कृषक ही पात्र होगें। आवेदन हेतु फोटोयुक्त वैध पहचान पत्र, आधार कार्ड की छायाप्रति, बैंक पासबुक की छायाप्रति, खसरा खतौनी, एवं गेट पास एवं प्रपत्र-06 (व्यापारी एवं आलू कृषक के मध्य क्रय-विक्रय का विवरण) की छायाप्रति अनिवार्य है। निजी शीतगृहों में भण्डारित आलू के भण्डारण प्रभार पर अनुदान की योजना- आलू उत्पादक कृषकों को उनके आलू उपज के लागत के सापेक्ष समुचित मूल्य सुनिश्चियन हेतु आर्थिक सहायता प्रदान किए जाने हेतु शीतगृहों में भण्डारित आलू के भण्डारण प्रभार में अनुदान देने हेतु योजना की शुरूवात हुई है। यह लाभ प्रति कृषक अधिकतम 2 हेक्टेयर आलू रोपित क्षेत्रफल, प्रति हेक्टेयर अधिकतम 200 कुन्तल की दर से अनुदान देय होगा, भण्डारित आलू पर भण्डारण शुल्क पर धनराशि रू 100/प्रति कुन्तल की दर से अनुदान देय होगा। योजना के तहत मिलने वाली सभी अनुदान और सहायता राशि डीबीटी के माध्यम से सीधे लाभार्थी किसानों के बैंक खातों में भेजी जाएगी। आलू रोपित क्षेत्रफल का निर्धारण अद्यतन निर्गत खसरा खतौनी के आधार पर निर्धारित होगा। शीतगृह में भण्डारित आलू की मात्रा का निर्धारण शीतगृह द्वारा निर्गत तकपट्टी के आधार पर होगा। शीतगृह में भण्डारित आलू की निकासी से सम्बन्धित प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर ही अनुदान हेतु पात्रता मानी जायेगी। आवेदन हेतु आधार कार्ड की छायाप्रति, बैंक पासबुक की छायाप्रति, खसरा खतौनी, निर्गत तकपट्टी की छायाप्रति अनिवार्य है। जनपद के सभी इच्छुक आलू उत्पादक कृषक योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए https://potato.uphorticulture.in पर पंजीकरण कर सकते हैं। योजना से जुड़ी अधिक जानकारी या किसी भी तकनीकी समस्या के समाधान के लिए कार्यालय जिला उद्यान अधिकारी, रायबरेली में संपर्क कर सकते हैं।

अफेयर के शक में पत्नी को गंगा में फेंका, पति ने खुद फोन करके पुलिस को बताया

उन्नाव। उन्नाव में शुक्रवार शाम एक पति ने पत्नी को गंगा नदी में फेंक दिया। दोनों के बीच पुल के

बींचोबीच झगड़ा हुआ। इसके बाद पति ने पत्नी को गंगाजी में धक्का दे दिया। घटना के तुरंत बाद पति ने खुद पुलिस को कॉल करके कहा- मेरी पत्नी गंगा नदी में कूद गई है। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने आरोपी पति को हिरासत में ले लिया। पुलिस की पूछताछ में सामने आया कि पति अपनी पत्नी पर अफेयर को लेकर शक करता था। मौके पर मौजूद लोगों का कहना है कि पति ने झगड़े के दौरान पत्नी को पुल से नीचे धक्का दे दिया। घटना सफीपुर इलाके की है। पुलिस गोताखोरों की मदद से महिला की तलाश में जुटी हुई है। बिठूर थाना क्षेत्र के गाजीपुर गांव के रहने वाले सुजीत राजपूत (20) की शादी 14 दिसंबर, 2024 को उषा (19) से हुई थी। उषा का मायका सफीपुर थाना क्षेत्र के मरौंदा मंझवारा गांव में है। कुछ दिन पहले उषा का साढू नए बने मकान की बीम से गिर गया था। हादसे में उसका हाथ टूट गया था। इसके बाद वह मायके में रहकर इलाज करा रहा था। शुक्रवार को सुजीत, पत्नी उषा को लेकर उसके मायके गया था। वहां उसने अपने साढू का हालचाल पूछा। शाम करीब 7 बजे दोनों वहां से वापस लौट रहे थे। पुल पर मौजूद लोगों के मुताबिक, परियर-बिठूर पुल पर

पति-पत्नी का झगड़ा होने लगा। पति कहने लगा कि तुम्हारा किसी से चक्कर चल रहा। पत्नी के विरोध के बाद पति ने उसे पुल से नीचे गंगा में फेंक दिया। आरोपी ने खुद पुलिस को दी सूचना-घटना के बाद सुजीत ने पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। उससे पूछताछ की तो बोला- मेरी पत्नी खुद ही नीचे कूद गई। उसने पेट दर्द की बात कहकर बाइक रुकवाई थी। पुलिस ने सुजीत को हिरासत में लेकर पूछताछ की। इसके बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस मामले की जांच कर रही है। तेज बहाव के चलते अब तक नहीं मिली उषा-गंगा में इन दिनों पानी का बहाव तेज है। पुलिस ने गोताखोरों की मदद से महिला की तलाश कराने की कोशिश की, लेकिन देर रात होने और तेज बहाव के कारण गोताखोर नदी में नहीं उतर सके।

अंधेरा होने के चलते रात में बड़े स्तर पर सर्च ऑपरेशन भी नहीं चलाया जा सका।परियर चौकी इंचार्ज अनिल राजपूत ने बताया- 'शनिवार सुबह रोशनी होने पर महिला की तलाश दोबारा शुरू कराई जाएगी।इसके लिए गोताखोरों और अन्य संसाधनों की मदद ली जाएगी। महिला के नदी में गिरने की घटना की पुष्टि और उसकी बरामदगी के बाद ही पूरे मामले की स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।'

सिडलिंग प्री-स्कूल में धूमधाम से मना श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, नन्हे-मुन्नों ने दी रंगारंग प्रस्तुतियां

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) झूंसी/प्रयागराज। सिडलिंग प्री-स्कूल, झूंसी में श्रीकृष्ण

जन्माष्टमी के अवसर पर श्रीकृष्ण जन्मोत्सव हर्षोल्लास एवं धार्मिक वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम में विद्यालय के नन्हे-मुन्ने बच्चों ने भगवान श्रीकृष्ण और राधा के स्वरूप में सजकर मनमोहक एवं रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। बच्चों की मनमोहक प्रस्तुतियों ने उपस्थित अभिभावकों एवं दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम में अद्विक, मानशी, खुशी, राज सहित अन्य बच्चों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। बच्चों ने श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं एवं जन्माष्टमी से जुड़े विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।विद्यालय परिसर में जन्माष्टमी को लेकर विशेष सजावट की गई थी, जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय नजर आया। बच्चों की प्रस्तुतियों को उपस्थित लोगों ने तालियों के साथ खूब सराहा और उनका उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम के समापन पर सभी बच्चों को विद्यालय की ओर से स्वल्पाहार वितरित किया गया। आयोजन ने बच्चों में भारतीय संस्कृति, धार्मिक परंपराओं एवं संस्कारों के प्रति रुचि और जागरूकता बढ़ाने का संदेश दिया।

जलभराव प्रभावित गांवों में पहुंचे उद्यान मंत्री दिनेश प्रताप सिंह,राहत सामग्री वितरित कर लिया जमीनी हालात का जायजा

प्रभावित परिवारों से संवाद कर जाना उनका हाल,अधिकारियों को राहत एवं बचाव कार्यों में तेजी लाने के दिए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार),

उद्यान, कृषि विपणन, कृषि विदेश व्यापार एवं कृषि निर्यात, उत्तर प्रदेश दिनेश प्रताप सिंह जी ने आज तहसील

एवं विकासखंड महराजगंज के जलभराव से प्रभावित गांवों का स्थलीय निरीक्षण कर राहत एवं बचाव कार्यों की स्थिति का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने प्रभावित परिवारों से संवाद कर उनकी समस्याओं एवं आवश्यकताओं की जानकारी ली तथा जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (जिला प्रशासन) द्वारा उपलब्ध कराई जा रही राशन किट / राहत सामग्री का वितरण किया। उद्यान मंत्री ने सर्वप्रथम लालगंज मजरे (मोन) में पहुंचकर जलभराव की स्थिति का निरीक्षण किया तथा प्रभावित परिवारों को राहत सामग्री वितरित की। उन्होंने ग्रामीणों से बातचीत कर जलभराव के कारण उत्पन्न समस्याओं की जानकारी ली और मौके पर मौजूद अधिकारियों से राहत एवं बचाव कार्यों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

उन्होंने निर्देशित किया कि प्रभावित परिवारों को किसी प्रकार की असुविधा न होने पाए तथा आवश्यकतानुसार खाद्य सामग्री, पेयजल, स्वास्थ्य सुविधाओं एवं अन्य जरूरी सहायता की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। इसके उपरांत मंत्री ने ग्राम कोटवा मदनिया पहुंचकर भी जलभराव से प्रभावित क्षेत्र का निरीक्षण किया और प्रभावित परिवारों को राहत सामग्री वितरित की। उन्होंने ग्रामीणों से संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं तथा संबंधित अधिकारियों को तत्काल आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उद्यान मंत्री ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि जलभराव से प्रभावित क्षेत्रों में राहत एवं बचाव कार्यों में किसी भी स्तर पर लापरवाही न हो। प्रभावित परिवारों तक शासन-प्रशासन की सहायता समय से पहुंचाई जाए। जलभराव वाले क्षेत्रों में आवागमन, स्वच्छ पेयजल, भोजन, स्वास्थ्य सेवाओं तथा आवश्यकतानुसार सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने की व्यवस्था को प्राथमिकता दी जाए। उन्होंने कहा कि शासन एवं जिला प्रशासन की प्राथमिकता प्रत्येक प्रभावित परिवार को संकट की इस घड़ी में हरसंभव सहायता उपलब्ध कराना है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे प्रभावित क्षेत्रों में लगातार भ्रमण करते हुए स्थिति पर नजर रखें तथा किसी भी आपात स्थिति की सूचना मिलने पर तत्काल राहत एवं बचाव की कार्रवाई सुनिश्चित करें।

निरीक्षण के दौरान जिलाध्यक्ष भाजपा बुद्धिलाल पासी, उप जिलाधिकारी महराजगंज चन्द्र प्रकाश गौतम, क्षेत्राधिकारी प्रदीप कुमार सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

सीजेपी कार्यकर्ता को पीटने वाला स्वतंत्र यूपी से दबोचा गया, बोला था- मेरा कोई कुछ बिगाड़ नहीं पाएगा

बुलंदशहर। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) नीशू आजाद के पिता के साथ मारपीट करने वाले स्वतंत्र भारद्वाज और उसके एक साथी पवन को दिल्ली पुलिस ने शुक्रवार शाम करीब 5 बजे बुलंदशहर से पकड़ लिया। उसे अपने साथ लेकर पुलिस दिल्ली रवाना हो गई। स्वतंत्र अपने साथी पवन के साथ बुलंदशहर में नैथला निवासी हरिशंकर उर्फ अन्नू के यहां ठहरा था। हरिशंकर दिल्ली में टैक्सी ड्राइवर हैं। उन्होंने दोनों की गिरफ्तारी की पुष्टि की, हालांकि कैमरे पर आने से मना कर दिया। पकड़े जाने से पहले स्वतंत्र ने मीडिया से करीब 3 मिनट तक बात की और कहा- 'मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। चाहे पूरा विपक्ष एकजुट हो मेरा बाल बांका नहीं कर सकता। मैं दिल्ली पुलिस का सपोर्ट कर रहा हूं। धर्मो रक्षति रक्षितः।' एसपी सिटी अभिषेक प्रताप अजेय ने बताया, 'सूचना मिली है कि दिल्ली पुलिस की स्पेशल क्राइम ब्रांच बुलंदशहर आई थी। उसने स्वतंत्र को चोला थाना क्षेत्र के गांव धमेड़ा नारा से गिरफ्तार किया है। दिल्ली पुलिस ने बुलंदशहर पुलिस को कोई आधिकारिक सूचना नहीं दी है।'स्वतंत्र की गिरफ्तारी की मांग को लेकर सीजेपी ने शुक्रवार को दिल्ली के संसद मार्ग थाने में 3

घंटे प्रदर्शन किया। हालांकि पुलिस के आश्वासन के बाद धरना खत्म हुआ। दरअसल नीशू का आरोप था कि 23 जून को जंतर-मंतर पर प्रदर्शन के दौरान उनके पिता संजय के साथ मारपीट की गई। दो दिन पहले स्वतंत्र का एक पॉडकास्ट वीडियो वायरल हुआ, जिसमें वह संजय पर हमला करने की बात कबूल करता नजर आया। हालांकि, उसने कहा कि उसने ऐसा सेल्फ डिफेंस में किया था। इस पर सौरव दास ने सवाल उठाया कि जब आरोपी खुद हमला करने की बात स्वीकार कर रहा है तो पुलिस कार्रवाई क्यों नहीं कर रही है। गिरफ्तारी के लिए दिल्ली में सीजेपी का प्रदर्शन- स्वतंत्र की गिरफ्तारी को लेकर सीजेपी ने आज दिल्ली के पार्लियामेंट स्ट्रीट थाने में प्रदर्शन किया। सीजेपी की मांग थी कि आरोपी स्वतंत्र भारद्वाज के खिलाफ तुरंत कार्रवाई हो। पुलिस और सीजेपी प्रतिनिधियों के बीच करीब 3 घंटे बैठक चली। पुलिस ने आश्वासन दिया कि आरोपी के खिलाफ एससी/एसटी एक्ट लगेगा और 72 घंटे के अंदर गिरफ्तारी होगी। राहुल गांधी के दावे को बताया फर्जी- स्वतंत्र ने आगे कहा- दिल्ली पुलिस की मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार, पीड़ित को कोई गंभीर चोट नहीं लगी है। उनके पास इस पूरी घटना के वीडियो सबूत हैं। वे पुलिस की चल रही जांच में पूरा सहयोग कर रहे हैं। आरोपी बोला- चाहे ट्रंप आएं या नेतन्याहू, कोई कुछ नहीं कर सकता- स्वतंत्र ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी और अन्य लोगों की तरफ से सोशल मीडिया पर शेयर की जा रही पॉडकास्ट क्लिप को फर्जी बताया। उसने कहा- चाहे ट्रंप आ जाएं या नेतन्याहू आ जाएं। या राहुल गांधी समेत पूरा विपक्ष सड़क पर आ जाए, मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मैं तो सनातन के लिए काम करता हूं। भाजपा नेता कपिल मिश्रा की मदद से रिहाई मिलने के आरोपों पर भारद्वाज ने कहा- कपिल मिश्रा और चिराग पासवान मेरे भाई जैसे हैं। रिहाई वाली सिर्फ मजाक में कही गई थी। लोगों ने उसे गलत तरीके से समझ लिया। अभी इस मामले में जांच जारी है। 1. पीड़ित पक्ष- संजय कुमार/नीशू आजाद- सीजेपी कार्यकर्ता निशु आजाद के पिता संजय कुमार 23 जून को जंतर-मंतर पर सीजेपी प्रदर्शन के दौरान घायल हुए थे। संजय की शिकायत पर पार्लियामेंट स्ट्रीट थाने में केस दर्ज हुआ। नीशू का आरोप है कि उनके पिता का सिर फोड़ा गया और डेढ़ महीने बाद भी पुलिस ने पर्याप्त कार्रवाई नहीं की।2. आरोपी- स्वतंत्र भारद्वाज-स्वतंत्र भारद्वाज ने एक वायरल पॉडकास्ट में दावा किया कि उन्होंने संजय के सिर पर हमला किया था और उन्हें 60 टांके लगे थे। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें जेल नहीं जाना पड़ा। बाद में भारद्वाज ने अपने बयान से पलटते हुए कहा कि यह हमला नहीं बल्कि सेल्फ-डिफेंस था। उनका दावा है कि 10-15 लोगों ने उन्हें घेर लिया था और अगर वह बचाव में कार्रवाई नहीं करते तो उन्हें भीड़ मार सकती थी। 3. दिल्ली पुलिस का पक्ष-पुलिस के मुताबिक 23 जून को संजय कुमार के सिर पर कड़ा (ब्रेसलेट) लगने से चोट आई। संजय को ‵श्थ अस्पताल में मेडिकल जांच के लिए ले जाया गया। मेडिको लीगल केस में चोट साधारण बताई गई। पुलिस ने खोपड़ी फटने/फ्रैक्चर के दावे को गलत बताया। सूरज कुमार (24) और स्वतंत्र भारद्वाज (21) को मौके से हिरासत में लिया गया था।

उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग, प्रयागराज

विशेष शिक्षक पात्रता परीक्षा (Special TET) का विज्ञापन जारी, 5 सितंबर से शुरू होगा ऑनलाइन आवेदन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज/लखनऊ। उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग द्वारा प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर कार्यरत विशेष शिक्षकों (CWSN) के लिए विशेष शिक्षक पात्रता परीक्षा आयोजित किए जाने के संबंध में 02 सितंबर 2026 को निर्देश दिए गए हैं। इसी क्रम में आयोग द्वारा विज्ञापन संख्या-03/2026 के माध्यम से विशेष शिक्षक पात्रता परीक्षा की वाले अभ्यर्थी ही निर्धारित अवधि में अपना आवेदन प्रस्तुत करें। आयोग द्वारा 03 सितंबर 2026 को जारी विज्ञापन / विज्ञप्ति के अनुसार ऑनलाइन पंजीकरण (ओटीआर) एवं आवेदन प्रारंभ होने

विशेष शिक्षकों (CWSN) के लिए आयोजित होगी विशेष शिक्षक पात्रता परीक्षा – आयोग अध्यक्ष डॉ. प्रशांत कुमार

पात्रता परीक्षा (Special TET) का विज्ञापन जारी कर दिया गया है। आयोग के अध्यक्ष डॉ. प्रशांत कुमार ने बताया कि शासन द्वारा दिए गए निर्देशों के क्रम में विशेष शिक्षक पात्रता परीक्षा के आयोजन की प्रक्रिया प्रारंभ की गई है। आयोग अध्यक्ष डॉ. प्रशांत कुमार ने बताया कि शासन द्वारा उच्चतम न्यायालय में सिविल अपील संख्या-1385/2025 एवं पुनर्विचार याचिका डायरी संख्या-53434/2025 में पारित आदेश दिनांक 29 मई 2026 से बड़ी संख्या में शिक्षकों के प्रभावित होने के दृष्टिगत प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों तथा विशेष शिक्षकों (CWSN) के लिए विशेष प्रक्रिया शुरू की जा रही है। उन्होंने बताया कि परीक्षा में प्रतिभाग करने के इच्छुक अभ्यर्थियों की सुविधा के लिए वन टाइम रजिस्ट्रेशन (ओटीआर) व्यवस्था लागू की गई है। अभ्यर्थियों को पहले ओटीआर पूर्ण करना होगा। इसके पश्चात ही वे विशेष शिक्षक पात्रता परीक्षा के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। विस्तृत विज्ञापन एवं निर्देश आयोग की वेबसाइट https://upessc.up.gov.in/ पर उपलब्ध हैं। आयोग अध्यक्ष ने अभ्यर्थियों से अपील की कि आवेदन करने से पूर्व विस्तृत विज्ञापन एवं उसमें दिए गए सभी दिशा-निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कर लें तथा निर्धारित अर्हता पूरी करने की तिथि 05 सितंबर 2026 है। ऑनलाइन आवेदन शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि 04 अक्टूबर 2026 निर्धारित की गई है, जबकि ऑनलाइन आवेदन में संशोधन की अंतिम तिथि 08 अक्टूबर 2026 होगी। विशेष शिक्षक पात्रता परीक्षा का आयोजन 03 नवंबर 2026 को किया जाएगा। डॉ. प्रशांत कुमार ने कहा कि आयोग अभ्यर्थियों के हितों को ध्यान में रखते हुए परीक्षा संबंधी प्रक्रिया को निर्धारित समय-सारिणी के अनुसार संचालित करने के लिए प्रतिबद्ध है। अभ्यर्थी परीक्षा से संबंधित किसी भी जानकारी के लिए आयोग की अधिकृत वेबसाइट पर जारी विज्ञापन एवं दिशा-निर्देशों का ही अनुसरण करें।

नौएडा में गहराते बिजली संकट पर नौएडा सिटीजन फोरम की मुख्यमंत्री से मानवीय हस्तक्षेप की अपील, सेक्टर-63, छिजारसी- चोटपुर सहित अन्य प्रभावित क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति बहाल करने की मांग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर-63, छिजारसी-चोटपुर सहित विभिन्न क्षेत्रों में जारी गंभीर बिजली संकट से आम जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हो नौएडा सिटीजन फोरम की कार्यकारी अध्यक्ष शालिनी सिंह ने माननीय मुख्यमंत्री जी से तत्काल हस्तक्षेप करते हुए प्रभावित क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित कराने विद्युत आपूर्ति से जुड़े मामलों में शासन के दिशा-निर्देशों के अनुरूप मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए आम नागरिकों की कठिनाइयों को प्राथमिकता के आधार पर दूर किया

रहा है। लगातार विद्युत कटौती के कारण बच्चों की पढ़ाई, बुजुर्गों, महिलाओं, छोटे व्यवसायों तथा आवश्यक गतिविधियों एवं स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए की अपील की है।

उन्होंने 'उत्तर प्रदेश शासन, ऊर्जा अनुभाग के पत्र संख्या 3376/24-1-2018-03 पी/2018, लखनऊः दिनांक 26 दिसंबर 2018' का उल्लेख करते हुए कहा कि जाना चाहिए। नौएडा सिटीजन फोरम ने मुख्यमंत्री से संबंधित अधिकारियों को तत्काल आवश्यक निर्देश जारी कर आम जनता को राहत प्रदान करने का निवेदन किया है।

नोएडा क्षेत्र के किसानों को बड़ी राहत की उम्मीद, मुआवजा दरों में 50फीसदी से अधिक वृद्धि का रास्ता साफ- पंकज सिंह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। प्राधिकरण क्षेत्र के के तहत किसानों की मुआवजा वृद्धि की मांग को लेकर लगातार प्रयास

किसानों के लिए लंबे समय से चली आ रही मुआवजा वृद्धि की मांग अब निर्णायक दिशा में आगे बढ़ रही है। नोएडा विधायक श्री पंकज सिंह के निरंतर प्रयासों और पहल से किसानों की इस महत्वपूर्ण मांग पर सकारात्मक प्रगति हुई है। पंकज सिंह ने अपने सोशल मीडिया माध्यम से जानकारी साझा करते हुए बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश एवं प्रदेश सरकार की किसान हितैषी नीतियों किए जा रहे हैं। इसी क्रम में औद्योगिक विकास आयुक्त (आईडीसी) दीपक कुमार एवं नोएडा प्राधिकरण के सीईओ कृष्णा करुणेश के साथ पूर्व में हुई वार्ताओं को आगे बढ़ाते हुए पुनः सकारात्मक वार्ता हुई। इस दौरान किसानों के हितों से जुड़े विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। वार्ता में अधिकारियों ने किसानों को वर्तमान मुआवजा दरों में सीधे 50 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि करने पर सहमति जताते हुए इसे जल्द लागू किए जाने का भरोसा दिया है। इससे नोएडा प्राधिकरण क्षेत्र के सैकड़ों किसान परिवारों को बड़ी आर्थिक राहत मिलने की उम्मीद है। किसानों की मुआवजा वृद्धि की मांग लंबे समय से महत्वपूर्ण विषय रही है। नोएडा विधायक पंकज सिंह द्वारा इस मुद्दे को लगातार सरकार और संबंधित अधिकारियों के समक्ष प्रमुखता से उठाया गया तथा समाधान के लिए निरंतर संवाद एवं प्रयास किए गए। इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप अब इस दिशा में सकारात्मक एवं ठोस प्रगति सामने आई है। मुआवजा दरों में 50 प्रतिशत से अधिक की प्रस्तावित वृद्धि किसानों के आर्थिक सशक्तिकरण और उनके परिवारों की खुशहाली की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होगी। इससे किसानों को अपनी भूमि के बदले मिलने वाले मुआवजे में उल्लेखनीय वृद्धि का लाभ प्राप्त होगा।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली प्रदेश सरकार और विधायक पंकज सिंह के प्रयासों से किसानों की वर्षों पुरानी मांग के समाधान की दिशा में बढ़ा यह कदम नोएडा के किसान परिवारों के लिए नई उम्मीद लेकर आया है। किसान हित सर्वोपरि–विकास के साथ सम्मान और अधिकार की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम।

यू.पी. टेक्स 2026' के जरिए वैश्विक मंच पर दिखेगी उत्तर प्रदेश के वस्त्र उद्योग की ताकत,नोएडा एंटरप्रेन्योर्स एसोसिएशन भवन सेक्टर-06, नोएडा में 'यू.पी. टैक्स-2026' का कर्टेन रेजर एवं रोड शो सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। उत्तर प्रदेश को वैश्विक वस्त्र केंद्र में परिवर्तित किए जाने के उद्देश्य से हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग विभाग द्वारा 08 से 09 सितंबर तक लखनऊ में आयोजित होने वाले 'यू.पी. टेक्स 2026' के शुभारंभ से पूर्व आज 'यू.पी. टैक्स-2026' का कर्टेन रेजर एवं रोड शो आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ माननीय मंत्री, खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग एवं हथकरघा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार राकेश सचान, प्रमुख सचिव, खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग एवं हथकरघा विभाग, उत्तर प्रदेश अनिल कुमार सागर, मुख्य विकास अधिकारी भाल चंद्र त्रिपाठी, परिक्षेत्रीय सहायक आयुक्त (हथकरघा), हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग, पश्चिमी क्षेत्र मेरठ/सहारनपुर मंडल अरविंद कुमार सिंह, अध्यक्ष एनएईसी ललित ठुकराल, उपाध्यक्ष एनएईसी नीरज प्रकाश एवं उपाध्यक्ष, आई.आई.ए. राजीव बंसल द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में उद्यमियों द्वारा प्रतिभाग किया। मंत्री, खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग एवं हथकरघा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार राकेश सचान ने अपने उद्बोधन में उत्तर प्रदेश को वैश्विक टेक्सटाइल हब के रूप में स्थापित करने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि 'यू.पी. टेक्स 2026' के माध्यम से प्रदेश की टेक्सटाइल क्षमता को राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित करने, उद्यमियों एवं निवेशकों को एक मंच प्रदान करने तथा वस्त्र क्षेत्र में नए अवसरों को बढ़ावा देने का लक्ष्य है। 'यू.पी. टेक्स 2026' उत्तर प्रदेश के टेक्सटाइल सेक्टर के विकास को नई गति देने के साथ ही उद्योग जगत के लिए नए अवसरों और संभावनाओं के द्वार खोलेगा।प्रमुख सचिव, खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग एवं हथकरघा विभाग, उत्तर प्रदेश अनिल कुमार सागर ने उद्योग जगत की सहभागिता, निवेश के अवसरों तथा 'यू.पी. टेक्स 2026' की रूपरेखा एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

सेक्टर-70 में बच्चों ने मनाई जन्माष्टमी, कृष्ण-राधा बने नन्हे-मुन्ने बच्चों ने मोहा मन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर सेक्टर-70 स्थित फर्स्टवन कार्यक्रम को सफल बनाने में स्वयंसेवक राजवी सिंह, कृति यादव, आरवी, सक्षम और भाविका

रिहैब फाउंडेशन में शुक्रवार को एक भावुक और भक्तिमय आयोजन देखने को मिला। यहां दिव्यांग बच्चों ने अपने परिजनों के साथ मिलकर जन्माष्टमी का पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना से हुआ। इसके बाद दिव्यांग बच्चों ने कृष्ण और राधा की आकर्षक वेशभूषा में मनमोहक प्रस्तुतियां दीं। इस अवसर पर विशेष प्रस्तुति एडमिन हेड कृष्णा यादव, स्पेशल एजुकेटर इलिका रावत और फिजियोथेरेपिस्ट अभिनव प्रताप सिंह द्वारा तैयार की गई। भजन-कीर्तन और ढोल-नगाड़ों की थाप पर बच्चों ने जमकर नृत्य किया, जिसे देखकर वहां मौजूद हर व्यक्ति भावुक हो गया। का विशेष सहयोग रहा। फाउंडेशन के निदेशक एवं फिजियोथेरेपिस्ट एवं एर्गोनोमिस्ट डॉ. महिपाल सिंह ने बताया कि हमारा उद्देश्य दिव्यांग बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ना है। ऐसे त्योहारों को मनाने से बच्चों में खुशी, आत्मविश्वास और सामाजिक जुड़ाव बढ़ता है। इस अवसर पर फर्स्टवन रिहैब फाउंडेशन के प्रबंध निदेशक डॉ. दीक्षा श्रीवास्तव, फाउंडेशन की मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. सुष्मिता भाटी, और सौम्या सोनी, डिजिटल मीडिया एंड कम्युनिकेशन मैनेजर, मौजूद रहे। सेंटर मैनेजर सुरभि जैन ने बताया कि ऐसे आयोजनों और सामाजिक कार्यों से बच्चे हमारी संस्कृति को समझते हैं और समाज की मुख्यधारा से जुड़ते हैं।

वरिष्ठ पत्रकार जेपी सिंह के जन्मदिन पर उमड़ा शुभकामनाओं का सैलाब, पत्रकारिता जगत ने की उज्ज्वल भविष्य की कामना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। पत्रकारिता जगत से जुड़े एक महत्वपूर्ण और यादगार अवसर पर शुक्रवार को नोएडा मीडिया क्लब के महासचिव एवं और प्रभावशाली भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने पत्रकारिता को केवल पेशे के रूप में नहीं, बल्कि समाज की आवाज को जिम्मेदारी के साथ उठाने के माध्यम के रूप में अपनाया

वरिष्ठ पत्रकार जयप्रकाश सिंह 'जेपी' का जन्मदिन हर्षोल्लास और आत्मीय माहौल में मनाया गया। इस अवसर पर नोएडा मीडिया क्लब के सम्मानित पत्रकार साथियों, वरिष्ठ अधिकारीगण,शहर के गणमान्य नागरिकों एवं जनप्रतिनिधियों ने एकजुट होकर जेपी सिंह को है। जनहित से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से सामने लाने और पत्रकारिता की गरिमा को बनाए रखने में उनका योगदान सराहनीय रहा है। वक्ताओं ने कहा कि पत्रकारिता के साथ-साथ नोएडा मीडिया क्लब के महासचिव के रूप में भी जेपी सिंह पत्रकारों के हितों और उनकी समस्याओं को मजबूती

जन्मदिन की हार्दिक बधाई दी और उनके स्वस्थ, सुखद, समृद्ध एवं सफल जीवन की मंगलकामना की,जन्मदिन समारोह के दौरान उपस्थित लोगों ने जेपी सिंह को पटका पहनाकर एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया। इस दौरान समारोह में मौजूद लोगों ने उनके दीर्घायु होने तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में इसी प्रकार निरंतर सक्रिय रहते हुए समाज और पत्रकार हितों के लिए कार्य करते रहने की कामना की। आत्मीय माहौल में आयोजित समारोह में बधाई देने वालों का उत्साह देखते ही बनता था।इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि जेपी सिंह लंबे समय से पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी सक्रिय से उठाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहते हैं। पत्रकारों की एकता, सम्मान और अधिकारों से जुड़े विषयों को प्रभावी ढंग से संबंधित मंचों तक पहुंचाने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। समारोह में मौजूद पत्रकारों और गणमान्य लोगों ने कहा कि जेपी सिंह का सहज व्यवहार, सक्रियता और पत्रकारिता के प्रति समर्पण उन्हें साथी पत्रकारों के बीच एक अलग पहचान दिलाता है। सभी ने उनके जन्मदिन को विशेष अवसर बताते हुए उन्हें भविष्य में और अधिक सफलता हासिल करने तथा पत्रकारिता एवं समाजहित में नए आयाम स्थापित करने की शुभकामनाएं दीं।

पाकेट 7 के शिव मंदिर पर श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर-82 पाकेट-7 की भक्ति में सराबोर नजर आए। पूरे मंदिर परिसर में भक्तिमय तिवारी, अंगद सिंह तोमर, पप्पू सिंह,संजीव मिश्रा,हरि शंकर

सोसायटी स्थित शिव मंदिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव बड़े ही धूमधाम, श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। जन्माष्टमी के अवसर पर मंदिर को सुबह से ही आकर्षक फूलों और रंग-बिरंगे गुब्बारों से सजाया गया था। मंदिर परिसर में भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन एवं पूजा-अर्चना के लिए श्रद्धालुओं का दिनभर जमावड़ा लगा रहा। इस अवसर पर कन्हैया दास मंडली द्वारा भव्य भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजन संध्या में सोसायटीवासियों ने बड़ी संख्या में पहुंचकर भजनों का आनंद लिया और भगवान श्रीकृष्ण वातावरण बना रहा। जन्माष्टमी महोत्सव को सफल बनाने में सोसायटीवासियों और आयोजन से जुड़े सभी लोगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सभी के सहयोग और सहभागिता से यह भव्य धार्मिक आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

इस मौके पर उत्तम चंद्रा, सुशील पाल, देवेंद्र कुमार गुप्ता, रवि राघव,विष्णु शर्मा, संजय पांडेय,दिनेश पाठक, रमेश कुमार वर्मा,संगम प्रसाद मिश्र, अवनीश तिवारी, किशोर कपूर, हंस मणि शुक्ल, राकेश कुमार, विकास कुमार, रमेश चंद्र शर्मा,सर्वेश सिंह, घनश्याम जोशी, विकास कुमार शर्मा,संदीप कुमार, संजीव सक्सेना, जितेंद्र कुमार,राम भरोसे झा,वीरेंद्र सिंह, रमेश चंद्र दास, मिथिलेश कुमार राय,रविन्द्र सिंह, संतोष कुमार यादव, अवनीश शर्मा, गुड्डू चौधरी, प्रद्युम्न श्रीवास्तव, अशोक कुमार यादव,कमल यादव, प्रशांत पाठक, नीरज शर्मा, सोनू, विवेक सिंह, संजय मग्गू , विनोद मुद्गल , पंकज सिंह , प्रकाश सिन्हा , कपिल मुनि पांडेय,विष्णु कुमार शर्मा, राजवीर सिह, के के झा, ललित शर्मा , मनीष पांडेय,दिलीप राय ,एवं सोसायटीवासी एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन (आत्मा) योजनान्तर्गत जनपद-सोनभद्र के कृषकों का पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण समापन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र/प्रयागराज। प्रसार निदेशालय, सैम हिग्गिनबॉटम कृषि प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान

विश्वविद्यालय, प्रयागराज में दिनांक 31 अगस्त से 04 सितम्बर 2026 तक संचालित होने वाले सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन (आत्मा) योजनान्तर्गत जनपद-सोनभद्र के कृषकों का पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण समापन कार्यक्रम किया गया। समापन कार्यक्रम में निदेशक प्रसार डा0 प्रवीन चरन ने कहा कि विश्वविद्यालय के शोध कार्य के नवीन तकनीकियों से खाद्यान्न उत्पादन सुरक्षित हुआ है एवं विश्वविद्यालय एक अभूतपूर्व सहयोग प्रदान कर रहा है। उन्होंने कहा कि इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से आपको कई प्रकार की नवीन कृषि तकनीकियों को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। आगे उन्होनें बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शोध प्रक्षेत्रों पर एवं प्रयोगशालाओं में जाकर आपको कई प्रकार के शोध कार्यों को देखने व जानने का भी अवसर मिला होगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्होंने कृषकों को बताया कि यह विश्वविद्यालय यह संस्थान भारत ही नहीं एशिया महाद्वीप का सबसे पुराना कृषि संस्थान है जिसमें कृषकों को कृषि की प्रायोगिक शिक्षा प्रदान की जा रही है। इस संस्थान के विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित होने के उपरांत उ0प्र0 सरकार के सहयोग से कृषकों का कृषि एवं सम्बन्धित क्षेत्रों में प्रशिक्षण का कार्यक्रम प्रसार निदेशालय के

वैज्ञानिकों के ज्ञानवर्द्धन से कृषक प्रभावित होकर विन्ध्यांचल एवं प्रयागराज मण्डलों के कृषक इस विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण हेतु सदैव तत्पर एवं उत्साहित रहते हैं। श्रीमती मीना नेथन ने प्रशिक्षण के दौरान कृषकों को मोटे अनाजों की उपयोगिता के बारे में बताते हुए कहा कि मोटे अनाजों के दैनिक उपयोग से ग्रामीण महिलाओं एवं बच्चों में कुपोषण की समस्या को प्रभावी रूप से दूर किया जा सकता

बिस्कुट, गुलाब जामुन, तैयार करके कृषकों के सामने प्रयोगात्मक तरीके से तैयार करके उनको अवगत कराया एवं तकनीकी जानकारी प्रदान की। कृषि विज्ञान केन्द्र प्रयागराज के प्रभारी डा0 मुकेश पी. मसीह ने कृषकों को संरक्षित खेती (पॉलीहाउस, ग्रीनहाउस) के माध्यम से कद्दूवर्गीय सब्जियों के उत्पादन तकनीकी से संबंधित जानकारी एवं महत्व पर विस्तृत चर्चा की एवं कृषकों को अवगत कराया कि अपने क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थिति को देखते हुए जो भी कृषक अगेती सब्जी की खेती करना चाहता है उसको संरक्षित खेती तकनीकी को अपनाना होगा। इस अवसर पर प्रशिक्षण समन्वयक एवं वैज्ञानिक डा0 टी. डी. मिश्रा ने प्रतिभागी कृषकों को प्रशिक्षण कार्यक्रम की संक्षिप्त जानकारी देते हुए कृषकों को अवगत कराया कि पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रसार निदेशालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया तथा कृषकों ने रूचिपूर्वक तरीके से प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा प्रशिक्षण में कृषकों को एक नई दिशा का बोध

है। मोटे अनाजों में कैल्शियम प्रचुर मात्रा में उपस्थित रहता है जिसके सेवन से महिलाओं में गर्भावस्था के समय हड्डियों में होने वाली समस्याओं को दूर किया जा सकता है साथ ही अन्य मोटे अनाजों में लौह तत्व की प्रचुर मात्रा उपस्थित होती है जिससे बच्चों एव वृद्धों को प्रचुर मात्रा में इन पोषक तत्वों की प्राप्ति हो जाती है। इस

हुआ कि आज के आधुनिक युग में खेती-किसानी द्वारा आर्थिक स्थिति को सुधारना है तो नवीन तकनीकियों, नवीन प्रजातियों, बीज शोधन, कीट रोग प्रबंधन, खरपतवार प्रबंधन समयानुसार करना होगा अन्यथा कृषकों को हानि का सामना करना पड़ सकता है।

यदि हम इन विधियों का प्रयोग करते हैं तो हमे अगेती खेती समय

माध्यम से निरंतर संचालित किया जा रहा है जिसका क्षेत्र में उत्पादकता एवं गुणवत्ता तथा कृषकों के आय में वृद्धि हो रही है। प्रसार निदेशालय के वरिष्ठ अवसर पर उन्होनें मोटे अनाजों के प्रसंस्कृत उत्पादों को घरेलू एवं व्यवसायिक स्तर पर तैयार करें तथा प्रशिक्षण के दौरान मोटे अनाज (रागी, बाजरा) गुड़ से लड्डू, के विपरीत संरक्षित खेती के माध्यम से उत्पादन, अच्छी प्रजाति का बीज का चयन करना होगा तब जाकर हम आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी हो सकते हैं।

चीन के भीमकाय बांध दुनिया के लिए वाटर-बम साबित होंगे

क्या आप जानते हैं दुनिया का सबसे बड़ा बांध बनाने के लिए चीन ने कौन-सी जगह चुनी है? यह दुनिया के सबसे जटिल भू-

राजनीतिक और भूकंपीय रूप से अस्थिर क्षेत्रों में से है। भारत की सीमा से कुछ ही किलोमीटर दूर चीन तिब्बत में यारलुंग त्सांगपो नदी पर एक अभूतपूर्व परियोजना का निर्माण कर रहा है। यह दुनिया की सबसे अधिक ऊंचाई पर बहने वाली प्रमुख नदी है। इसे ही भारत में ब्रह्मपुत्र कहते हैं। यह विशाल बांध बिजली उत्पादन क्षमता के मामले में चीन के थ्री गॉर्जेज डैम को भी बहुत पीछे छोड़ देगा, जो फिलहाल दुनिया का सबसे बड़ा बांध है। इसका जलाशय भारत के पूर्वोत्तर और डेल्टाई बांग्लादेश में रहने वाली करोड़ों की आबादी के ऊपर पानी का एक विशाल भंडार रोककर रखेगा। इसको लेकर सबसे चिंताजनक चेतावनियां विदेशी आलोचकों नहीं, चीन के अपने वैज्ञानिकों की ओर से आ रही हैं। एक हालिया शोधपत्र ने निर्माण स्थल पर गंभीर भूगर्भीय खतरों की पहचान की है। भूवैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि यहां की भू-संरचना नाजुक है। उन्होंने चेतावनी दी है कि यहां आने वाले भूकंप बड़े पैमाने पर तबाही मचा सकते हैं, क्योंकि उससे जलाशय और आसपास का बुनियादी ढांचा, दोनों खतरे में पड़ सकते हैं। लेखकों ने जलाशय की ढलानों को मजबूत करने, रिटेनिंग संरचनाएं स्थापित करने और आपदा के जोखिम को कम करने के लिए परियोजना के प्रमुख हिस्सों को नए सिरे से डिजाइन करने की सिफारिश की है। जब किसी कम्युनिस्ट शासन के अधीन काम कर रहे वैज्ञानिक ऐसी चेतावनियां जारी करें, तो अंतरराष्ट्रीय समुदाय को उन पर ध्यान देना ही चाहिए। नया बांध ब्रह्मपुत्र नदी के ग्रेट बेंड पर बन रहा है, जहां भारत में प्रवेश करने से पहले नदी दुनिया की सबसे गहरी और सबसे लंबी घाटी से होकर तीव्र ढलान के साथ नीचे उतरती है। यह हिमालयी भूकंपीय पट्टी के ठीक बीच स्थित है, जो भारतीय और यूरेशियाई टेक्टोनिक प्लेटों की धीमी गति से हो रही टक्कर के कारण बनी है। यह पृथ्वी के सबसे अधिक भूकंप-संभावित क्षेत्रों में से एक है और यहां विनाशकारी भूकंप आने का पुराना रिकॉर्ड रहा है। खतरा केवल इतना नहीं है कि भूकंप किसी बांध को नुकसान पहुंचा सकता है। एक विशाल जलाशय खुद भी भूगर्भीय दबाव बढ़ाकर भूकंप को जन्म दे सकता है। इसका एक संभावित उदाहरण चीन में सामने आया था। आधुनिक चीन के इतिहास की सबसे घातक प्राकृतिक आपदाओं में से एक में 2008 में तिब्बती पठार के पूर्वी किनारे पर आए भूकंप में कई लोग मारे गए थे, जिनमें अधिकांश सिचुआन प्रांत के थे। वैज्ञानिक आज भी इसके कारणों को लेकर बहस करते हैं, लेकिन एक प्रभावशाली शोध का निष्कर्ष था कि शायद नए जिपिंगपू बांध के जलाशय में जमा पानी के विशाल भार ने नीचे स्थित एक दरार पर दबाव बढ़ाया हो और संभवतः उस भूकंप को दशकों या सदियों पहले ही ला दिया हो। लेकिन इस वैज्ञानिक संभावना का गंभीरता से सामना करने के बजाय चीन ने इससे भी कहीं बड़ी बांध परियोजना शुरू कर दी है, वह भी इससे अधिक नाजुक भूगर्भीय क्षेत्र में। लेकिन हिमालयी पारिस्थितिक तंत्र राष्ट्रीय सीमाओं का लिहाज नहीं करता; न ही किसी बड़े बांध के टूटने के परिणाम करेंगे। वर्ष 2025 में आया शक्तिशाली म्यांमार भूकंप इस बात का प्रमाण था कि यह भूकंपीय क्षेत्र किस हद तक परस्पर जुड़ा हुआ है। इसके झटके करीब 1,000 किलोमीटर दूर बैंकॉक तक महसूस हुए थे और वहां एक ऊंची इमारत ढह गई थी। ब्रह्मपुत्र पूर्वोत्तर भारत की जीवनरेखा है। भारत में यह खेतों की सिंचाई करती है, मत्स्य-पालन को सहारा देती है और लाखों लोगों की आजीविका का आधार है। बांग्लादेश में यह मीठे पानी का सबसे बड़ा स्रोत है।

चीन द्वारा मेकांग नदी पर बनाए गए विशाल बांधों की तरह यह सुपर-डैम भी सीमा-पार नदी प्रवाह को बदलने और पोषक तत्वों से भरपूर तलछट के निचले इलाकों तक पहुंचने को कम करने का खतरा पैदा करता है। जलाशय में रोके पानी को आपात-स्थिति में छोड़ना भी घनी आबादी वाले निचले मैदानी इलाकों में विनाशकारी बाढ़ ला सकता है।

तिब्बत में इंजीनियरिंग की एक विफलता से शुरू होने वाली घटना बांग्लादेश तक फैली मानवीय त्रासदी में बदल सकती है।

यह साफ है कि चीन ने पानी को कूटनीतिक दबाव का एक और औजार बना दिया है। हिमालयी पारिस्थितिक तंत्र राष्ट्रीय सीमाओं का लिहाज नहीं करता; न ही किसी बड़े बांध के टूटने के परिणाम करेंगे। वर्ष 2025 में आया म्यांमार भूकंप इस बात का प्रमाण था कि यह भूकंपीय क्षेत्र किस हद तक परस्पर जुड़ा हुआ है। (प्रोजेक्ट सिंडिकेट, ब्रह्मा चेलानी)

महिलाओं के पक्ष में एक नई राजनीतिक भाषा सुनाई दी है

कुछ दिनों पहले 'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम के दौरान पुणे में युवा महिलाओं को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा कि भारत में आदर्श नारी को तीन वर्गों में डाल

दिया जाता है, उसे सिर्फ बेटी, पत्नी या मां के रूप में देखा जाता है। राहुल ने आगे कहा कि इनमें से किसी एक के रूप में देखे जाने में कोई गलत बात नहीं है, लेकिन यही आपकी एकमात्र पहचान नहीं हो सकती। कई महिलाएं बेहतरीन प्रोफेशनल होती हैं, जिनकी महत्वाकांक्षाएं और सपने इन पारंपरिक भूमिकाओं से आगे हैं। लेकिन अपने लक्ष्यों को हासिल करने की उनकी कोशिश अक्सर उन रुकावटों से भरी होती है, जो समाज और उसे चलाने वाली सोच उनके सामने खड़ी करती है। इन रुकावटों और इस सोच के खिलाफ लड़ना और उन्हें दूर करना जरूरी है। महिला दर्शकों की जोरदार तालियों के बीच राहुल का आखिरी संदेश था : 'पिंजरा तोड़ो, पितृसत्ता को खत्म करो।' अब तक इस तरह की बातें दुनिया भर में अकादमिक सेमिनारों और कॉन्फ्रेंस में लगातार सुनने को मिलती रही हैं। लेकिन जहां तक मेरी जानकारी है, पहली बार इन्हें भारत की मुख्यधारा की राजनीति में लाया गया है। अकादमिक और राजनीतिक मुख्यधारा अकसर सामाजिक और राजनीतिक जीवन के दो अलग-अलग हिस्से होते हैं। अमेरिका की आईवी लीग यूनिवर्सिटीज में 'मागा' की सोच का बहुत कम या बिल्कुल असर दिखाई नहीं देता। भारत में जेएनयू को भी अकसर एक अलग दुनिया माना गया है। केरल या बंगाल (जब राज्य में सीपीएम की सरकार थी) को छोड़ दें तो जेएनयू की राजनीतिक संस्कृति का राष्ट्रीय मुख्यधारा से बहुत कम मेल रहा है। दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (और सोशियोलॉजी) का रिकॉर्ड भी कुछ ऐसा ही रहा है- मुख्यधारा की राजनीति में उसकी भूमिका शायद ही कभी उसकी बौद्धिक चमक के बराबर रही हो। इसलिए राहुल गांधी का पितृसत्ता के खिलाफ कदम नया और अलग है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि पितृसत्ता को खत्म करो की अपील को ऊपर से थोपी गई कोई बौद्धिक बात न माना जाए, जिसका महिलाओं की रोजमर्रा की जिंदगी से कोई लेना-देना नहीं हो, पुणे में राहुल का बात रखने का तरीका काफी अलग था। उन्होंने इसे किसी

यूनिवर्सिटी की ऊंची अकादमिक दुनिया से सीधे निकले राजनीतिक भाषण की तरह नहीं, बल्कि एक बड़े जन-कार्यक्रम की तरह पेश किया। मंच पर कई युवा महिलाओं को बुलाया गया था। इनमें लगभग सभी छात्राएं या हाल ही में पढ़ाई पूरी करने वाली युवा महिलाएं थीं। उन्होंने अपनी पढ़ाई और दूसरे लक्ष्यों के बारे में बताया और उन रुकावटों के बारे में भी बताया, जिनका उन्हें सामना करना पड़ता है। इनमें शहर और गांव, दोनों जगहों से आई महिलाएं थीं। कुछ अंग्रेजी अच्छी तरह बोल रही थीं, कुछ हिंदी में और कुछ मराठी में। कुछ ऊपरी-मध्यम वर्ग के परिवारों से थीं; एक आदिवासी महिला थीं और एक महाराष्ट्र के एक छोटे शहर के एक सफाई कर्मचारी की बेटी थीं। सफाईकर्मी की बेटी ने दिल्ली के जामिया मिल्लिया इस्लामिया से पढ़ाई की थी और पत्रकार बनना चाहती हैं, लेकिन उन्हें बार-बार कहा जाता है कि वे पत्रकार नहीं बन सकतीं, उन्हें शादी के बारे में सोचना चाहिए। सभी महिलाओं ने अपनी बात इस तरह रखी कि रोजमर्रा की जिंदगी पर पितृसत्ता के बुरे असर को समझा जा सके। उन्होंने बताया कि गांव से बाहर के स्कूलों में जाना कितना मुश्किल है; सार्वजनिक परिवहन कितना असुरक्षित है, चाहे बसें भरी हों या खाली; सोशल मीडिया का इस्तेमाल उन्हें शर्मिंदा करने और दबाव बनाने के लिए कैसे किया जाता है। सिर्फ लिखकर ट्रोल करने के जरिए नहीं, बल्कि तस्वीरों और वीडियो के साथ छेड़छाड़ करके भी; महिला वकीलों को कमतर मानने वाली सोच के कारण कानूनी मामले योग्यता के आधार पर नहीं, बल्कि जेंडर के आधार पर दिए जाते हैं; कैसे नागरिक के तौर पर अभिव्यक्ति की आजादी का इस्तेमाल करने पर उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कर दी जाती है और कहा जाता है कि महिलाओं को अभिव्यक्ति की इतनी स्वतंत्रता नहीं दी जा सकती। इस कार्यक्रम का मकसद सिर्फ किसी विचार को उदाहरणों के जरिए समझाना नहीं था। इस कवायद का मकसद गहराई से राजनीतिक था। बंगाल में जीत के बाद बीजेपी का राजनीतिक प्रभाव बहुत बढ़ गया था। लेकिन कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) आंदोलन-खासकर जंतर-मंतर का प्रदर्शन- ने देश में राजनीतिक विमर्श को बदला है। इसी मौके का फायदा उठाते हुए राहुल गांधी राजनीतिक बहस में बढ़त हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं। 2027 में कई विधानसभा चुनाव होने हैं और छात्र व महिलाएं यकीनन एक महत्वपूर्ण वोटर समूह हैं। अब तक जिस तरह की बातें अकादमिक सेमिनारों और कॉन्फ्रेंस में सुनने को मिलती थीं, उन्हें पहली बार मुख्यधारा की राजनीति में लाया गया है। देखना होगा कि पितृसत्ता को खत्म करो वाले संदेश का महिलाओं पर क्या असर होता है। (ये लेखक के अपने विचार हैं,आशुतोष वार्ष्णेय)

इंडस्ट्री 5.0 और भविष्य का स्नातकः तकनीक के साथ मानवीय क्षमता का नया संतुलन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। कौशाकी सोंधी,- डीन-प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट, महाराष्ट्र, व्यक्तित्व विकास, प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट विशेषज्ञ, शिक्षाविद्, कॉरपोरेट प्रशिक्षक और विद्यार्थी मार्गदर्शक हैं। शिक्षा, कौशल विकास, करियर निर्माण और उद्योग-शिक्षा समन्वय के क्षेत्र में व्यापक अनुभव रखने वाली सोंधी ने विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय और कॉरपोरेट जगत तक विभिन्न महत्वपूर्ण भूमिकाओं में कार्य किया है। वे शारदा विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण एवं विकास विभाग की प्रमुख प्रशिक्षक, आईआईएमटी समूह के महाविद्यालयों में प्रमुख प्रशिक्षक, मंगलमय इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, ग्रेटर नोएडा में प्राध्यापक एवं विद्यार्थी परामर्शदाता, होली पब्लिक स्कूल में प्रधानाचार्य तथा बॉम्बे पेपर मिल्स लिमिटेड, मुंबई में अधिगम एवं विकास प्रबंधक के रूप में कार्य कर चुकी हैं। वे नीति आयोग की 'मेंटोर ऑफ चेंज', सिम्बायोसिस सेंटर फॉर एंटरप्रेन्योरशिप एंड इनोवेशन की मार्गदर्शक तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं संस्थानों की सलाहकार एवं मार्गदर्शक रही हैं। वे भारत विश्वविद्यालय, श्री वेंकटेश्वर कॉलेज तथा भारत इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी सहित अनेक संस्थानों से शैक्षणिक एवं सलाहकार भूमिकाओं में जुड़ी रही हैं। साथ ही, वे अखिल भारतीय मानवाधिकार, स्वतंत्रता एवं सामाजिक न्याय परिषद की राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण उपाध्यक्ष तथा वूमेन इंडिया काउंसिल ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री से भी नेतृत्वकारी भूमिका में जुड़ी हैं।कौशाकी सोंधी कहती हैं, 'वर्ष 2026 का रोजगार बाजार विद्यार्थियों से केवल डिग्री नहीं, बल्कि अपनी उपयोगिता सिद्ध करने की क्षमता मांग रहा है। अब सवाल यह नहीं है कि विद्यार्थी ने क्या पढ़ा है, बल्कि यह है कि वह अपने ज्ञान का उपयोग वास्तविक समस्या को हल करने, तकनीक के साथ काम करने और संगठन के लिए मूल्य पैदा करने में कितना कर सकता है।' आज रोजगार की दुनिया एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन, रोबोटिक्स, बड़े आंकड़े, क्लाउड तकनीक और डिजिटल कार्यप्रणालियां पारंपरिक नौकरियों और भूमिकाओं की प्रकृति बदल रही हैं। इसी बदलते परिदृश्य में इंडस्ट्री 5.0 की अवधारणा महत्वपूर्ण हो जाती है। सोंधी के अनुसार, इंडस्ट्री 5.0 केवल अधिक उन्नत तकनीक की कहानी नहीं है; यह ङङमनुष्य और मशीन के बीच बेहतर सहयोग की कहानी है। 'मशीनें गति, गणना और स्वचालन दे सकती हैं, लेकिन रचनात्मक सोच, सहानुभूति, नेतृत्व, नैतिक निर्णय और मानवीय समझ को विकसित करना अभी भी शिक्षा की जिम्मेदारी है,' वे कहती हैं। उनके अनुसार, इसका सीधा प्रभाव महाविद्यालयों की प्रशिक्षण और प्लेसमेंट व्यवस्था पर पड़ रहा है। 2026 में प्लेसमेंट की तैयारी अंतिम वर्ष से शुरू करना देर से शुरू करना है।विद्यार्थी के पहले वर्ष से ही उसकी रुचि, क्षमता और करियर लक्ष्य को पहचानकर कौशल विकास की दिशा तय करनी होगी। संचार कौशल, व्यक्तित्व विकास, तार्किक क्षमता, समूह चर्चा, प्रस्तुतीकरण, साक्षात्कार, डिजिटल दक्षता और व्यावसायिक शिष्टाचार जैसी क्षमताओं को पाठ्यक्रम के समान ही महत्व देना होगा। इंटर्नशिप को लेकर सोंधी का दृष्टिकोण स्पष्ट है–'इंटर्नशिप प्रमाण-पत्र नहीं, अनुभव की प्रयोगशाला होनी चाहिए।' उनके अनुसार, 2026 में इंजीनियरिंग, प्रबंधन, वाणिज्य, कंप्यूटर अनुप्रयोग, फार्मेसी, विज्ञान, मानविकी, डिजाइन और अन्य सभी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को वास्तविक उद्योग अनुभव की आवश्यकता है। विद्यार्थियों को केवल उपस्थिति पूरी करने वाली इंटर्नशिप के बजाय लाइव प्रोजेक्ट, उद्योग आधारित समस्या, शोध कार्य, ग्राहक संवाद, आंकड़ों का विश्लेषण, क्षेत्रीय कार्य और परिणाम आधारित जिम्मेदारियां मिलनी चाहिए। ऐसी इंटर्नशिप विद्यार्थी को केवल नौकरी के लिए तैयार नहीं करती, बल्कि उसे पेशेवर दुनिया की वास्तविक अपेक्षाओं को समझने का अवसर देती है। कई मामलों में यही अनुभव पूर्व-नियुक्ति प्रस्ताव तक भी पहुंचा सकता है। सोंधी आगे बताती हैं कि कैंपस प्लेसमेंट का स्वरूप भी तेजी से बदल रहा है। कंपनियां अब केवल शैक्षणिक अंक और पारंपरिक साक्षात्कार के आधार पर उम्मीदवारों का चयन नहीं कर रहीं। ऑनलाइन मूल्यांकन, कौशल आधारित परीक्षण, परिस्थिति आधारित प्रश्न, समूह चर्चा, तकनीकी साक्षात्कार, व्यवहारिक मूल्यांकन और डिजिटल माध्यमों से भर्ती प्रक्रिया का हिस्सा बन रहे हैं। ऐसे में विद्यार्थियों को केवल परीक्षा पास करने के बजाय स्वयं को बहुआयामी पेशेवर के रूप में प्रस्तुत करना सीखना होगा। 'हर स्ट्रीम के विद्यार्थी के लिए रोजगार की भाषा अलग हो सकती है, लेकिन रोजगार-योग्यता की बुनियादी भाषा लगभग समान है,' सोंधी कहती हैं। इंजीनियरिंग और कंप्यूटर से जुड़े विद्यार्थियों के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता, प्रोग्रामिंग, साइबर सुरक्षा, क्लाउड और आंकड़ा विश्लेषण जैसी तकनीकी दक्षताएं महत्वपूर्ण हैं। प्रबंधन विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक

विश्लेषण, डिजिटल विपणन, वित्तीय समझ, नेतृत्व और निर्णय क्षमता आवश्यक हैं। वाणिज्य के विद्यार्थियों के लिए वित्तीय तकनीक, आंकड़ा विश्लेषण, डिजिटल लेखांकन और व्यावसायिक संचार उपयोगी हैं। फार्मेसी और विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए अनुसंधान, आंकड़ा-आधारित सोच, प्रयोगशाला कौशल और उद्योग संबंधी समझ महत्वपूर्ण होती जा रही है। वहीं मानविकी के विद्यार्थियों की संचार, शोध, रचनात्मकता, सामाजिक समझ और आलोचनात्मक चिंतन जैसी क्षमताएं डिजिटल युग में नई संभावनाएं पैदा कर रही हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रभाव पर सोंधी कहती हैं कि विद्यार्थियों को एआई से डरने के बजाय एआई के साथ काम करना सीखना चाहिए। एआई जीवन-वृत्त तैयार करने, जानकारी खोजने, विश्लेषण करने, प्रस्तुति बनाने और सीखने की प्रक्रिया को आसान बना सकता है, लेकिन विद्यार्थी की मौलिक सोच और सत्यापन की जिम्मेदारी समाप्त नहीं होती। 'एआई का उपयोग करने वाला विद्यार्थी आगे बढ़ सकता है, लेकिन एआई पर पूरी तरह निर्भर विद्यार्थी अपनी निर्णय क्षमता खो सकता है। इसलिए तकनीकी दक्षता के साथ डिजिटल नैतिकता और आलोचनात्मक सोच अनिवार्य है,' वे स्पष्ट करती हैं। उनके अनुसार, आने वाले समय में मानवीय कौशल का महत्व कम नहीं बल्कि अधिक होगा। रचनात्मकता, संवाद, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, नेतृत्व, सहयोग, समस्या समाधान, अनुकूलनशीलता और सीखने की इच्छा वे क्षमताएं हैं जो किसी विद्यार्थी को बदलती तकनीक के बीच भी प्रासंगिक बनाए रखेंगी। यही इंडस्ट्री 5.0 का मूल संदेश है–तकनीक को मानव क्षमता का विकल्प नहीं, बल्कि विस्तार बनाना। सोंधी का मानना है कि उच्च शिक्षा संस्थानों के सामने आज सबसे बड़ी चुनौती ङङशिक्षा और रोजगार के बीच मौजूद अंतर को कम करना है। इसके लिए उद्योग विशेषज्ञों को कक्षा से जोड़ना, नियमित कौशल प्रशिक्षण, गुणवत्तापूर्ण इंटर्नशिप, वास्तविक परियोजनाएं, प्रमाणित कौशल कार्यक्रम, पूर्व-नियुक्ति प्रशिक्षण, करियर परामर्श और निरंतर उद्योग संवाद आवश्यक हैं। प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट विभाग को केवल कंपनियों को बुलाकर भर्ती कराने वाली इकाई के रूप में नहीं, बल्कि विद्यार्थी के संपूर्ण करियर विकास का रणनीतिक केंद्र बनाया जाना चाहिए। 'आज का विद्यार्थी केवल नौकरी पाने वाला नहीं, बल्कि भविष्य का समस्या-समाधानकर्ता, नवोन्मेषक और जिम्मेदार पेशेवर है,' सोंधी कहती हैं। उनके अनुसार, कॉलेजों को विद्यार्थियों में तीन समानांतर क्षमताएं विकसित करनी होंगी–क्या जानना है, क्या करना है और कैसे बेहतर इंसान बनकर करना है। इंडस्ट्री 5.0 के दौर में भविष्य का सफल स्नातक वही होगा जो तकनीक को समझता हो, लेकिन तकनीक से आगे सोच भी सकता हो; जो एआई का उपयोग कर सकता हो, लेकिन अपनी स्वतंत्र सोच भी रखता हो; जो अपने विषय में दक्ष हो, लेकिन दूसरे क्षेत्रों के साथ सहयोग भी कर सकता हो; और जो नौकरी खोजने के साथ-साथ नए अवसरों का निर्माण करने की क्षमता भी रखता हो। कौशाकी सोंधी के शब्दों में, 'भविष्य की शिक्षा का लक्ष्य केवल रोजगार प्राप्त करने वाले स्नातक तैयार करना नहीं होना चाहिए। हमारा लक्ष्य ऐसे 'भविष्य-तैयार' पेशेवर तैयार करना होना चाहिए, जो तकनीकी रूप से सक्षम, मानवीय रूप से संवेदनशील, नैतिक रूप से मजबूत और लगातार सीखने के लिए तैयार हों। यही इंडस्ट्री 5.0 के युग में शिक्षा, प्रशिक्षण और प्लेसमेंट की वास्तविक सफलता होगी।' मनुष्य और मशीन के बीच बेहतर सहयोग की कहानी है। 'मशीनें गति, गणना और स्वचालन दे सकती हैं, लेकिन रचनात्मक सोच, सहानुभूति, नेतृत्व, नैतिक निर्णय और मानवीय समझ को विकसित करना अभी भी शिक्षा की जिम्मेदारी है,' वे कहती हैं। उनके अनुसार, इसका सीधा प्रभाव महाविद्यालयों की प्रशिक्षण और प्लेसमेंट व्यवस्था पर पड़ रहा है। 2026 में प्लेसमेंट की तैयारी अंतिम वर्ष से शुरू करना देर से शुरू करना है। विद्यार्थी के पहले वर्ष से ही उसकी रुचि, क्षमता और करियर लक्ष्य को पहचानकर कौशल विकास की दिशा तय करनी होगी। संचार कौशल, व्यक्तित्व विकास, तार्किक क्षमता, समूह चर्चा, प्रस्तुतीकरण, साक्षात्कार, डिजिटल दक्षता और व्यावसायिक शिष्टाचार जैसी क्षमताओं को पाठ्यक्रम के समान ही महत्व देना होगा। इंटर्नशिप को लेकर सोंधी का दृष्टिकोण स्पष्ट है–'इंटर्नशिप प्रमाण-पत्र नहीं, अनुभव की प्रयोगशाला होनी चाहिए।' उनके अनुसार, 2026 में इंजीनियरिंग, प्रबंधन, वाणिज्य, कंप्यूटर अनुप्रयोग, फार्मेसी, विज्ञान, मानविकी, डिजाइन और अन्य सभी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को वास्तविक उद्योग अनुभव की आवश्यकता है। विद्यार्थियों को केवल उपस्थिति पूरी करने वाली इंटर्नशिप के बजाय लाइव प्रोजेक्ट, उद्योग आधारित समस्या, शोध कार्य, ग्राहक संवाद, आंकड़ों का विश्लेषण, क्षेत्रीय कार्य और परिणाम आधारित जिम्मेदारियां मिलनी चाहिए। ऐसी इंटर्नशिप विद्यार्थी को केवल नौकरी के लिए तैयार नहीं करती, बल्कि उसे पेशेवर दुनिया की वास्तविक अपेक्षाओं को समझने का अवसर देती है। कई मामलों में यही अनुभव पूर्व-नियुक्ति प्रस्ताव तक भी पहुंचा सकता है। सोंधी आगे बताती हैं कि कैंपस प्लेसमेंट का स्वरूप भी तेजी से बदल रहा है। कंपनियां अब केवल शैक्षणिक अंक और पारंपरिक साक्षात्कार के आधार पर उम्मीदवारों का चयन नहीं कर रहीं। ऑनलाइन मूल्यांकन, कौशल आधारित परीक्षण, परिस्थिति आधारित प्रश्न, समूह चर्चा, तकनीकी साक्षात्कार, व्यवहारिक मूल्यांकन और डिजिटल माध्यमों से भर्ती प्रक्रिया का हिस्सा बन रहे हैं। ऐसे में विद्यार्थियों को केवल परीक्षा पास करने के बजाय स्वयं को बहुआयामी पेशेवर के रूप में प्रस्तुत करना सीखना होगा। 'हर स्ट्रीम के विद्यार्थी के लिए रोजगार की भाषा अलग हो सकती है, लेकिन रोजगार-योग्यता की बुनियादी भाषा लगभग समान है,' सोंधी कहती हैं। इंजीनियरिंग और कंप्यूटर से जुड़े विद्यार्थियों के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता, प्रोग्रामिंग, साइबर सुरक्षा, क्लाउड और आंकड़ा विश्लेषण जैसी तकनीकी दक्षताएं महत्वपूर्ण हैं। प्रबंधन विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक विश्लेषण, डिजिटल विपणन, वित्तीय समझ, नेतृत्व और निर्णय क्षमता आवश्यक हैं। वाणिज्य के विद्यार्थियों के लिए वित्तीय तकनीक, आंकड़ा विश्लेषण, डिजिटल लेखांकन और व्यावसायिक संचार उपयोगी हैं। फार्मेसी और विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए अनुसंधान, आंकड़ा-आधारित सोच, प्रयोगशाला कौशल और उद्योग संबंधी समझ महत्वपूर्ण होती जा रही है। वहीं मानविकी के विद्यार्थियों की संचार, शोध, रचनात्मकता, सामाजिक समझ और आलोचनात्मक चिंतन जैसी क्षमताएं डिजिटल युग में नई संभावनाएं पैदा कर रही हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रभाव पर सोंधी कहती हैं कि विद्यार्थियों को एआई से डरने के बजाय एआई के साथ काम करना सीखना चाहिए। एआई जीवन-वृत्त तैयार करने, जानकारी खोजने, विश्लेषण करने, प्रस्तुति बनाने और सीखने की प्रक्रिया को आसान बना सकता है, लेकिन विद्यार्थी की मौलिक सोच और सत्यापन की जिम्मेदारी समाप्त नहीं होती। 'एआई का उपयोग करने वाला विद्यार्थी आगे बढ़ सकता है, लेकिन एआई पर पूरी तरह निर्भर विद्यार्थी अपनी निर्णय क्षमता खो सकता है। इसलिए तकनीकी दक्षता के साथ डिजिटल नैतिकता और आलोचनात्मक सोच अनिवार्य है,' वे स्पष्ट करती हैं। उनके अनुसार, आने वाले समय में मानवीय कौशल का महत्व कम नहीं बल्कि अधिक होगा। रचनात्मकता, संवाद, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, नेतृत्व, सहयोग, समस्या समाधान, अनुकूलनशीलता और सीखने की इच्छा वे क्षमताएं हैं जो किसी विद्यार्थी को बदलती तकनीक के बीच भी प्रासंगिक बनाए रखेंगी। यही इंडस्ट्री 5.0 का मूल संदेश है–तकनीक को मानव क्षमता का विकल्प नहीं, बल्कि विस्तार बनाना। सोंधी का मानना है कि उच्च शिक्षा संस्थानों के सामने आज सबसे बड़ी चुनौती शिक्षा और रोजगार के बीच मौजूद अंतर को कम करना है। इसके लिए उद्योग विशेषज्ञों को कक्षा से जोड़ना, नियमित कौशल प्रशिक्षण, गुणवत्तापूर्ण इंटर्नशिप, वास्तविक परियोजनाएं, प्रमाणित कौशल कार्यक्रम, पूर्व-नियुक्ति प्रशिक्षण, करियर परामर्श और निरंतर उद्योग संवाद आवश्यक हैं। प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट विभाग को केवल कंपनियों को बुलाकर भर्ती कराने वाली इकाई के रूप में नहीं, बल्कि विद्यार्थी के संपूर्ण करियर विकास का रणनीतिक केंद्र बनाया जाना चाहिए। 'आज का विद्यार्थी केवल नौकरी पाने वाला नहीं, बल्कि भविष्य का समस्या-समाधानकर्ता, नवोन्मेषक और जिम्मेदार पेशेवर है,' सोंधी कहती हैं। उनके अनुसार, कॉलेजों को विद्यार्थियों में तीन समानांतर क्षमताएं विकसित करनी होंगी–क्या जानना है, क्या करना है और कैसे बेहतर इंसान बनकर करना है।इंडस्ट्री 5.0 के दौर में भविष्य का सफल स्नातक वही होगा जो तकनीक को समझता हो, लेकिन तकनीक से आगे सोच भी सकता हो; जो एआई का उपयोग कर सकता हो, लेकिन अपनी स्वतंत्र सोच भी रखता हो; जो अपने विषय में दक्ष हो, लेकिन दूसरे क्षेत्रों के साथ सहयोग भी कर सकता हो; और जो नौकरी खोजने के साथ-साथ नए अवसरों का निर्माण करने की क्षमता भी रखता हो। कौशाकी सोंधी के शब्दों में, 'भविष्य की शिक्षा का लक्ष्य केवल रोजगार प्राप्त करने वाले स्नातक तैयार करना नहीं होना चाहिए। हमारा लक्ष्य ऐसे 'भविष्य-तैयार' पेशेवर तैयार करना होना चाहिए, जो तकनीकी रूप से सक्षम, मानवीय रूप से संवेदनशील, नैतिक रूप से मजबूत और लगातार सीखने के लिए तैयार हों। यही इंडस्ट्री 5.0 के युग में शिक्षा, प्रशिक्षण और प्लेसमेंट की वास्तविक सफलता होगी।'

जयशंकर बोले- तेल खरीद पर रोक लगाने से जंग नहीं रुकेगी, बातचीत से ही खत्म होगी, भारत यूक्रेन युद्ध खत्म कराने के लिए मध्यस्थता को तैयार

कीव।लगातार हमलों से ब्लैक सी का समुद्री व्यापार प्रभावित हुआ है। जहाज मालिक इस रूट पर जाने से बच रहे हैं और माल ढुलाई की लागत बढ़ रही है। इसका असर दुनिया की खाद्य सप्लाई पर पड़ने का खतरा है। गेहूं और मक्का

की कीमतों में तेजी आ सकती है। रूस और यूक्रेन मिलकर दुनिया के करीब 30फीसदी गेहूं निर्यात का हिस्सा रखते हैं। दोनों देशों का ज्यादातर अनाज ब्लैक सी के रास्ते दूसरे देशों तक पहुंचता है। 2022 से जारी रूस-यूक्रेन जंग- रूस और यूक्रेन के बीच जंग फरवरी 2022 में शुरू हुई। रूस ने यूक्रेन के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया और तभी से दोनों देशों के बीच लड़ाई जारी है। रूस के पास यूक्रेन के करीब 20फीसदी इलाके पर कब्जा है। इस युद्ध में हजारों नागरिकों और सैनिकों की मौत हुई हैं, जबकि लाखों यूक्रेनियन अपना घर छोड़ने को मजबूर हुए हैं। जून 2023 तक करीब 80 लाख लोग यूक्रेन छोड़कर दूसरे देशों में चले गए थे। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प युद्ध खत्म कराने के लिए रूस और यूक्रेन के नेताओं के साथ बातचीत कर चुके हैं। हाल ही में उन्होंने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से अलास्का में मुलाकात की थी। यह करीब 80 साल में किसी रूसी नेता की पहली अलास्का यात्रा थी। डोनबास को लेकर रूस और यूक्रेन के बीच फंसा है मामला-रूस पूरे डोनबास पर कब्जा चाहता है, लेकिन यूक्रेन अपनी जमीन छोड़ने को तैयार नहीं है। यही वजह है कि दोनों देशों के बीच शांति समझौते में यह सबसे बड़ी अड़चनों में से एक बना हुआ है। रूस डोनबास को बेहद अहम मानता है और इसे छोड़ना नहीं चाहता। पुतिन पहले ही कह चुके हैं कि शांति समझौते के लिए यूक्रेन को रूस के कब्जे वाले इलाकों पर अपना दावा छोड़ना होगा। साथ ही उसे इन इलाकों को रूस का हिस्सा मानना होगा।जयशंकर 3 से 5 सितंबर तक यूक्रेन और पोलैंड दौरे पर- विदेश मंत्री एस. जयशंकर 3 से 5 सितंबर तक यूक्रेन और पोलैंड की आधिकारिक यात्रा पर हैं। यूक्रेन के बाद वे पोलैंड जाएंगे, जहां उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री रादोस्लाव सिकोरस्की से द्विपक्षीय बातचीत करेंगे।

विदेश मंत्रालय के मुताबिक, इस यात्रा का मकसद दोनों देशों के साथ भारत के रिश्तों को और मजबूत करना है।

इस दौरान क्षेत्रीय हालात और आपसी हितों से जुड़े दूसरे अहम मुद्दों पर भी चर्चा होगी।

पाक ग्रूमिंग गैंग ने लंदन में सिख युवती को फंसाया, ब्रेनवॉश किया

नितनेम-गुरुद्वारा जाना छोड़ा, पुलिस को कंप्लेंट कर घर छोड़ चली गई

पठानकोट। इंग्लैंड (यूके) में पंजाबी युवती पाकिस्तानी ग्रूमिंग गैंग के चंगुल में फंस गई। युवती की मां ने एक पंजाबी चैनल से बातचीत में कहा कि उसकी 19 साल की बेटी है। वह नितनेम करती, गुरुद्वारे जाकर सेवा करती थी लेकिन गैंग ने उसे

फंसा लिया। उसने सब कुछ छोड़ दिया। उसका ब्रेनवॉश कर दिया। जब हमने समझाने की कोशिश की तो हमारी शिकायत लंदन पुलिस को कर दी। इसके बाद हमें छोड़कर चली गई। मां ने कहा कि यूनिवर्सिटी में लड़कियों के एक ग्रुप से जोड़ने के बाद एक लड़का उसके टच में आया, उसके बाद ही उसका पूरा व्यवहार बदल गया। उसने इंग्लैंड में रहते सिखों से इस मामले में मदद मांगी है। युवती की मां ने ग्रूमिंग को लेकर क्या कहा- 1. स्कूल में पढ़ी, यूनिवर्सिटी तक सब ठीक था:- मां ने कहा- मेरी बेटी का नाम सिमरन है। वह 19 साल की है। बेटी यहीं (लंदन) की जन्मी है, लेकिन फिर भी वह जैसी हमारी भारतीय समुदाय की बच्चियां होती हैं, उस तरह थी। हमारे घर में एक अच्छे माहौल में पली-बढ़ी थी उसने स्कूल खत्म किया और सितंबर 2025 में यूनिवर्सिटी में पढ़ने के लिए गई। तब तक सब कुछ ठीक था। 2. यूनिवर्सिटी में लड़कियों का ग्रुप बना, फिर एक लड़का उसके टच में आया- मां ने कहा- यूनिवर्सिटी में जाकर मुस्लिम लड़कियों का ग्रुप बना। फिर एक लड़का उनके संपर्क में आया। जिसने मेरी बेटी से संपर्क किया और फिर उसका थोड़ा-थोड़ा व्यवहार बदलने लगा। वह पहले बहुत अच्छी थी, बहुत इज्जत करती थी हमारी, कभी वह हमारे आगे बोलती नहीं थी। फिर हमें शक हुआ कि शायद कुछ गलत है। हमें जून 2026 में पता चला कि एक मुस्लिम लड़का उसके साथ जुड़ चुका है। उसके बाद उसका व्यवहार बदल गया। 3. मां-बाप को वह बातें बोलती, जिससे यकीन नहीं आता- मां ने कहा- वह काफी आक्रामक होने लगी। यहां तक कि उसको यह पता चलना बंद हो गया कि हम उसके माता-पिता हैं। वह कभी-कभी हमें इतनी गलत चीजें बोल देती थी कि हम विश्वास ही नहीं कर पाते थे कि यह सिमरन ही बोल रही है। स्कूल में हर टीचर उसकी तारीफ करता था कि यह हमारी बहुत इज्जत करती है। 4. घर पर पाठ करती, गुरुद्वारे जाती, फिर पूरी बदल गई- मां ने कहा- वह घर पर पाठ करती थी। जब भी उसको समय मिलता था, हम गुरुद्वारे जाते, सेवा करके आते थे। उसका ब्रेनवाश कर दिया गया। मतलब कि पूरी तरह से बदल दिया उसको। वह अपना किरदार ही भूल गई। मेरी फैमिली गुरसिख है। पति का परिवार अमृतधारी है। बेटी सिमरन भी सिक्खी को मानती थी लेकिन फिर वह पूरी तरह से बदल गई। 5. समझाया तो पुलिस को हमारी ही शिकायत कर दी, फिर छोड़कर चली गई-मां ने कहा- जब हमने उसे समझाने की कोशिश की तो उसने लंदन पुलिस को शिकायत कर दी। उसने झूठ कहा कि हमने उसको मारा-पीटा। जबकि हमने कभी भी उस पर हाथ नहीं उठाया। यहां तक कि हमने उससे ऊंची आवाज में बात करना भी बंद कर दिया था। हमें लगता था कि हम प्यार से उसको समझा लें, घर वापस ले आएं, हर वह चीजें करने लगे, जिससे वह खुश रहती थी। लेकिन मुझे नहीं पता कि उसका इतना माइंडवॉश कर दिया उन्होंने कि हमारी मेरी पूरी फैमिली पर आरोप लगाकर वह चली गई। पहले भी एक युवती ने ऑनसक्रीन किए थे खुलासे- बता दें, 6 महीने पहले इंग्लैंड में रहने वाले पंजाबी नवदीप सिंह ने एक युवती का वीडियो पोस्ट किया है, जिसमें युवती ने ऐसे ही कुछ दावे किए थे। उसने बताया था कि ब्रिटेन में कौर-टू-खान मूवमेंट चल रहा है। सिख लड़कियों को फंसाकर उन्हें मुसलमान बनाया जा रहा है। इसके लिए यूके में पाकिस्तानी ग्रूमिंग गैंग सक्रिय है। युवती ने वीडियो में दावा किया था कि यूके में ग्रूमिंग गैंग को कौर (सिख लड़की) से खान (मुस्लिम) बनाने पर 10 हजार पाउंड दिए जा रहे हैं।

कुवैत में तमिलनाडु की महिला ने प्रताड़ना का आरोप लगाया,बोला- 50 दिन से ठीक से खाना नहीं खाया, 2 महीने की सैलरी भी नहीं मिली

कुवैत। उन्होंने बताया कि वनिता परिवार की आर्थिक मदद करने के

लिए विदेश गई थी, लेकिन कुवैत पहुंचने के बाद उसके साथ कथित तौर पर खराब व्यवहार किया जाने लगा। परिवार ने जिला प्रशासन से वनिता को सुरक्षित भारत वापस लाने के लिए जल्द कदम उठाने की अपील की है। शिकायत मिलने के बाद प्रशासन ने शुरू की कार्रवाई-कल्लाकुरिची की पुलिस अधीक्षक ने बताया कि वनिता के परिवार की शिकायत मिल गई है। प्रशासन मामले की जानकारी जुटा रहा है और महिला की सुरक्षित वापसी के लिए जरूरी कार्रवाई की जा रही है। हालांकि, वनिता और उसके परिवार की ओर से लगाए गए प्रताड़ना, सैलरी नहीं मिलने और पर्याप्त खाना नहीं दिए जाने के आरोपों की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हुई है। कुवैत में करीब 10.60 लाख भारतीय-कुवैत में बड़ी संख्या में भारतीय रहते और काम करते हैं। विदेश मंत्रालय के मार्च 2026 तक के आंकड़ों के मुताबिक, वहां करीब 10.60 लाख भारतीय नागरिक रह रहे हैं। इनमें कुवैत में काम करने वाले भारतीयों के अलावा अन्य भारतीय नागरिक भी शामिल हैं। 2024 में कुवैत में भारतीय नागरिकों की संख्या करीब 10.08 लाख थी। यानी दो साल में वहां रहने वाले भारतीयों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। ऐसे मामलों में विदेश में फंसे भारतीयों की सुरक्षित वापसी के लिए परिवार, स्थानीय प्रशासन और भारतीय मिशन के बीच तालमेल अहम हो जाता है। वनिता के मामले में भी परिवार ने प्रशासन से जल्द मदद की अपील की है।

हिमालय के ग्लेशियर सिर्फ बढ़ते तापमान से नहीं पिघल रहे, बर्फ पर जमी कालिख सूरज की गर्मी भी सोख रही, नेपाल जैसी तबाही का खतरा बढ़ा

काठमांडू। हिमालय के ग्लेशियरों पर अब सिर्फ बढ़ते तापमान का खतरा नहीं है। हवा में मौजूद कालिख और धूल भी बर्फ के पिघलने की रफ्तार बढ़ा

रही है। गाड़ियों, कोयला बिजलीघरों, फैक्ट्रियों, ईंट भट्ठों, घरों के चूल्हों और जंगलों व खेतों में लगने वाली आग से निकलने वाले कण हवा के साथ ऊंचे पहाड़ों तक पहुंचते हैं और ग्लेशियरों की सफेद सतह पर जम जाते हैं। बर्फ पर जमी कालिख सूरज की गर्मी ज्यादा सोखती है। इससे बर्फ जल्दी पिघलने लगती है। इससे ग्लेशियरों के पिघलने की रफ्तार बढ़ सकती है। वैज्ञानिकों की चिंता इसलिए बढ़ रही है क्योंकि ग्लोबल वार्मिंग के साथ प्रदूषण का यह असर ग्लेशियरों को कमजोर और अस्थिर कर सकता है। नेपाल इसका चिंताजनक उदाहरण है। यहां हाल में ग्लेशियर टूटने के बाद अचानक बाढ़ आई और भारी नुकसान हुआ। इस घटना की सटीक वजह अभी स्पष्ट नहीं है, लेकिन वैज्ञानिकों का कहना है कि बढ़ता तापमान और ग्लेशियरों पर जमा प्रदूषण ऐसे हादसों का जोखिम बढ़ा सकते हैं। सफेद बर्फ पर कालिख पड़ते ही पिघलना क्यों बढ़ जाता है? साफ बर्फ सूरज की करीब 90फीसदी रोशनी वापस अंतरिक्ष में भेज देती है। इसलिए वह सूरज की गर्मी का बड़ा हिस्सा सोखने से बच जाती है। जब बर्फ पर कालिख यानी ब्लैक कार्बन जमती है तो उसकी सफेदी कम हो जाती है। सतह सूरज की ज्यादा ऊर्जा सोखने लगती है और तेजी से गर्म होती है। इससे बर्फ के पिघलने की रफ्तार भी बढ़ जाती है। एक मॉडलिंग स्टडी के मुताबिक, 2007 से 2016 के बीच हिमालय में ग्लेशियरों के कुल बर्फ नुकसान में दक्षिण एशिया से आया ब्लैक कार्बन एक-तिहाई तक जिम्मेदार हो सकता है। यानी ग्लेशियरों पर असर सिर्फ बढ़ते तापमान का नहीं है। बर्फ पर जम रही कालिख भी उसके गर्म होने और पिघलने में भूमिका निभा रही है। पाकिस्तान से उठी कालिख भी हिमालय तक पहुंच रही:-सैटेलाइट डेटा के अध्ययन से पता चला है कि पाकिस्तान के औद्योगिक मैदानी इलाकों से निकलने वाला ब्लैक कार्बन और खनिज धूल हवा के साथ ऊंचे हिमालयी ग्लेशियरों तक पहुंच सकता है। ये महीन कण ग्लेशियर की सतह पर जमते हैं और बर्फ को गहरा कर देते हैं। इससे सूरज की ज्यादा ऊर्जा सोखी जाती है और पिघलने की प्रक्रिया तेज हो सकती है। तेजी से पिघलने वाला पानी ग्लेशियर की दरारों के रास्ते अंदर भी जा सकता है। इससे बर्फ के भीतर पानी के रास्ते बन सकते हैं और ग्लेशियर की स्थिरता प्रभावित हो सकती है। अगर कमजोर ग्लेशियर का बड़ा हिस्सा अचानक टूटकर नीचे आता है तो फ्लैश फ्लड यानी अचानक तेज बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है। प्रदूषण सिर्फ बर्फ को काला नहीं करता:-ब्लैक कार्बन का असर ग्लेशियर की सतह तक सीमित नहीं है। हवा में मौजूद कालिख सूरज की गर्मी सोखकर पहाड़ों के ऊपर के वातावरण को गर्म कर सकती है और बादलों के बनने के तरीके को भी प्रभावित कर सकती है। इससे कुछ इलाकों में बर्फबारी कम होने की स्थिति बन सकती है। ऐसे में ग्लेशियर पर दोहरा दबाव पड़ता है। एक तरफ पुरानी बर्फ तेजी से पिघलती है और दूसरी तरफ उसकी भरपाई के लिए नई बर्फ कम मिल सकती है। कालिख के बड़े स्रोत कौन से हैं? दक्षिण एशिया में ब्लैक कार्बन के प्रमुख स्रोतों में पेट्रोल-डीजल वाहन, कोयला आधारित बिजलीघर और उद्योग, ईंट भट्ठे, लकड़ी और ठोस ईंधन से चलने वाले पारंपरिक चूल्हे, जंगलों की आग और फसल जलाना शामिल हैं। इनसे निकले महीन कण हवाओं के साथ लंबी दूरी तय कर सकते हैं। यानी ग्लेशियर से हजारों किलोमीटर दूर पैदा हुआ प्रदूषण भी हिमालय की बर्फ तक पहुंच सकता है। अच्छी खबर: कालिख कम करने का असर जल्दी दिखता है:-ब्लैक कार्बन के मामले में राहत की एक वजह भी है। कार्बन डाइऑक्साइड के मुकाबले यह वातावरण में बहुत कम समय तक रहता है। आमतौर पर कुछ दिनों से कुछ हफ्तों तक। इसलिए इसके उत्सर्जन में कमी लाने पर असर जल्दी दिखाई दे सकता है। इसका एक उदाहरण 2020 का कोविड लॉकडाउन है। 2023 में प्रकाशित एक स्टडी में वैज्ञानिकों ने उस दौरान हुए प्रदूषण में कमी का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि प्रदूषण घटने से हिमालय की बर्फ ज्यादा चमकीली हुई और उसके पिघलने की दर 40फीसदी तक कम हो गई।

इससे पता चलता है कि वाहनों, उद्योगों और दूसरे स्रोतों से निकलने वाली कालिख को कम करके ग्लेशियरों पर पड़ने वाला दबाव कुछ हद तक जल्दी घटाया जा सकता है।

हिमालय का संकट सिर्फ पहाड़ों तक सीमित नहीं- हिमालय के ग्लेशियर भारत समेत पूरे दक्षिण एशिया के लिए बेहद अहम हैं। इनसे निकलने वाला पानी कई बड़ी नदियों के प्रवाह में योगदान देता है। ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने से कुछ समय के लिए नदियों में पानी बढ़ सकता है, लेकिन लंबे समय तक यही रफ्तार बनी रही तो ग्लेशियरों में जमा बर्फ घटती जाएगी।

इससे भविष्य में पानी की उपलब्धता प्रभावित हो सकती है। इसके अलावा ग्लेशियरों के पास बनी झीलों के फटने से ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड यानी ग्लोफ का खतरा भी बढ़ सकता है। ऐसी बाढ़ कुछ ही समय में निचले इलाकों में भारी तबाही ला सकती है।

चीन में पीएचडी छोड़, रिसर्च पेपर की गड़बड़ियां खोजने लगा शख्स,40 वैज्ञानिकों का फर्जीवाड़ा पकड़ा गया, जिनपिंग सरकार ने फंडिंग-पुरस्कार छीने

बीजिंग। चीन में एक पूर्व पीएचडी छात्र गेंग होंगवेई के रिसर्च पेपर में गड़बड़ियां पकड़ने के बाद 40 से ज्यादा रिसर्चर्स पर कार्रवाई हुई है। चीन की प्रमुख रिसर्च फंडिंग संस्था नेशनल नेचुरल साइंस फाउंडेशन ऑफ चाइना (एनएसएफसी) ने 31 मामलों में कार्रवाई की है। इसे संस्था की अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई माना जा रहा है। कार्रवाई की जद में कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के वरिष्ठ प्रोफेसर भी हैं। इनमें 4 ऐसे वैज्ञानिक हैं, जिनके पेपर पर पूर्व पीएचडी छात्र गेंग होंगवेई ने सोशल मीडिया पर सवाल उठाए थे। गेंग को 'स्टूडेंट गेंग' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने 2025 में बायोसाइंस की पीएचडी छोड़ दी थी। इसके बाद वह रिसर्च पेपर में डेटा, तस्वीरों और ग्राफ की गड़बड़ियां खोजकर सोशल मीडिया पर सामने लाने लगे। उनके सवालों के बाद संबंधित संस्थानों ने जांच शुरू की और अब मामला एनएसएफसी की कार्रवाई तक पहुंच गया है। पीएचडी ड्रॉपआउट ने क्या पकड़ा? 1. आंकड़ों में अजीब पैटर्न एक पेपर में एक कॉलम के लगभग सभी आंकड़ों का आखिरी अंक 5 था। दूसरे कॉलम में भी आंकड़े एक तय पैटर्न में थे। एक कॉलम के आंकड़े दूसरे से लगभग हर जगह 0.3 के अंतर पर थे। गेंग ने इसे डेटा की विश्वसनीयता पर सवाल उठाने वाली बात बताया। 2. 196 चूहों के वजन में सटीकता एक रिसर्च में 196 लैब चूहों का वजन दो दशमलव तक दर्ज किया गया था। गेंग ने सवाल उठाया कि चलते-फिरते चूहों का वजन इतनी सटीकता से कैसे दर्ज किया गया। इससे डेटा के साथ छेड़छाड़ की आशंका पैदा हुई। 3. एक ही तस्वीर, अलग-अलग प्रयोग कुछ पेपर में एक जैसी तस्वीरों को अलग-अलग प्रयोगों के नतीजे के तौर पर इस्तेमाल किए जाने पर सवाल उठे। कुछ डेटा सेट भी असामान्य रूप से एक-दूसरे से मिलते थे। नेचर ने भी बताया था कि गेंग ने कई पेपर के आंकड़ों में असामान्यताएं पकड़ी थीं। चार बड़े वैज्ञानिक भी कार्रवाई की जद में- गेंग ने अप्रैल में चीन के चार प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों से जुड़े वैज्ञानिकों के रिसर्च पर सवाल उठाए थे। इनमें टोंगजी यूनिवर्सिटी के वांग पिंग, नानकाई यूनिवर्सिटी के चेन चुआन, शंघाई यूनिवर्सिटी के सु जियाचन और सन यात-सेन यूनिवर्सिटी के कुआंग डोंगमिंग शामिल हैं।

यूएन ने दुनिया का नक्शा बदला, अमेरिका ने विरोध किया, नए मैप में अफ्रीका बड़ा, यूरोप-यूएस छोटे,भारत पर इसका क्या असर?

न्यूयॉर्क। अमेरिकी प्रतिनिधि यारिना फेरेन्सेविच ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र को दुनिया की असली समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए,

न कि 16वीं सदी के नक्शे को बदलने जैसी बहस पर। उन्होंने इसे एक वैचारिक एजेंडा बताया और कहा कि ऐसी बहसों की वजह से संयुक्त राष्ट्र अपनी विश्वसनीयता खो रहा है। वहीं, अफ्रीकी संघ ने इस फैसले का स्वागत किया। उसने इसे दुनिया का नक्शा ज्यादा सटीक और बराबरी वाला बनाने की दिशा में ऐतिहासिक कदम बताया। मौजूदा नक्शे में आखिर दिक्कत क्या थी? दुनिया में सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाले नक्शों में से एक मर्केटर नक्शा है। इसे यूरोपियन मैप मेकर जेरार्डस मर्केटर ने 1569 में बनाया था। इस नक्शे की एक बड़ी खासियत है कि यह समुद्र में रास्ता तय करने और जहाजों के नेविगेशन के लिए काफी उपयोगी है। लेकिन पूरी गोल धरती को सपाट नक्शे पर दिखाने की वजह से इसमें देशों और महाद्वीपों का आकार असल से अलग नजर आने लगता है। जैसे-जैसे कोई इलाका भूमध्य रेखा से दूर जाता है, वह नक्शे पर जरूरत से ज्यादा बड़ा दिखाई देने लगता है। यही वजह है कि उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों के कई इलाके असल से काफी बड़े नजर आते हैं। ग्रीनलैंड इसका सबसे मशहूर उदाहरण है। मर्केटर नक्शे में ग्रीनलैंड दक्षिण अमेरिका के लगभग बराबर दिखाई देता है। लेकिन असल में दोनों के आकार में बहुत बड़ा अंतर है। ग्रीनलैंड का क्षेत्रफल करीब 22 लाख वर्ग किलोमीटर है। यह लगभग डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो के बराबर है। वहीं अफ्रीका का क्षेत्रफल करीब 3 करोड़ वर्ग किलोमीटर है। यानी अफ्रीका ग्रीनलैंड से करीब 14 गुना बड़ा है। फिर भी मर्केटर नक्शे को देखकर दोनों का आकार लगभग एक जैसा लग सकता है। यही वह फर्क है जिसे अब कम करने की कोशिश हो रही है। अफ्रीकी देश नक्शा बदलने की मांग क्यों कर रहे थे? अफ्रीकी देशों का कहना है कि बात सिर्फ नक्शे पर किसी देश या महाद्वीप के छोटा-बड़ा दिखने की नहीं है। दुनिया का नक्शा यह भी तय करता है कि हम अलग-अलग हिस्सों को किस नजर से देखते हैं। यूएन के सामने रखे गए प्रस्ताव में कहा गया था कि मर्केटर नक्शे में अफ्रीका का वास्तविक आकार काफी छोटा नजर आता है। लंबे समय तक ऐसी तस्वीर देखने से लोगों के मन में अफ्रीका के आकार और वैश्विक महत्व को लेकर गलत धारणा बन सकती है। प्रस्ताव में लैटिन अमेरिका और दक्षिण एशिया का भी जिक्र है। इसमें कहा गया है कि नक्शे में इन क्षेत्रों का छोटा नजर आना उनकी विकास जरूरतों, बुनियादी ढांचे और आर्थिक क्षमता को भी कम करके आंकने की धारणा बना सकता है। अफ्रीकी देश टोगो के विदेश मंत्री रॉबर्ट डुसे ने कहा कि नक्शे सिर्फ भूगोल समझने का साधन नहीं हैं, बल्कि वे शिक्षा और लोगों की सोच को भी प्रभावित करते हैं। न्यूज़ीलैंड भी पुराने नक्शे से परेशान था-अफ्रीका अकेला ऐसा इलाका नहीं है जिसे पुराने नक्शे से शिकायत रही है। न्यूजीलैंड भी लंबे समय से दुनिया के नक्शे पर अपनी जगह को लेकर मजाक करता रहा है। 2018 में न्यूज़ीलैंड के एक पर्यटन विज्ञापन में तत्कालीन प्रधानमंत्री जैसिंडा आर्डर्न भी नजर आई थीं। इसमें मजाकिया अंदाज में दिखाया गया था कि दुनिया के कई नक्शों में न्यूजीलैंड जैसे गायब ही हो जाता है। दरअसल, मर्केटर नक्शे में न्यूजीलैंड नीचे दाईं ओर एकदम किनारे पर दिखाई देता है। कई बार नक्शे में वह पूरी तरह छूट भी जाता है। इक्वल अर्थ नक्शे के कुछ रूपों में ओशिनिया को केंद्र के करीब लाया जाता है। इससे ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जैसे देशों की स्थिति भी ज्यादा प्रमुख नजर आती है। क्या यूएन का फैसला सभी पर लागू होगा? नहीं। संयुक्त राष्ट्र महासभा का यह प्रस्ताव कानूनी रूप से बाध्य नहीं है। यानी यह देशों, स्कूलों, किताबों के प्रकाशकों या टेक कंपनियों को मर्केटर नक्शा हटाने के लिए मजबूर नहीं करता। लेकिन इससे नक्शे बनाने और पढ़ाने में ऐसे तरीकों को बढ़ावा मिल सकता है, जिनमें देशों और महाद्वीपों का वास्तविक क्षेत्रफल ज्यादा सही दिखाई दे।मर्केटर नक्शे को पूरी तरह खत्म करने की भी बात नहीं कही गई है। समुद्री और हवाई नेविगेशन में इसका इस्तेमाल जारी रह सकता है, क्योंकि इसमें दिशाओं को सही रखने की खासियत है।

हिमालय के ग्लेशियर सिर्फ बढ़ते तापमान से नहीं पिघल रहे, बर्फ पर जमी कालिख सूरज की गर्मी भी सोख रही, नेपाल जैसी तबाही का खतरा बढ़ा

काठमांडू। हिमालय के ग्लेशियरों पर अब सिर्फ बढ़ते तापमान का खतरा नहीं है। हवा में मौजूद कालिख और धूल भी बर्फ के पिघलने की रफ्तार बढ़ा रही है। गाड़ियों, कोयला जिम्मेदार हो सकता है। यानी ग्लेशियरों पर असर सिर्फ बढ़ते तापमान का नहीं है। बर्फ पर जम रही कालिख भी उसके गर्म होने और पिघलने में भूमिका निभा रही है। पाकिस्तान से उठी कालिख भी जलाना शामिल हैं। इनसे निकले महीन कण हवाओं के साथ लंबी दूरी तय कर सकते हैं। यानी ग्लेशियर से हजारों किलोमीटर दूर पैदा हुआ प्रदूषण भी हिमालय की बर्फ तक पहुंच सकता है।

बिजलीघरों, फैक्ट्रियों, ईंट भट्ठों, घरों के चूल्हों और जंगलों व खेतों में लगने वाली आग से निकलने वाले कण हवा के साथ ऊंचे पहाड़ों तक पहुंचते हैं और ग्लेशियरों की सफेद सतह पर जम जाते हैं। बर्फ पर जमी कालिख सूरज की गर्मी ज्यादा सोखती है। इससे बर्फ जल्दी पिघलने लगती है। इससे ग्लेशियरों के पिघलने की रफ्तार बढ़ सकती है। वैज्ञानिकों की चिंता इसलिए बढ़ रही है क्योंकि ग्लोबल वार्मिंग के साथ प्रदूषण का यह असर ग्लेशियरों को कमजोर और अस्थिर कर सकता है। नेपाल इसका चिंताजनक उदाहरण है। यहां हाल में ग्लेशियर टूटने के बाद अचानक बाढ़ आई और भारी नुकसान हुआ। इस घटना की सटीक वजह अभी स्पष्ट नहीं है, लेकिन वैज्ञानिकों का कहना है कि बढ़ता तापमान और ग्लेशियरों पर जमा प्रदूषण ऐसे हादसों का जोखिम बढ़ा सकते हैं। सफेद बर्फ पर कालिख पड़ते ही पिघलना क्यों बढ़ जाता है? साफ बर्फ सूरज की करीब 90फीसदी रोशनी वापस अंतरिक्ष में भेज देती है। इसलिए वह सूरज की गर्मी का बड़ा हिस्सा सोखने से बच जाती है। जब बर्फ पर कालिख यानी ब्लैक कार्बन जमती है तो उसकी सफेदी कम हो जाती है। सतह सूरज की ज्यादा ऊर्जा सोखने लगती है और तेजी से गर्म होती है। इससे बर्फ के पिघलने की रफ्तार भी बढ़ जाती है। एक मॉडलिंग स्टडी के मुताबिक, 2007 से 2016 के बीच हिमालय में ग्लेशियरों के कुल बर्फ नुकसान में दक्षिण एशिया से आया ब्लैक कार्बन एक-तिहाई तक हिमालय तक पहुंच रही:-सैटेलाइट डेटा के अध्ययन से पता चला है कि पाकिस्तान के औद्योगिक मैदानी इलाकों से निकलने वाला ब्लैक कार्बन और खनिज धूल हवा के साथ ऊंचे हिमालयी ग्लेशियरों तक पहुंच सकता है। ये महीन कण ग्लेशियर की सतह पर जमते हैं और बर्फ को गहरा कर देते हैं। इससे सूरज की ज्यादा ऊर्जा सोखी जाती है और पिघलने की प्रक्रिया तेज हो सकती है। तेजी से पिघलने वाला पानी ग्लेशियर की दरारों के रास्ते अंदर भी जा सकता है। इससे बर्फ के भीतर पानी के रास्ते बन सकते हैं और ग्लेशियर की स्थिरता प्रभावित हो सकती है। अगर कमजोर ग्लेशियर का बड़ा हिस्सा अचानक टूटकर नीचे आता है तो फ्लैश फ्लड यानी अचानक तेज बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है। प्रदूषण सिर्फ बर्फ को काला नहीं करता:-ब्लैक कार्बन का असर ग्लेशियर की सतह तक सीमित नहीं है। हवा में मौजूद कालिख सूरज की गर्मी सोखकर पहाड़ों के ऊपर के वातावरण को गर्म कर सकती है और बादलों के बनने के तरीके को भी प्रभावित कर सकती है। इससे कुछ इलाकों में बर्फबारी कम होने की स्थिति बन सकती है। ऐसे में ग्लेशियर पर दोहरा दबाव पड़ता है। एक तरफ पुरानी बर्फ तेजी से पिघलती है और दूसरी तरफ उसकी भरपाई के लिए नई बर्फ कम मिल सकती है। कालिख के बड़े स्रोत कौन से हैं? दक्षिण एशिया में ब्लैक कार्बन के प्रमुख स्रोतों में पेट्रोल-डीजल वाहन, कोयला आधारित बिजलीघर और उद्योग, ईंट भट्ठे, लकड़ी और ठोस ईंधन से चलने वाले पारंपरिक चूल्हे, जंगलों की आग और फसल अच्छी खबर: कालिख कम करने का असर जल्दी दिखता है:-ब्लैक कार्बन के मामले में राहत की एक वजह भी है। कार्बन डाइऑक्साइड के मुकाबले यह वातावरण में बहुत कम समय तक रहता है। आमतौर पर कुछ दिनों से कुछ हफ्तों तक। इसलिए इसके उत्सर्जन में कमी लाने पर असर जल्दी दिखाई दे सकता है। इसका एक उदाहरण 2020 का कोविड लॉकडाउन है। 2023 में प्रकाशित एक स्टडी में वैज्ञानिकों ने उस दौरान हुए प्रदूषण में कमी का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि प्रदूषण घटने से हिमालय की बर्फ ज्यादा चमकीली हुई और उसके पिघलने की दर 40फीसदी तक कम हो गई। इससे पता चलता है कि वाहनों, उद्योगों और दूसरे स्रोतों से निकलने वाली कालिख को कम करके ग्लेशियरों पर पड़ने वाला दबाव कुछ हद तक जल्दी घटाया जा सकता है। हिमालय का संकट सिर्फ पहाड़ों तक सीमित नहीं- हिमालय के ग्लेशियर भारत समेत पूरे दक्षिण एशिया के लिए बेहद अहम हैं। इनसे निकलने वाला पानी कई बड़ी नदियों के प्रवाह में योगदान देता है। ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने से कुछ समय के लिए नदियों में पानी बढ़ सकता है, लेकिन लंबे समय तक यही रफ्तार बनी रही तो ग्लेशियरों में जमा बर्फ घटती जाएगी। इससे भविष्य में पानी की उपलब्धता प्रभावित हो सकती है। इसके अलावा ग्लेशियरों के पास बनी झीलों के फटने से ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड यानी ग्लोफ का खतरा भी बढ़ सकता है। ऐसी बाढ़ कुछ ही समय में निचले इलाकों में भारी तबाही ला सकती है।

सफाईकर्मी का बेटा बना काशी क्षेत्रीय महामंत्री, अजीत रावत को क्षेत्रीय महामंत्री बनाए जाने पर भाजपा नेतृत्व का जताया आभार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित मोर्चा के क्षेत्रीय अध्यक्ष, जिला उपाध्यक्ष एवं सदर ब्लॉक संकल्प है। संगठन की अपेक्षाओं पर खरा उतरना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता रहेगी और वे सदैव संगठन के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित

जनता पार्टी के शीर्ष एवं प्रदेश नेतृत्व के प्रति कृतज्ञ रहेंगे। उन्होंने कहा कि उन्हें सौंपे गए इस नए दायित्व का निर्वहन पूरी निष्ठा, ईमानदारी और समर्पण के साथ करते हुए संगठन को और अधिक मजबूत बनाने का प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा कि संगठन का यह विश्वास उनके लिए केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि जनसेवा और संगठन सेवा का जी पूर्व जिला उपाध्यक्ष रमेश पटेल जीसंजीव त्रिपाठी जिला पंचायत सदस्य मोहन कुशवाहा ब्रिजेश श्रीवास्तव शंभू नारायण सिंह अनिल सिंह नगर अध्यक्ष विनय श्रीवास्तव मीडिया प्रभारी रजनीश रघुवंशी सह मीडिया प्रभारी अमन मौर्या धीरेंद्र पांडेय अभिषेक गुप्ता अनुपम तिवारी आलोक रावत कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

नाबालिग से दुष्कर्म के आरोप पर थाने में पंचायत,परिजनों ने सुलह कराने का आरोप लगाया

सोनभद्र। बभनी थाना क्षेत्र के एक गांव में एक नाबालिक लड़की से दुष्कर्म का आरोप लगा है। इस मामले को लेकर पिछले दो दिन से लोग सुलह कराने में लगे हैं। नाबालिक लड़की की मां ने बताया कि उसके पिता चेन्नई में मजदूरी करते हैं। मां का आरोप है कि लड़की के मिलने के बाद से ही पुलिस और गांव के लोग सुलह का दबाव बना रहे हैं। नाबालिक लड़की की मां के अनुसार, लड़की गर्भवती होने की बात भी कह रही है। इस संवेदनशील मामले में पुलिस की कार्रवाई पर भी सवाल उठ रहे हैं। लोगों का कहना है कि नाबालिक को बहला फुसलाकर भगाने और दुष्कर्म जैसे गंभीर मामले में पुलिस

स्थानीय थाने में पंचायत चल रही है। जानकारी के अनुसार, थाना क्षेत्र की एक नाबालिक लड़की 3 सितंबर गुरुवार रात पड़ोसी गांव के एक पिकअप चालक के साथ घर से भाग गई थी। परिवार वालों ने उसी दिन थाने में लड़की के लापता होने की जानकारी दी। पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए दोनों को उसी दिन ढूंढ निकाला। पिछले दो दिनों से थाना परिसर में दोनों गांवों के को तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए थी। लेकिन पुलिस पीड़िता को ही धमकाकर सुलह कराने की कोशिश में लगी हुई है। पिछले दो दिनों से नाबालिक से दुष्कर्म के मामले में हो रही पंचायत से लोगों में नाराजगी है।लोगों ने पुलिस अधीक्षक का ध्यान दिलाते हुए कार्रवाई की मांग की है। इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक अरविंद कुमार सरोज ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

ओबरा में हैवी ब्लास्टिंग से घरों में दरारें पड़ने पर पर्यावरण संरक्षण मिशन ने रोक लगाने की मांग की- सौंपा पत्र

सोनभद्र। ओबरा तहसील से सटे खनन क्षेत्र में हो रही हैवी ब्लास्टिंग पर तत्काल रोक लगाने की मांग की रोजाना लोगों का आना-जाना रहता है। ऐसे में हैवी ब्लास्टिंग से किसी भी समय दुर्घटना हो सकती है।

गई है। विश्व पर्यावरण संरक्षण मिशन ने तहसील दिवस में इस संबंध में एक पत्र सौंपा है। संगठन का कहना है कि ब्लास्टिंग से आसपास के मकानों में कंपन हो रहा है और दरारें आ रही हैं, जिससे लोगों में डर का माहौल है। उन्होंने मामले की उच्चस्तरीय जांच की मांग की है। संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.एन. चौबे ने अपने पत्र में बताया है कि तहसील परिसर से सटे खनन क्षेत्र में हैवी ब्लास्टिंग के कारण आसपास रहने वाले लोगों को परेशानी हो रही है। पत्र के अनुसार, ब्लास्टिंग के दौरान होने वाले कंपन से तहसील भवन के शीशे और आसपास के मकानों की छतों में दरारें पड़ रही हैं। इसके अलावा, खनन क्षेत्र के आसपास रहने वाले लोगों के बीच किसी हादसे की आशंका को लेकर हमेशा डर बना रहता है। पत्र में यह भी कहा गया है कि तहसील परिसर और आसपास के इलाकों में संगठन ने जनहित और मानव जीवन की सुरक्षा का हवाला देते हुए अधिकारियों से मामले को गंभीरता से देखने की अपील की है। विश्व पर्यावरण संरक्षण मिशन ने मांग की है कि पूरे मामले की उच्चस्तरीय जांच कराई जाए। साथ ही, जांच पूरी होने तक खनन क्षेत्र में होने वाली हैवी ब्लास्टिंग पर रोक लगाई जाए। संगठन का कहना है कि लोगों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए ब्लास्टिंग से होने वाले प्रभावों की जांच जरूरी है। तहसील दिवस के दौरान संगठन के प्रतिनिधियों ने अधिकारियों के सामने अपनी शिकायत रखी और कार्रवाई की मांग की।

संगठन ने साफ किया है कि उनका मकसद क्षेत्र में रहने वाले लोगों की सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित करना है। अब देखना होगा कि प्रशासन इस मामले में क्या कदम उठाता है।

खतरे के निशान से 44 सेंटीमीटर ऊपर सोन नदी, तटवर्ती बस्तियों में पहुंचे डीएम-एसपी,चोपन में नदी किनारे बस्तियों का किया औचक निरीक्षण, सुरक्षा एवं सतर्कता व्यवस्थाओं का लिया जायजा

आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। लगातार हो रही भारी वर्षा से सोन नदी का जलस्तर तेजी से बढ़ते हुए खतरे के निशान से क्षेत्र में न जाए। साथ ही आवश्यकता की स्थिति में राहत एवं बचाव से संबंधित सभी व्यवस्थाएं तत्पर रखे जाने के निर्देश

44 सेंटीमीटर ऊपर पहुंच गया है। बढ़ते जलस्तर को देखते हुए जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ एवं पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने चोपन में सोन नदी के किनारे स्थित बस्तियों का औचक निरीक्षण कर जमीनी स्थिति एवं सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने नदी के बढ़ते जलस्तर, तटवर्ती बस्तियों की स्थिति एवं संभावित संवेदनशील स्थानों की जानकारी ली। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि नदी किनारे एवं निचले क्षेत्रों में सतत निगरानी रखी जाए तथा नागरिकों को समय-समय पर बढ़ते जलस्तर के प्रति सचेत किया जाए। जिलाधिकारी ने नदी तट के संवेदनशील एवं आवागमन वाले स्थानों पर बैरिकेडिंग कराने और सांकेतिक बोर्ड लगाने के निर्देश दिए, ताकि कोई भी व्यक्ति नदी के किनारे अथवा तेज बहाव वाले दिए। जिलाधिकारी चर्चित गौड़ ने जनपदवासियों से अपील करते हुए कहा कि सोन नदी का जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर है, इसलिए विशेष सतर्कता बरतें। नदी तट, तेज बहाव एवं जलप्रवाह वाले स्थानों पर जाने से बचें तथा बच्चों एवं पशुओं को भी इन क्षेत्रों से दूर रखें। प्रशासन द्वारा जारी सूचनाओं एवं दिशा-निर्देशों का अनिवार्य रूप से पालन करें। जिला प्रशासन द्वारा सोन नदी के जलस्तर एवं तटवर्ती क्षेत्रों की स्थिति पर पूरी सतर्कता के साथ निरंतर निगरानी रखी जा रही है। इस मौके पर अपर जिलाधिकारी वित्त राजस्व श्री वागीश कुमार शुक्ला, उप जिलाधिकारी ओबरा रवि कुमार पासवान, जिला पंचायत राज अधिकारी नमिता शरण, सीओ सदर रणधीर मिश्रा, ईओ नगर पंचायत चोपन सहित संबंधित अधिकारियों उपस्थित रहे।

थाना कोन पुलिस द्वारा गैंगस्टर एक्ट में वांछित अभियुक्त को किया गया गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अभिषेक वर्मा द्वारा अपराध एवं गिरफ्तार अभियुक्त को आवश्यक विधिक कार्यवाही पूर्ण कर माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया

अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में, अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) अनिल कुमार एवं क्षेत्राधिकारी ओबरा प्रभात राय के कुशल पर्यवेक्षण में थाना कोन पुलिस द्वारा गैंगस्टर एक्ट से संबंधित वांछित अभियुक्त की गिरफ्तारी हेतु प्रभावी कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में आज दिनांक 03.09.2026 को मुखबिर खास की सूचना पर थाना कोन पुलिस द्वारा मु0अ0सं0 143/2026, धारा 3(1) उ0प्र0 गिरोहबन्द एवं समाज विरोधी क्रियाकलाप निवारण अधिनियम, थाना कोन, जनपद सोनभद्र से संबंधित वांछित अभियुक्त धर्मेन्द्र यादव पुत्र इन्द्रजीत यादव, निवासी परती, थाना केतार, जनपद गढ़वा, झारखण्ड, उम्र करीब 27 वर्ष को थाना कोन क्षेत्रान्तर्गत चांचीकला पुलिया से नियमानुसार गिरफ्तार किया गया। गया। गिरफ्तार अभियुक्त का विवरण- धर्मेन्द्र यादव पुत्र इन्द्रजीत यादव, निवासी परती, थाना केतार, जनपद गढ़वा, झारखण्ड, उम्र करीब 27 वर्ष। आपराधिक इतिहास-1. मु0अ0सं0 23/2026, धारा 3/5ए/5बी/8 गोवध अधिनियम, थाना कोन, जनपद सोनभद्र। 2. मु0अ0सं0 143/2026, धारा 3(1) गैंगस्टर एक्ट, थाना कोन, जनपद सोनभद्र। गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीमः- 1. प्र0नि0 अखिलेश कुमार मिश्र, प्रभारी निरीक्षक थाना कोन, जनपद सोनभद्र। 2. उ0नि0 वीरेन्द्र वर्मा, चौकी प्रभारी बागेसोती, थाना कोन, जनपद सोनभद्र। 3. उ0नि0 राकेश राय, चौकी प्रभारी चांचीकला, थाना कोन, जनपद सोनभद्र।4. हे0का0 राजेश कुमार यादव, थाना कोन, जनपद सोनभद्र।

किसानों की सुविधा के लिए बढ़ेंगे धान क्रय केन्द्र, जिलाधिकारी ने दिए निर्देश

इस वर्ष 1.70 लाख मीट्रिक टन धान खरीद का लक्ष्य निर्धारित करने की कार्रवाई के निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिलाधिकारी चर्चित गौड़ की अध्यक्षता में जनसुनवाई कक्ष में खरीफ विपणन वर्ष 2026-27 में मूल्य समर्थन योजना के अन्तर्गत धान खरीद की तैयारियों की समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने किसानों की सुविधा एवं धान खरीद की सुचारू व्यवस्था के लिए क्रय केन्द्रों की संख्या बढ़ाने के निर्देश दिए। उन्होंने खाद्य विभाग के अनुमोदित 38 क्रय केन्द्रों को बढ़ाकर 50 करने तथा मण्डी समिति एवं भारतीय खाद्य निगम के 02-02 क्रय केन्द्रों के अतिरिक्त

02-02 केन्द्र बढ़ाने के निर्देश दिए। साथ ही जिला पीसीएफ को अपने 30 धान क्रय केन्द्रों का प्रस्ताव तत्काल उपलब्ध कराने को कहा। जिलाधिकारी ने गतवर्ष की वास्तविक धान खरीद 1,25,837.34 मीट्रिक टन तथा जनपद में धान की उत्पादकता को देखते हुए इस वर्ष खरीद लक्ष्य में वृद्धि के निर्देश दिए। उन्होंने जिला खाद्य विपणन अधिकारी एवं उप निदेशक (कृषि) को आवश्यक कार्रवाई करते हुए 1,70,000 मीट्रिक टन धान खरीद का लक्ष्य निर्धारित किए जाने हेतु कार्यवाही सुनिश्चित करने को कहा। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि धान खरीद से संबंधित सभी तैयारियां समय से पूर्ण कर ली जाएं तथा किसानों को अपनी उपज बेचने में किसी प्रकार की कठिनाई न होने पाए।बैठक में अपर जिलाधिकारी वि0/रा0) श्री वागीश कुमार शुक्ला, उप निदेशक (कृषि), सहायक आयुक्त एवं सहायक निबंधक सहकारिता, मण्डी सचिव रॉबर्ट्सगंज, जिला खाद्य विपणन अधिकारी सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

एक निजी अस्पताल में इंजेक्शन लगाते ही 2 साल की मासूम की मौत, परिजनों का फूटा गुस्सा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। अनट्रेंड कर्मी की

लापरवाही बनी कालः परिजनों का आरोप–अस्पताल के अनट्रेंड स्वास्थ्य कर्मी द्वारा इंजेक्शन लगाते ही मासूम शगुन की हुई मौत। एक निजी अस्पताल पर लगे गंभीर आरोपः चुर्क वार्ड नंबर 1 निवासी सुरेंद्र कुमार की 2 वर्षीय पुत्री शगुन को मौसमी बुखार के इलाज के लिए कराया गया था भर्ती।देर रात अस्पताल में मचा कोहरामः 2 से 3 बजे के बीच इलाज के दौरान मासूम ने तोड़ा दम, परिजनों का रो-रोकर हुआ बुरा हाल।अस्पताल परिसर में अफरा-तफरी का माहौल,परिजनों ने कठोर कार्रवाई की उठाई मांग।

स्पोर्ट्स

श्रीलंका की कप्तान ने 5 रन देकर 7 विकेट लिए,हैट्रिक भी बनी, एशिया कप में ऐसा करने वाली पहली खिलाड़ी

दुबई। दुबई में खेले जा रहे विमेंस एशिया कप में बुधवार को श्रीलंका की कप्तान चमारी अटापट्टू ने इतिहास रच दिया। उन्होंने दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में इंडोनेशिया के खिलाफ ग्रुप बी के मुकाबले में सिर्फ 5 रन देकर 7 विकेट लिए। अटापट्टू एशिया कप के किसी भी मैच में 7 विकेट लेने वाली पहली गेंदबाज बन गईं। इसमें विमेंस और मेंस, दोनों कैटेगरी के मुकाबले शामिल हैं। 19वें ओवर में हैट्रिक बनाई-चमारी अटापट्टू ने 3.3 ओवर की गेंदबाजी में इंडोनेशिया की बल्लेबाजी को ढेर कर दिया। उन्होंने 19वें ओवर की शुरुआती तीन गेंदों पर तीन विकेट लेकर हैट्रिक भी बनाई। उनकी गेंदबाजी के चलते इंडोनेशिया की पूरी टीम 18.3 ओवर में 49 रन पर सिमट गई। श्रीलंका ने यह मुकाबला 75 रन से जीत लिया। जावेरिया खान का रिकॉर्ड टूटा- इससे पहले एशिया कप मैच में बेस्ट बॉलिंग का रिकॉर्ड पाकिस्तान की जावेरिया खान के नाम था। उन्होंने विमेंस एशिया कप 2008 में बांग्लादेश के खिलाफ 8 रन देकर 6 विकेट लिए थे। अब चमारी अटापट्टू के नाम एशिया कप के एक मैच में 7 विकेट लेने का रिकॉर्ड दर्ज हो गया है। अजंता मेंडिस का रिकॉर्ड भी तोड़ा-अटापट्टू का यह प्रदर्शन सिर्फ एशिया कप तक सीमित नहीं रहा। यह टी-20 इंटरनेशनल में किसी श्रीलंकाई गेंदबाज (मेंस या विमेंस) का बेस्ट बॉलिंग फिगर भी है। अटापट्टू ने अजंता मेंडिस का रिकॉर्ड तोड़ा। मेंडिस ने सितंबर 2012 में जिम्बाब्वे के खिलाफ 8 रन देकर 6 विकेट लिए थे। अटापट्टू टी-20 इंटरनेशनल एशिया कप के किसी मैच में 6 या उससे ज्यादा विकेट लेने वाली पहली गेंदबाज भी हैं। इससे पहले टी-20 इंटरनेशनल एशिया कप के विमेंस एडिशन में पाकिस्तान की तीन और थाईलैंड की एक गेंदबाज 5-5 विकेट ले चुकी थीं। मेंस टी-20 इंटरनेशनल एशिया कप में भुवनेश्वर कुमार 5 विकेट लेने वाले एकमात्र गेंदबाज हैं। 7 विकेट लेने वालीं दुनिया की दूसरी कप्तान बनीं-चमारी अटापट्टू किसी टी-20 इंटरनेशनल मैच में 7 विकेट लेने वाली दुनिया की सिर्फ दूसरी कप्तान बनी हैं। उनसे पहले अर्जेंटीना की एलिसन स्टॉक्स ने यह कारनामा किया था। स्टॉक्स ने 14 अक्टूबर 2022 को पेरू के खिलाफ 3.4 ओवर में 3 रन देकर 7 विकेट हासिल किए थे।

हमारे झगड़ों से परेशान है बेटा वो चुप उदास रहने लगा है, क्या पेरेंट्स की लड़ाई से बच्चे डिप्रेशन में जा सकते हैं

जयपुर। बिलकुल स्वाभाविक सी बात हैं लड़ाई से बच्चे डिप्रेशन में जा सकतें हैं। पति-पत्नी के बीच कभी-कभार मतभेद होना सामान्य बात है। लेकिन अगर घर में रोज झगड़े होने लगें, आवाज ऊंची होने लगे और बच्चा बार-बार इन सबका गवाह बने, तब यह सिर्फ पति-पत्नी के बीच का मामला नहीं रह जाता। इसका असर पूरे परिवार और खासतौर से बच्चे की मेंटल-इमोशनल हेल्थ पर पड़ता है। विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड काउंसलर, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं 37 साल की गृहिणी हूं। मेरे पति प्राइवेट नौकरी करते हैं और अक्सर काम का तनाव घर लेकर आते हैं। पिछले दो साल से हमारे बीच लगभग रोज किसी-न-किसी बात पर बहस, झगड़ा हो जाता है। हमारा 8 साल का बेटा झगड़ा शुरू होते ही अपने कमरे में जाकर दरवाजा बंद कर लेता है। पहले वह बहुत हंसमुख था, लेकिन अब छोटी-छोटी बात पर डर जाता है और स्कूल जाने से भी कतराने लगा है। कभी-कभी कहता है, 'आप लोग फिर लड़ोगे क्या?' मुझे लगता है कि वह तनाव में रहने लगा है। क्या हमारे झगड़े उसकी मेंटल हेल्थ पर लॉन्ग टर्म असर डाल सकते हैं? अब हमें क्या करना चाहिए? बच्चे घर के भावनात्मक माहौल को गहराई से महसूस करते हैं। अगर घर में तनाव, लड़ाई-झगड़े हों तो इसका बच्चे की मेंटल हेल्थ पर गहरा असर पड़ता है। बच्चा स्ट्रेस में रहता है, जिससे पढ़ाई और सेहत, दोनों खराब होते हैं। बच्चे में दिख रहे बदलाव, आपके बेटे के व्यवहार में ये बदलाव दिख रहे हैं, डर जाना, स्कूल से बचना, झगड़ा शुरू होते ही अपने कमरे में बंद हो जाना-बार-बार पूछना कि 'आप लोग फिर लड़ोगे क्या?' ये सारे संकेत बताते हैं कि वह घर के तनाव को महसूस कर रहा है। बच्चे अक्सर अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाते। अपने डर, चिंता और असुरक्षा को वे अपने व्यवहार के जरिए दिखाते हैं। माता-पिता हैं बच्चे का सेफ्टी नेट-चाइल्ड साइकोलॉजी के अनुसार, बच्चे के लिए माता-पिता उसका सबसे सुरक्षित संसार होते हैं। जब वह संसार अस्थिर और तनावपूर्ण दिखने लगता है तो उसके भीतर 'सेफ्टी' की भावना कमजोर होने लगती है। वह हर समय सतर्क रहने लगता है कि अगला झगड़ा कब होगा। 1- हर समय डर में रहना। 2-एंजाइटी महसूस होना। 3-आत्मविश्वास कम होना। 4-पढ़ाई में मन न लगना। 5- स्कूल जाने से बचना। 6- दोस्तों से दूरी बनाना। 7- बच्चे में गुस्सा बढ़ना। 8- चिड़चिड़ापन बढ़ना। 9- रात में नींद न आना। 10- पेट दर्द, सिरदर्द की शिकायत। क्या हर झगड़ा बच्चे को नुकसान पहुंचाता है? नहीं। यह समझना बहुत जरूरी है। अगर पति-पत्नी किसी बात पर शांत तरीके से असहमति जताते हैं, एक-दूसरे का सम्मान करते हैं और बाद में समस्या का समाधान भी बच्चे के सामने दिखता है, तो बच्चा सीखता है कि मतभेद रिश्तों का सामान्य हिस्सा हैं। समस्या तब होती है, जब- माता-पिता के बीच रोज झगड़े हों। झगड़े में चिल्लाना, धमकाना, अपमान करना शामिल हो। उनके बीच कई दिनों तक तनाव बना रहे। बच्चा खुद को झगड़े की वजह मानने लगे। घर में हमेशा तनाव का माहौल रहे। ऐसे माहौल में बच्चा 'इमोशनल सर्वाइवल मोड' में रहने लगता है। उसका दिमाग पढ़ाई, खेल और

सीखने की बजाय अपनी सुरक्षा पर ज्यादा फोकस हो जाता है। झगड़े को कैसे समझता बच्चे का ब्रेन? 8 साल की उम्र में बच्चा दुनिया को अभी भी काफी हद तक माता-पिता के नजरिए से देखता है। अगर वह रोज लड़ाई देखता है तो उसके मन में कई तरह के सवाल आते हैं- क्या मेरी वजह से झगड़ा हुआ? क्या मम्मी-पापा अलग हो जाएंगे? अगर वे अलग हो गए तो मैं किसके साथ रहूंगा? क्या मैं कुछ कर सकता हूं? ये स्ट्रेस बच्चे के भीतर डर पैदा कर सकता है। ये डर बच्चे शब्दों में नहीं बोल पाते। इसलिए उनके व्यवहार और कुछ संकेतों पर गौर करने की जरूरत है-बच्चे के इन संकेतों को इग्नोर न करेंः- अचानक बहुत चुप हो जाना। छोटी-छोटी बातों पर रोना। स्कूल जाने से बचना। बच्चे को । बुरे सपने आना। बिस्तर गीला करना।

मम्मी-पापा से चिपके रहना। पसंद की चीजों में रुचि कम होना। माता-पिता के लिए सबसे जरूरी बातः-अक्सर माता-पिता कहते हैं, 'हम बच्चे के सामने नहीं लड़ते' या 'उसे कुछ समझ नहीं आता।' असलियत यह है कि बच्चे सिर्फ शब्द नहीं सुनतेउ।

वे चेहरे के भाव, आवाज का उतार-चढ़ाव, कमरे का माहौल और शरीर की भाषा भी पढ़ लेते हैं। इसलिए अगर बच्चा डर रहा है तो उसकी भावना को 'ओवररिएक्शन' कहकर खारिज न करें। उसके डर को स्वीकार करना ही समाधान की शुरुआत है। इस स्थिति को कैसे संभालें? 1. झगड़े का तरीका बदलेंः-मतभेद होना सामान्य है, लेकिन उसे संभालने का तरीका बदला जा सकता है। इसलिए आप आपस में कुछ बातें तय करें, जैसेकि- गुस्सा बढ़े तो बातचीत रोक दें। तय करें कि बच्चे के सामने बहस नहीं करेंगे। चिल्लाने की बजाय शांत आवाज में बात करें।

एक-दूसरे का अपमान करने या ताने देने से बचें। 2. बच्चे को भरोसा देंः-अगर बच्चे ने झगड़ा देखा है तो बाद में उससे इस बारे में बात जरूर करें।

उसे कहें– 'मम्मी-पापा की बहस हुई थी, लेकिन यह तुम्हारी गलती नहीं है। हम मिलकर इसे सुलझा रहे हैं और तुम सुरक्षित हो।' यह एक छोटा-सा वाक्य बच्चे के मन का बहुत बड़ा बोझ कम कर सकता है।

यह तुम्हारी गलती नहीं है। हम मिलकर प्रॉब्लम सॉल्व कर रहे हैं। मम्मी-पापा तुमसे बहुत प्यार करते हैं। बड़े लोग कभी-कभी असहमत होते हैं।

तुम सेफ हो। डरने की कोई बात नहीं। अगर तुम्हें डर लगे तो हमसे बात करना। 3. बच्चे की दिनचर्या सामान्य रखें-तनाव के समय नियमित दिनचर्या बच्चे को सुरक्षा का एहसास देती है।

रूटीन जितना स्थिर रहेगा, बच्चा उतना सुरक्षित महसूस करेगा। इसलिए इन बातों का ध्यान रखें- समय पर स्कूल, पर्याप्त नींद, साथ बैठकर खाना, रोज कुछ समय खेलना, स्क्रीन टाइम सीमित रखना, . रोज 15-20 मिनट सिर्फ बच्चे के लिए रखें। इसे बच्चे का 'स्पेशल टाइम' मानें। इस दौरान-मोबाइल दूर रखें। बच्चा जो खेलना चाहे, वही खेलें। उसे बीच में टोकें नहीं। सलाह देने की बजाय उसकी बातें सुनें। ऐसा समय बच्चे के भीतर दोबारा भरोसा बनाने में मदद करता है। 5. अगर माफी मांगी है तो उसे दिखाएं भी- बच्चे आप दोनों के बीच सिर्फ झगड़ा नहीं, बल्कि प्यार, दोस्ती और ख्याल भी देखें। अगर आकोप दोनों के बीच बहस हुई थी और बाद में आपने एक-दूसरे से सम्मानपूर्वक बात की या सामान्य व्यवहार किया, तो बच्चा सीखता है कि बहस से रिश्ते टूटते नहीं हैं। उन्हें बेहतर भी किया जा सकता है। घर में शांति बनाने के 9 नियमः-बच्चे के सामने चिल्लाने से बचें। कपल अपने लिए कुछ रूल्स बनाएं। एक-दूसरे पर आरोप न लगाएं। गुस्से में आवाज ऊंची न करें। एक-दूसरे की शिकायत ध्यान से सुनें। रोज 10 मिनट परिवार के साथ बिताएं। अपनी सेहत का ख्याल रखें। तनाव होने पर 20 मिनट का ब्रेक लें। जरूरत हो तो फैमिली काउंसलर से मिलें। चाइल्ड काउंसिलर की मदद कब जरूरी? अगर बच्चे में नीचे दिए बदलाव 4-6 हफ्तों से बने हुए हैं या बढ़ रहे हैं तो चाइल्ड साइकोलॉजिस्ट से मिलना बेहतर होगा- स्कूल जाने से लगातार इनकार। बार-बार घबराहट या डर। पढ़ाई में अचानक गिरावट। बहुत ज्यादा चुप या आक्रामक होना।

नींद या भूख में बड़ा बदलाव। खुद को दोष देना। दोस्तों से पूरी तरह दूरी बना लेना।

इसी तरह अगर पति-पत्नी के झगड़े लगातार बढ़ रहे हैं और दोनों उन्हें नियंत्रित नहीं कर पा रहे हैं, तो मैरिज या फैमिली काउंसलिंग लेने में संकोच नहीं करना चाहिए। अंतिम बातः-बच्चों को ऐसे माता-पिता नहीं चाहिए, जो कभी गलती न करें।

उन्हें ऐसे माता-पिता चाहिए, जो गलती होने पर उसे स्वीकार करें, सम्मानपूर्वक सुलझाएं और बच्चे को यह भरोसा दिलाएं कि परिवार उसके लिए सुरक्षित जगह है।

जब घर का भावनात्मक माहौल बेहतर होता है, तो अधिकांश बच्चों में डर, चिंता और असुरक्षा भी धीरे-धीरे कम होने लगती है।

इमाम-उल-हक पर 2 साल का बैन लग सकता है,लॉर्ड्स टेस्ट में हुई इंजरी की पीसीबी जांच कराएगा,रिजवान भी घेरे में

स्पोर्टडेस्क। पाकिस्तान के बल्लेबाज इमाम-उल-हक पर लॉर्ड्स टेस्ट में इंजरी को लेकर 1 से 2 साल तक का बैन लग सकता है। जियो न्यूज की रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड उनकी पिंडली की चोट से जुड़े मामले की जांच के लिए कमेटी बनाने की तैयारी में है। जांच में अगर इमाम दोषी पाए जाते हैं तो उन पर 1 से 2 साल का बैन लगाया जा सकता है। लॉर्ड्स टेस्ट के पहले दिन लगी थी पिंडली में चोट-इमाम को इंग्लैंड के खिलाफ लॉर्ड्स टेस्ट के पहले दिन फील्डिंग के दौरान पिंडली में हल्का खिंचाव आया था। इसके बाद वे पाकिस्तान की दोनों पारियों में बल्लेबाजी के लिए नहीं उतरे। पाकिस्तान पहली पारी में 110 रन पर ऑलआउट हुआ था, जबकि दूसरी पारी में 389 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए 194 रन पर सिमट गया। इंग्लैंड ने यह टेस्ट 194 रन से जीता था। इमाम की चोट और इसके बाद उनकी अनुपलब्धता को लेकर पीसीबी ने जांच कराने का फैसला किया है। 2025 में भी इंजरी को लेकर जांच हुई थी-इमाम पहले भी चोट से जुड़े विवाद में रह चुके हैं। मार्च 2025 में न्यूजीलैंड दौरे के दौरान इंडोर नेट सेशन में गेंद उनके दाहिने पैर के अंगूठे पर लगी थी। जियो न्यूज के मुताबिक, उस मामले की पीसीबी जांच समिति ने इमाम को मेडिकल स्टाफ को गुमराह करने और चोट के लक्षणों को गलत तरीके से पेश करने के लिए जिम्मेदार ठहराया था। समिति ने माना था कि इमाम ने पाकिस्तान के पहले वनडे में नहीं खेलने के लिए अपनी चोट को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया था। रिजवान से भी पीसीबी करेगा पूछताछ- इमाम के अलावा विकेटकीपर बल्लेबाज मोहम्मद रिजवान भी अनुशासन से जुड़े मामले में पीसीबी की जांच के घेरे में हैं। जियो न्यूज के सूत्रों के मुताबिक, बोर्ड आने वाले दिनों में रिजवान से पूछताछ कर सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि निकट भविष्य में पाकिस्तान की टीम में उनकी वापसी की संभावना कम मानी जा रही है। लॉर्ड्स हार के बाद 7 खिलाड़ियों को टेस्ट स्क्वॉड से किया रिलीज-इंग्लैंड के खिलाफ लॉर्ड्स टेस्ट में 194 रन से हार के बाद पाकिस्तान ने टेस्ट स्क्वॉड में बड़े बदलाव किए हैं। इमाम और रिजवान समेत 7 खिलाड़ियों को टीम से रिलीज किया गया। इनमें सलमान आगा, अली उस्मान, आमिर जमाल, ओवैस जफर और खुर्रम शहजाद भी शामिल हैं। तीसरे टेस्ट के लिए पाकिस्तान ने 5 अनकैप्ड खिलाड़ियों को स्क्वॉड में शामिल किया है। इनमें अराफात मिन्हास, मोहम्मद इमरान जूनियर, साद बेग, मोहम्मद इमरान रंधावा और रजाउल्लाह शामिल हैं। सैम अय्यूब और अब्दुल्ला फजल को भी टीम में जगह मिली है। 9 सितंबर से एजबेस्टन में तीसरा टेस्ट-इंग्लैंड और पाकिस्तान के बीच सीरीज का तीसरा और अंतिम टेस्ट 9 सितंबर से एजबेस्टन में खेला जाएगा। इंग्लैंड सीरीज में 2-0 से आगे है। पाकिस्तान के सामने अब सीरीज में क्लीन स्वीप से बचने की चुनौती है।

गिल, श्रेयस, गंभीर और लक्ष्मण बीसीसीआई हेडक्वार्टर पहुंचे, टीम इंडिया के प्रदर्शन पर रिव्यू मीटिंग होगी, वनडे वर्ल्डकप 2027 पर भी चर्चा हो सकती है

स्पोर्ट डेस्क। भारत के टेस्ट और वनडे कप्तान शुभमन गिल और टी-20 कप्तान श्रेयस अय्यर गुरुवार को रिव्यू मीटिंग के लिए मुंबई स्थित बीसीसीआई हेडक्वार्टर पहुंचे। उनके साथ हेड कोच गौतम गंभीर और सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (सीओई) हेड

वीवीएस लक्ष्मण भी पहुंचे। बैठक में भारतीय टीम के हालिया प्रदर्शन की समीक्षा होगी, जबकि वनडे वर्ल्ड कप 2027 की तैयारियों पर भी चर्चा हो सकती है। कई रिपोर्टों के अनुसार, यह रिव्यू मीटिंग पहले आयरलैंड और इंग्लैंड दौरे के बाद होनी थी, लेकिन श्रीलंका के खिलाफ दो टेस्ट मैचों के दौरे के कारण इसमें देरी हुई। बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया और अध्यक्ष मिथुन मन्हास भी बैठक में शामिल हैं। भारत लगातार दो टी-20 सीरीज हारा-डिफेंडिंग टी-20 वर्ल्ड कप चैंपियन भारत को जून में आयरलैंड के खिलाफ दो मैचों की टी-20 सीरीज में 2-0 से हार मिली थी। इसके बाद इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की टी-20 सीरीज में भी भारत 4-0 से हार गया। नॉटिंघम में टीम को 125 रन से हार मिली, जो सीरीज में उसकी सबसे बड़ी हार थी।इन दोनों सीरीज में श्रेयस अय्यर भारत के कप्तान थे। इसके बाद शुभमन गिल की कप्तानी में भारत इंग्लैंड के खिलाफ वनडे सीरीज भी 2-1 से हार गया।अफगानिस्तान के खिलाफ टी-20 सीरीज खेलेगा भारत-अब भारत को अफगानिस्तान के खिलाफ तीन मैचों की टी-20 सीरीज खेलनी है। श्रेयस अय्यर टीम की कप्तानी करेंगे, जबकि तिलक वर्मा को उप-कप्तान बनाया गया है। स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की टीम में वापसी हुई है, हालांकि उनका खेलना फिटनेस क्लीयरेंस पर निर्भर करेगा। नीतीश कुमार रेड्डी, वॉशिंगटन सुंदर और हर्षित राणा को भी टीम में जगह मिली है।अफगानिस्तान के खिलाफ बुमराह टीम में शामिल-बुमराह ने अपना आखिरी इंटरनेशनल मैच 16 जुलाई को कार्डिफ में इंग्लैंड के खिलाफ खेला था। इसके बाद उन्हें इंग्लैंड के खिलाफ आखिरी वनडे से बाहर कर दिया गया था। बीसीसीआई ने बताया था कि उन्हें कार्डिफ में फील्डिंग के दौरान चोट लगी थी। इसके चलते वह श्रीलंका के खिलाफ भारत की टेस्ट सीरीज में भी नहीं खेल सके थे, जिसे भारत ने 1-0 से जीता था।

दावा- धोनी आईपीएल में इम्पैक्ट प्लेयर नहीं बनेंगे,पूर्व टीममेट बोले- विकेटकीपर के तौर पर रहना चाहते हैं, अगले सीजन में खेलने पर फैसला बाकी

स्पोर्ट डेस्क। एमएस धोनी आईपीएल में इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर नहीं खेलना चाहते हैं। वह फुलटाइम विकेटकीपर के तौर पर चेन्नई सुपर किंग्स में शामिल होना चाहते हैं। यह दावा बुधवार को चेन्नई सुपर किंग्स में उनके टीममेट रहे पूर्व बल्लेबाज सुब्रमण्यम बद्रीनाथ ने किया। उन्होंने यूट्यूब वीडियो में दावा किया कि धोनी ने खुद उनसे यह बात कही कि वह पूरे 20 ओवर मैदान पर रहना चाहते हैं। धोनी 2026 के सीजन में चेन्नई सुपर किंग्स का हिस्सा थे, लेकिन उन्होंने एक भी मैच नहीं खेला था। 2027 सीजन में भी वे खेलेंगे या नहीं, इस पर धोनी या टीम की ओर से ऑफिशियल बयान अब तक नहीं आया है। बद्रीनाथ बोले- धोनी का इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर खेलना ही सही- बद्रीनाथ ने यह भी कहा कि धोनी का शरीर लंबे समय तक यह काम नहीं संभाल सकता। सीएसके के कोच स्टीफन फ्लेमिंग भी इस बारे में कह चुके हैं। बद्रीनाथ ने कहा- 'धोनी 16वें ओवर के बाद ही बल्लेबाजी करने वाले हैं और विकेटकीपिंग भी करेंगे। जब उनकी भागीदारी इतनी कम है, तो वह इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर खेलना ही सही होगा।' धोनी ने सीएसके को 5 आईपीएल ट्रॉफी जिताईं-धोनी पिछले कुछ सीजन से फिटनेस से जुड़ी परेशानियों से जूझ रहे हैं। धोनी ने सीएसके को पांच (2010, 2011, 2018, 2021 और 2023) आईपीएल खिताब जिताए हैं।

उन्होंने 2024 सीजन से पहले कप्तानी छोड़ दी थी। धोनी ने 278 आईपीएल मैच खेले- आईपीएल में सबसे ज्यादा मैच खेलने वालों में महेंद्र सिंह धोनी तीसरे नंबर पर हैं। वे अब तक 278 मैच खेल चुके हैं। चेन्नई सुपर किंग्स को पांच बार खिताब जिताया है। 38.30 की औसत से 5439 रन बनाए हैं। इस दौरान धोनी ने 24 अर्धशतक भी लगाए हैं। उन्होंने विकेटकीपिंग में 47 स्टंपिंग और 154 कैच भी लपके हैं। आईपीएल में 100 मैच जीतने वाले इकलौते कप्तान- धोनी आईपीएल में 100 मैच जीतने वाले एकमात्र कप्तान हैं। उन्होंने आईपीएल में सबसे ज्यादा 235 मैचों में कप्तानी की है। इस लिस्ट में दूसरे नंबर पर रोहित शर्मा हैं। उन्होंने 158 मैचों में कप्तानी की है। धोनी ने अपनी कप्तानी में सीएसके को 2023 में आखिरी बार चैंपियन बनाया था। धोनी अपनी कप्तानी में टीम को 136 मैचों में जीत दिला चुके हैं, जबकि 97 में टीम को हार मिली। बद्रीनाथ ने 95 आईपीएल मैच खेले-बद्रीनाथ ने भारत के लिए 2008 से 2011 के बीच इंटरनेशनल क्रिकेट खेला। उन्होंने अगस्त 2008 में श्रीलंका के खिलाफ वनडे डेब्यू किया और 7 वनडे में 79 रन बनाए। फरवरी 2010 में साउथ अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट और जून 2011 में वेस्टइंडीज के खिलाफ अपना इकलौता टी-20 इंटरनेशनल खेला। उन्होंने 95 आईपीएल मैच खेले हैं।

प्रीति जिंटा बोलीं- मैंने रोज 18 घंटे काम किया, दीपिका पादुकोण ने 8 घंटे शिफ्ट के लिए छोड़ी थी फिल्म-मेल एक्टर्स पर सवाल उठाया था

मुंबई। फिल्म इंडस्ट्री में काम के लंबे घंटों और वर्क-लाइफ बैलेंस को लेकर बहस एक बार फिर तेज हो गई है। लगभग एक दशक के अंतराल के बाद बड़े पर्दे पर वापसी कर रहीं एक्ट्रेस प्रीति जिंटा ने इस मुद्दे पर अपना रुख साफ किया है। मुंबई में अपनी आने वाली एक्शन-कॉमेडी फिल्म 'वाइब' के ट्रेलर लॉन्च इवेंट में प्रीति जिंटा ने खुलासा किया कि उन्होंने इस फिल्म की शूटिंग के दौरान रोजाना 18 घंटे तक काम किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि 'हर किसी की अपनी प्राथमिकताएं होती हैं' और उन्होंने भारत में अपने कम समय के टूर और अमेरिका में बच्चों के पास जल्दी लौटने के लिए खुद यह लंबा शेड्यूल चुना था। 'बच्चों के पास लौटने के लिए 18 घंटे काम किया'- ट्रेलर लॉन्च के दौरान जब मीडिया ने प्रीति जिंटा से सेट पर लंबे वर्किंग आवर्स के बारे में सवाल किया, तो उन्होंने बताया कि लंबे समय तक शूटिंग करना मुश्किल जरूर था, लेकिन यह उनका अपना व्यक्तिगत फैसला था। 50 साल की प्रीति जिंटा ने कहा, सबकी अपनी पसंद और जरूरतें होती हैं। बेशक, मैंने 18 घंटे तक काम किया क्योंकि मैं अपना काम जितनी जल्दी हो सके खत्म करके अमेरिका वापस अपने बच्चों के पास जाना चाहती थी। मेरा फोकस सिर्फ यही था कि मैं भारत आऊंगी, अपना काम तेजी से पूरा करूंगी और तुरंत लौट जाऊंगी। मैं यहां 30 से 40 दिनों के समय के लिए आई थी। इसलिए मुझे इतनी लंबी शिफ्ट में काम करने में कोई आपत्ति नहीं थी। प्रीति ने यह भी बताया कि इस फिल्म में उन्होंने कई कठिन एक्शन सीन खुद किए हैं, जिसके लिए लगातार लंबे शोज और शारीरिक मेहनत की जरूरत थी।दीपिका पादुकोण की थी 8 घंटे की शिफ्ट की मांग-फिल्म इंडस्ट्री में वर्किंग आवर्स का यह विवाद असल में तब शुरू हुआ था, जब एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण के संदीप रेड्डी वांगा की फिल्म 'स्पिरिट' (प्रभास स्टारर) और 'कल्कि 2898 एडी' के सीक्वल से अलग होने की खबरें सामने आई थीं। मीडिया रिपोर्टों में दावा किया गया था कि मां बनने के बाद दीपिका ने अपनी पर्सनल लाइफ और प्रोफेशनल लाइफ में बैलेंस बनाए रखने के लिए रोजाना 8 घंटे की वर्क शिफ्ट की मांग रखी थी। मेकर्स के साथ काम के घंटों और फीस को लेकर सहमति न बन पाने के कारण दीपिका इन प्रोजेक्ट्स से हट गईं। इसके बाद सोशल मीडिया और इंडस्ट्री में इस बात को लेकर बहस छिड़ गई कि क्या भारतीय सिनेमा में तय वर्किंग टाइम लागू होना चाहिए या नहीं। मेल सुपरस्टार्स पर दीपिका का बयान जब दीपिका पादुकोण की 8 घंटे की वर्किंग डिमांड पर विवाद बढ़ा, तो उन्होंने एक इंटरव्यू में भारतीय फिल्म इंडस्ट्री के दोहराव वाले रवैये पर खुलकर बात की। दीपिका ने सीएनबीसी-टीवी18 को दिए इंटरव्यू में कहा था, यह कोई छिपी हुई बात नहीं है कि भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में कई मेल सुपरस्टार्स सालों से सिर्फ 8 घंटे ही काम करते आ रहे हैं। वे सोमवार से शुक्रवार तक 8 घंटे काम करते हैं और वीकेंड्स पर काम नहीं करते। लेकिन जब कोई महिला अपने लिए 8 घंटे की शिफ्ट मांगती है, तो इसे हेडलाइन बना दिया जाता है। अक्षय कुमार करते हैं 8 घंटे काम-इसी दौरान एक्टर अभिषेक बच्चन का एक पुराना वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था, जिसमें वे 'द कपिल शर्मा शो' में अक्षय कुमार के वर्किंग स्टाइल के बारे में बता रहे थे। अभिषेक ने कहा था, पैकअप का ऐलान होते ही सबसे ज्यादा खुश अक्षय कुमार होते हैं। वे 8 घंटे से ज्यादा काम नहीं करते। सुबह 7 बजे सेट पर आते हैं और तुरंत अपना काम शुरू कर देते हैं। सुनील शेट्टी ने कहा 18 घंटे काम प्रोडक्टिव नहीं- वर्किंग आवर्स की इस बहस में एक्टर सुनील शेट्टी ने भी अपनी बात रखी थी।

लता मंगेशकर के परिवार से थीं युवती जिनसे शक्ति कपूर ने भागकर की थी शादी,शादी के बाद अखबार में छपा- 3 महीने में तलाक हो जाएगा

मुंबई। कई सुपरहिट फिल्मों में विलेन और कॉमेडियन का रोल प्ले करने वाले शक्ति कपूर आज 74 साल के हो गए। तकरीबन 700 से ज्यादा फिल्मों में काम कर चुके शक्ति का एक्टिंग करियर बेहद सफल रहा। उनकी पर्सनल लाइफ की लव स्टोरी भी काफी दिलचस्प है। शक्ति ने शिवांगी कोल्हापुरे से शादी की थी। दोनों की मुलाकात फिल्म 'किस्मत' के दौरान हुई थी। कपिल शर्मा के शो में शक्ति कपूर ने बताया था कि शिवांगी को देखकर उन्हें वह पहली नजर में ही बेहद खूबसूरत लगी थीं। उन्होंने शिवांगी से हल्की-सी लाइन भी मारी और मन ही मन तय कर लिया था कि शादी करेंगे तो इसी मराठिन से करेंगे। फिर दोनों की मुलाकात के बाद दोनों में दोस्ती हुई और फिर यह दोस्ती प्यार में बदल गई। परिवार रिश्ते के खिलाफ था- जब दोनों की मुलाकात हुई थी, तब शक्ति कपूर करीब 30 वर्ष के थे और शिवांगी महज 18 साल की थीं। इसके अलावा, शक्ति कपूर फिल्मों में अक्सर विलेन के रोल निभाते थे। इसी वजह से शिवांगी के माता-पिता इस रिश्ते के सख्त खिलाफ थे। जब दोनों ने शादी की बात की, तो शिवांगी के परिवार ने उन्हें कमरे में बंद कर दिया था। परिवार को मनाने के सारे रास्ते बंद होने के बाद शिवांगी ने घर से भागकर शक्ति कपूर के साथ शादी करने का फैसला किया। 1982 में की कोर्ट मैरिज-साल 1982 में दोनों ने भागकर कोर्ट मैरिज कर ली। शुरुआत में शक्ति कपूर का परिवार भी थोड़ा हिचकिचा रहा था, लेकिन जब उन्हें पता चला कि शिवांगी मशहूर गायिका लता मंगेशकर के परिवार से ताल्लुक रखती हैं, तो वे मान गए। शादी के बाद शिवांगी के माता-पिता कई सालों तक उनसे नाराज रहे। हालांकि, बड़े बेटे सिद्धांत कपूर और बाद में बेटी श्रद्धा कपूर के जन्म के बाद दोनों परिवारों के बीच की कड़वाहट खत्म हो गई। शिवांगी के माता-पिता ने भी इस रिश्ते को पूरी तरह से स्वीकार कर लिया। अखबार में लिखा गया- 3 महीने में तलाक हो जाएगा-कपिल शर्मा के शो में शक्ति कपूर ने बताया था कि उनकी शादी के बाद अखबार में आया था कि 3 महीने में उनका तलाक हो जाएगा। हालांकि, ऐसा कुछ नहीं हुआ। वहीं, शक्ति के ससुर ने उनसे आकर बोला कि तुम्हारे जैसा जमाई मैंने कहीं नहीं देखा, मुझे तुम पर बहुत गर्व है। शक्ति कपूर की पत्नी शिवांगी कोल्हापुरे (अभिनेत्री पद्मिनी कोल्हापुरे की बड़ी बहन) दिग्गज गायिका लता मंगेशकर की रिश्तेदार (भतीजी) हैं। बता दें कि शिवांगी कोल्हापुरे के पिता पंडित पंधारीनाथ कोल्हापुरे की मां, लता मंगेशकर के पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर की सौतेली बहन थीं। इस नाते शिवांगी के पिता पंधारीनाथ जी, लता मंगेशकर और आशा भोसले के चचेरे भाई लगते थे।

एक नजर शक्ति कपूर के करियर पर-शक्ति कपूर ने 1977 में फिल्म 'खेल खिलाड़ी का' से बॉलीवुड डेब्यू किया था। शुरुआती दौर में उन्हें कई छोटी भूमिकाएं मिलीं, लेकिन 'कुर्बानी' और 'रॉकी' में विलेन के किरदारों ने उन्हें पहचान दिलाई। इसके बाद 'हिम्मतवाला' और 'हीरो' जैसी फिल्मों में भी उन्होंने नेगेटिव रोल निभाया।

1990 के दशक में शक्ति कपूर ने अपनी एक्टिंग का दायरा बढ़ाया और कॉमेडी में भी खास पहचान बनाई। 'राजा बाबू' में नंदू का किरदार उनके सबसे यादगार रोल्स में शामिल है। इस भूमिका के लिए उन्हें फिल्मफेयर बेस्ट कॉमेडियन अवॉर्ड मिला। 'अंदाज अपना अपना' में क्राइम मास्टर गोगो, 'चालबाज', 'इंसाफ', 'बाप नंबरी बेटा दस नंबरी' और 'बोल राधा बोल' जैसी फिल्मों में उनके किरदार भी खूब चर्चित रहे। बाद में उन्होंने 'हंगामा', 'हलचल', 'चुप चुप के' और 'मालामाल वीकली' जैसी फिल्मों में भी काम किया।

बारिश के मौसम में घुटनों-जोड़ों में दर्द, इन 7 कारणों से बढ़ता पेन, सावधानी जरूरी, डाइट बदलें, ये 6 चीजें न खाएं

नयी दिल्ली। मानसून के दौरान जोड़ों के दर्द की शिकायत बढ़ जाती है। इस मौसम में कुछ लोगों को घुटनों, पीठ और कंधों में दर्द या जकड़न की समस्या होती है। खासकर आर्थराइटिस, पुरानी चोट या हड्डियों से जुड़ी समस्याओं से पीड़ित लोगों में यह परेशानी बढ़ जाती है। 'द जर्नल ऑफ रुमेटोलॉजी' में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, कम तापमान और ज्यादा नमी, कुछ लोगों में जॉइंट पेन बढ़ा सकते हैं। हालांकि इसका असर हर व्यक्ति पर एक जैसा नहीं होता। उम्र, स्वास्थ्य और पहले से मौजूद बीमारियां इसमें अहम भूमिका निभाती हैं। इसलिए आज 'जरूरत की खबर' में मानसून में जॉइंट पेन की बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- किन लोगों को इसका ज्यादा रिस्क होता है? मानसून में जॉइंट पेन से बचने के लिए क्या करें? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. गौरव प्रकाश भारद्वाज, डायरेक्टर और सीनियर कंसल्टेंट- स्पोर्ट्स इंजरी, जॉइंट प्रिजर्वेशन एंड रिप्लेसमेंट सर्जन, पीएसआरआई हॉस्पिटल, जी के साथ सवाल-जवाब के माध्यम से। मानसून में नमी बढ़ने और धूप कम होने से जॉइंट्स और मसल्स में दर्द बढ़ सकता है। रोज हल्की एक्सरसाइज, पर्याप्त हाइड्रेशन, विटामिन डी सप्लीमेंट और गर्म सिंकाई बॉडी और जॉइंट पेन को कंट्रोल किया जा सकता है। सवाल- मानसून में बॉडी पेन और जॉइंट पेन क्यों बढ़ जाता है? जवाब- मानसून में बढ़ी हुई नमी, तापमान में उतार-चढ़ाव और एयर प्रेशर में बदलाव जोड़ों और मांसपेशियों को प्रभावित करते हैं। इससे कुछ लोगों में दर्द, सूजन और जकड़न की समस्या बढ़ जाती है। मानसून में क्यों बढ़ता जॉइंट पेन-शरीर में इंफ्लेमेशन बढ़ना। हवा में नमी बढ़ना। एयर प्रेशर कम होना। आर्थराइटिस का असर बढ़ना। ब्लड सर्कुलेशन धीमा होना। फिजिकल एक्टिविटी घटना। विटामिन डी की कमी। सवाल- बारिश का मौसम जॉइंट्स को कैसे प्रभावित करता है? जवाब- हां, इसे पॉइंटर्स से समझिए- जिन लोगों को पहले से जॉइंट्स से जुड़ी समस्या है, उनके लिए मानसून ट्रिगर की तरह काम करता है। यह दर्द और जकड़न को बढ़ा देता है। नमी और वायुदाब में बदलाव की वजह से जोड़ों के आसपास के टिश्यू हल्के फैलते हैं। इससे आर्थराइटिस या पुरानी चोट वाले लोगों में दर्द ज्यादा महसूस होता है। ठंडा और नम मौसम मांसपेशियों को भी सख्त बना देता है। इससे मूवमेंट कम हो जाता है और जॉइंट्स में स्टिफनेस बढ़ जाती है। सवाल- किन लोगों को इसका रिस्क ज्यादा होता है? जवाब- जिनके जॉइंट्स या मसल्स सेंसिटिव होते हैं या शरीर की रिकवरी क्षमता कम होती है, उन्हें रिस्क ज्यादा होता है। जॉइंट पेन का ज्यादा रिस्क किसको हैंः- जिन्हें विटामिन डी डेफिशिएंसी है। जिन्हें पुरानी चोट या फ्रैक्चर है। जिन्हें फाइब्रोमायल्जिया है। जिन्हें आर्थराइटिस है। जिन्हें ऑटोइम्यून बीमारी है। जिनका बॉडी वेट ज्यादा है। जो देर तक बैठकर काम करते हैं। सवाल- किन बॉडी पार्ट्स में ज्यादा दर्द बढ़ सकता है? जवाब- जहां पहले से कमजोरी, चोट या सूजन हो, उन

बॉडी पार्ट्स में मानसून के दौरान दर्द ट्रिगर होता है, जैसेकि- घुटने, कमर, गर्दन, कंधे, रीढ़, एड़ी और टखने मांसपेशियां हाथ-पैर। सवाल- क्या कम धूप मिलने से दर्द बढ़ सकता है? जवाब- हां, मानसून में धूप कम निकलने से शरीर में विटामिन डी का लेवल कम हो सकता है। इसकी कमी से हड्डियां और मांसपेशियां कमजोर हो सकती हैं। सवाल- मानसून में जॉइंट पेन कम करने के लिए क्या करें? जवाब- सही लाइफस्टाइल अपनाकर इसे काफी हद तक कंट्रोल किया जा सकता है। इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखें-लंबे समय तक एक पोजिशन में न बैठें। रोज हल्की एक्सरसाइज, स्ट्रेचिंग करें। जोड़ों पर गर्म सिंकाई करें। संतुलित डाइट लें। पर्याप्त नींद लें। पर्याप्त पानी पिएं। वजन कंट्रोल रखें। जरूरत हो तो डॉक्टर की सलाह लें। सवाल- कौन-सी एक्सरसाइज दर्द से राहत दिलाने में फायदेमंद है? जवाब- जिस एक्सरसाइज से जोड़ों पर ज्यादा प्रेशर न पड़े, वो दर्द से राहत दिलाती है, जैसेकि-वॉकिंग, योग, स्ट्रेचिंग, हल्की फिजियो एक्सरसाइज, तैराकी। सवाल- क्या गर्म सिंकाई से भी दर्द में राहत मिलती है? जवाब- हां, गर्म सिंकाई जॉइंट पेन में राहत देती है। गर्माहट से जोड़ों के आसपास की मांसपेशियां रिलैक्स होती हैं, ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है और स्टिफनेस कम होती है। इससे दर्द धीरे-धीरे घटता है। अगर जॉइंट में ज्यादा सूजन और रेडनेस हो तो गर्म की बजाय ठंडी सिंकाई बेहतर है। सवाल- कब डॉक्टर के पास जाना जरूरी है? जवाब- इन स्थितियों में डॉक्टर को दिखाना जरूरी है- अगर दर्द लंबे समय तक (2-3 हफ्ते) बना रहे। दर्द लगातार बढ़े। जोड़ों में सूजन, रेडनेस हो। छूने पर ज्यादा गर्माहट हो। मूवमेंट में ज्यादा दिक्कत हो। बुखार के साथ तेज दर्द हो। सवाल- क्या खानपान की आदतें भी दर्द बढ़ा सकती हैं? जवाब- हां, गलत खानपान से शरीर में सूजन बढ़ सकती है। इससे जॉइंट पेन बढ़ता है। जॉइंट पेन बढ़ाने वाले फूड- फ्राइड, स्पाइसी फूड, पकौड़े, समोसे, फ्राइज, चिप्स, प्रोसेस्ड / पैकेज्ड फूड, स्नैक्स, इंस्टेंट नूडल्स, प्रोसेस्ड मीट, पैकेज्ड स्नैक्स, शुगरी चीजें- कोल्ड ड्रिंक, मिठाइयां,ज्यादा नमक, बेकरी आइटम, चिप्स, अचार, नमकीन, रिफाइंड कार्ब्स, पैकेज्ड स्नैक्स, व्हाइट ब्रेड, पेस्ट्री, कुकीज, ठंडी चीजें, शुगरी ड्रिंक्स, रेड मीट, आइसक्रीम ऐसे लोगों की डाइट में एंटी-इंफ्लेमेटरी और कैल्शियम रिच फूड होने चाहिए, जो हड्डियों को मजबूत बनाएं और मसल्स को सपोर्ट दें। जॉइंट पेन में राहत के लिए ये खाएं-एंटी-इंफ्लेमेटरी फूड- हल्दी, अदरक, लहसुन, प्रोटीन, दालचीनी, दाले, पनीर, अंडे, दही, बीन्स, सोया, कैल्शियम और विटामिन डी। दूध, दही, पनीर, रागी, तिल, फोर्टिफाइड फूड, ओमेगा-3, अलसी के बीज, अखरोट, चिया सीड्स, फैटी फिश, मौसमी फल-सब्जियां- मौसमी फल-सब्जियां- पपीता, सेब, अनार, पालक, लौकी, तोरी। बॉडी पेन से जुड़े कुछ कॉमन सवाल-जवाब- सवाल- क्या ज्यादा सोने या देर तक एक ही पोजिशन में रहने से दर्द बढ़ता है? जवाब- हां, इससे जोड़ों में फ्लूइड मूवमेंट कम हो जाता है और आसपास की मांसपेशियां सख्त होने लगती हैं। इससे स्टिफनेस और दर्द बढ़ता है। सवाल- क्या पानी कम पीने से भी शरीर दर्द हो सकता है? जवाब- हां, इससे जोड़ों के बीच मौजूद लुब्रिकेटिंग फ्लूइड का प्रभाव कम हो जाता है। साथ ही घर्षण, स्टिफनेस और दर्द बढ़ सकता है। डिहाइड्रेशन मांसपेशियों में ऐंठन और थकान भी बढ़ाता है। सवाल- क्या नींद की कमी से दर्द बढ़ सकता है? जवाब- हां, पर्याप्त नींद न मिलने पर शरीर की रिपेयर और रिकवरी प्रक्रिया प्रभावित होती है। इससे मसल्स और जोड़ों में सूजन बढ़ सकती है। नींद की कमी दर्द सहने की क्षमता भी कम कर देती है। इसलिए हल्का दर्द भी ज्यादा ज्यादा महसूस होने लगता है। सवाल- क्या लंबे समय तक डेस्क जॉब से दर्द बढ़ता है? जवाब- हां, इससे जोड़ों में स्टिफनेस आती है और मांसपेशियां टाइट होने लगती हैं। गलत पोस्चर इस समस्या को बढ़ा देता है। इससे धीरे-धीरे क्रॉनिक दर्द की स्थिति बन सकती है। सवाल- किस तरह के गद्दा/तकिया बेहतर हैं? जवाब- मीडियम-फर्म ऑर्थोपेडिक गद्दा बेहतर माना जाता है। यह रीढ़ (स्पाइन/रीढ़ की हड्डी) को सही सपोर्ट देता है। साथ ही कंधे, कूल्हे व घुटनों जैसे दबाव वाले हिस्सों पर भार कम करता है। तकिए के लिए ऐसा विकल्प चुनें, जो गर्दन को सीधी और न्यूट्रल पोजिशन में रखे। सवाल- क्या हर बार पेनकिलर लेना सही है? जवाब- नहीं, इसके बजाय दर्द की वजह समझना जरूरी है। साथ ही हेल्दी लाइफस्टाइल अपनाएं और जरूरत पड़ने पर डॉक्टर से सलाह लें। सवाल- क्या गलत फुटवियर से दर्द बढ़ सकता है? जवाब- हां, बहुत फ्लैट, बहुत सख्त या बिना कुशन वाले जूते पैरों के शॉक को ठीक से एब्जॉर्ब नहीं करते। इसका असर सीधे एड़ी, घुटनों और कूल्हों तक जाता है। इसी तरह हाई हील्स शरीर का संतुलन बिगाड़ती हैं और घुटनों व पीठ पर अतिरिक्त दबाव डालती हैं। इससे दर्द बढ़ सकता है।

आतिफ असलम बोले- भारत से अच्छे है पाकिस्तान कोक स्टूडियो, पाकिस्तान के गानों में दिखता है जादू, भारतीय संगीत में कमर्शियलाइजेशन ज्यादा

इस्लामाबाद। पाकिस्तानी सिंगर आतिफ असलम ने भारत

और पाकिस्तान के लोकप्रिय संगीत प्लेटफॉर्म 'कोक स्टूडियो' के बीच तुलना करते हुए पाकिस्तान कोक स्टुडियो को बेहतर बताया है। एक इंटरव्यू में आतिफ ने कहा कि कोक स्टूडियो पाकिस्तान की सफलता के पीछे उसका 'रॉ और ओरिजनल' संगीत है, जबकि कोक स्टूडियो इंडिया में 'कमर्शियलाइजेशन' (व्यावसायीकरण) ज्यादा हावी दिखता है। 'भारतीय संगीत में कमर्शियलाइजेशन हावी' दुबई के रेडियो स्टेशन मिर्ची यूएई को दिए इंटरव्यू में आतिफ असलम ने दोनों देशों के कोक स्टूडियो के काम करने के तरीके पर बात की। आतिफ ने कहा, दोनों ही तरफ संगीत की कंपोजिशन बेहतरीन बनाई जाती है, लेकिन भारतीय संगीत में वह रॉ-नेस गायब है जो हमारे गानों में होती है। इंडियन कोक स्टूडियो कमर्शियलाइजेशन पर बहुत ज्यादा भरोसा करता है और गानों को बाजार के हिसाब से ढालता है। इसके उलट, पाकिस्तानी कोक स्टूडियो पूरी तरह से ओरिजनल कंपोजिशन पर जोर देता है। वहां संगीतकारों के पास अपनी कला दिखाने की आजादी होती है और एक तरह से यह उनके लिए करो या मरो की स्थिति होती है, जहां वे अपनी अलग पहचान जोड़ सकते हैं। 2008 में शुरू हुआ कोक स्टूडियो पाकिस्तान कोक स्टूडियो पाकिस्तान की शुरुआत साल 2008 में हुई थी। इसके फाउंडर और प्रोड्यूसर रोहेल हयात थे। इस शो ने पारंपरिक सूफी, कव्वाली, गजल और लोक संगीत को आधुनिक वेस्टर्न इंस्ट्रूमेंट्स के साथ मिलाकर फ्यूजन म्यूजिक को एक नया मुकाम दिया। यूट्यूब सब्सक्राइबर्सः कोक स्टूडियो पाकिस्तान के ऑफिशियल यूट्यूब चैनल पर 1.77 करोड़ (17.7 मिलियन) से ज्यादा सब्सक्राइबर्स हैं। सबसे लोकप्रिय गानेः कोक स्टूडियो पाकिस्तान के सीजन 14 का गाना 'पसूरी' (अली सेठी और शे गिल) 99 करोड़ से ज्यादा व्यूज के साथ सबसे बड़ा ग्लोबल हिट बना। राहत फतेह अली खान व मोमिना का 'आफरीन आफरीन' (67 करोड़ प्लस व्यूज) और आतिफ असलम का 'ताजदार-ए-हरम' (65 करोड़ प्लस व्यूज) इस प्लेटफॉर्म के ऑल-टाइम ब्लॉकबस्टर गानों में शामिल हैं। कोक स्टूडियो भारतः 2011 में हुई थी शुरुआत भारत में कोक स्टूडियो की शुरुआत साल 2011 में 'एमटीवी कोक स्टूडियो इंडिया' के नाम से हुई थी। शुरुआती सीजन्स में ए.आर. रहमान, अमित त्रिवेदी और क्लिंटन सेरेजो जैसे संगीतकारों ने कई बेहतरीन ओरिजनल ट्रैक्स बनाए, लेकिन बाद के सालों में यह प्लेटफॉर्म भारतीय फिल्म इंडस्ट्री और बॉलीवुड कंपोजर्स के प्रभाव में ज्यादा आ गया। रीब्रांडिंग और सब्सक्राइबर्सः साल 2023 में इसे 'कोक स्टूडियो भारत' के नाम से दोबारा लॉन्च किया गया। वर्तमान में 'कोक स्टूडियो भारत' के यूट्यूब चैनल पर करीब 72 लाख (7.2 मिलियन) सब्सक्राइबर्स हैं। लोकप्रिय गानेः भारतीय कोक स्टूडियो का सबसे बड़ा हालिया हिट गाना अनुव जैन का 'अर्ज किया है' रहा। इसने यूट्यूब पर 23 करोड़ से ज्यादा व्यूज हासिल किए। इसके बाद दिलजीत और गुरदास मान का सॉन्ग 'की बनु दुनिया दा' 23 करोड़ से ज्यादा व्यूज के साथ दूसरे नंबर पर है। वहीं गुजराती सॉन्ग 'खलासी' ने यूट्यूब पर 18 करोड़ से ज्यादा व्यूज हासिल किए हैं। इसके अलावा ममे खान और अमित त्रिवेदी का 'चौधरी' और विशाल डडलानी व सोनू कक्कड़ का 'मदारी' काफी पसंद किए गए। भारत में बैन हुए, बोले- लोग वीपीएन से गाने सुनते हैं इससे पहले आतिफ असलम ने भारत में लगे बैन पर बात करते हुए कहा कि लोग वीपीएन के जरिए उनका संगीत सुनते हैं और वो अपने फैंस को मिस करते हैं। यह बात उन्होंने रेडियो प्रेजेंटर क्रिस फेड के यूट्यूब चैनल पर बातचीत में कही। बातचीत में आतिफ असलम ने कहा, 'मुझे भारत में बैन हुए लगभग 10 साल हो गए हैं। यह भारतीय सरकार का फैसला था। उन्होंने पाकिस्तान के कलाकारों को बैन करने का फैसला किया। भारतीय कलाकार भी पाकिस्तान में बैन हैं। पिछले 10 साल से। मैंने वहां कोई गाना रिलीज नहीं किया है।' उन्होंने भारतीय फैंस के लगातार अपने संगीत को सुनने का जिक्र करते हुए कहा कि लोग वीपीएन के जरिए उनका संगीत सुनते हैं और सीडी बनाकर दूसरों को देते हैं। उन्होंने कहा कि वह पाइरेसी को बढ़ावा नहीं देते, लेकिन संगीत जहां पहुंचना होता है, वहां पहुंच जाता है। मेरे पहले सिंगल के साथ भी ऐसा ही हुआ था। आतिफ ने भारतीय फैंस को उदास नहीं होने कहा-भारतीय फैंस के लिए आतिफ ने कहा, 'हां, इसे लेकर बुरा मत महसूस करो। उदास मत हो। मैं हमेशा से आप लोगों से कहना चाहता था कि मुझे आप लोगों की याद आती है। मुझे वहां काम करने की याद नहीं आती, लेकिन आप लोगों की याद आती है।' आतिफ ने आगे कहा कि मैंने प्लेबैक सिंगिंग से बहुत कुछ सीखा है। अगर यह बैन नहीं हुआ होता, तो शायद मैं अपना खुद का म्यूजिक नहीं बना पाता। इसलिए इसके लिए भी मैं आप लोगों का शुक्रिया अदा करता हूं। पाकिस्तानी कलाकारों पर क्यों लगा था बैन-सितंबर 2016 में उरी आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ गया था। इसी दौरान इंडियन मोशन पिक्चर प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन (आईएम पीपी ए) ने अपने निर्माता सदस्यों को भारत-पाकिस्तान के रिश्ते सामान्य होने तक पाकिस्तानी कलाकारों और तकनीशियनों को काम न देने का निर्देश दिया था। हालांकि, 2016 के बाद भी कई बॉलीवुड फिल्मों में आतिफ असलम के गाने आए। 2017 में फिल्म 'टाइगर जिंदा है' का 'दिल दियां गल्लां', 'राब्ता' का 'दरअसल', 'ट्यूबलाइट' का 'मैं अगर' और 'करीब करीब सिंगल' का 'जाने दे' रिलीज हुआ। वहीं, 2018 में 'बागी 2' का 'ओ साथी', 'सत्यमेव जयते' का 'पानियों सा', 'लवयात्री' का 'तेरा हुआ' और 'जीनियस' का 'दिल मेरी ना सुने' गाना रिलीज हुआ। वहीं, मार्च 2019 के बाद से उनका कोई गाना बॉलीवुड फिल्मों में रिलीज नहीं हुआ। गौरतलब है कि फरवरी 2019 में पुलवामा आतंकी हमले के कुछ दिनों बाद ऑल इंडिया सिने वर्कर्स एसोसिएशन (एआईसीडब्ल्यूए) ने भी भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में पाकिस्तानी एक्टर्स और कलाकारों पर पूरी तरह बैन की घोषणा की थी। इस हमले में 40 सीआरपीएफ जवानों की जान गई थी। 2025 में पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ा। इसके बाद भारत सरकार ने पाकिस्तानी फिल्मों, वेब सीरीज, गानों और पॉडकास्ट पर रोक लगा दी। सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने आईटी रूल्स 2021 के तहत ओटीटी और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म्स से पाकिस्तानी कंटेंट हटाने का आदेश दिया। इसके अलावा कई पाकिस्तानी कलाकारों के सोशल मीडिया अकाउंट्स भी भारत में अस्थायी रूप से ब्लॉक किए गए। इनमें माहिरा खान और हानिया आमिर जैसे कलाकार शामिल थे।

स्वत्वाधिकारी
प्रकाशक एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि.
1- मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं एम2ए/25 एडीए कालोनी नैनी प्रयागराज 211008 (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक
डॉ.दीपक अरोरा
मो 0 न0 09415608783
RNI No. UPHIN/2012/41154
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।